श्री राम कथा मन्दाकिनी

श्री रामकथा मंदाकिनी

महाकवि तुलसीदास रचित रामचरितमानस
तथा कवितावली से चुने हुए पदों से
संकलित स्वरबद्ध सम्पूर्ण राम-कथा

स्वरकार
श्रीमती गोदावरीबाई साठे

विजयादशमी—वि. सं. २०१९
८ अक्टूबर सन् १९६२

प्रकाशक :
श्रीमती गोदावरीबाई साठे
ईस्ट एंड वेस्ट विला
नाना शंकर सेट रोड
बम्बई–७

मूल्य रु. ३·००

मुद्रक :
वि. पु. भागवत
मौज प्रिन्टिंग ब्यूरो
खटाववाडी, बम्बई ४

स्तुति

राग — यमन कल्याण

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥

रे ग ग –	ग म॑ ग रे	ग – रे –
व र्णा ना म्	अ ऽ र्थ सं	घा ऽ नां ऽ
नि़ रे नि़ –	रे – ग –	सा नि़ सा –
र सा नां ऽ	छ ऽ न्द ऽ	सा ऽ म पि
रे ग ग ग	म॑ ग रे ग	रे –
मं ग ला नां	च क ऽ र्ता	रौ ऽ
नि़ रे नि़	रे ग म॑ प रे	ग रे सा –
व न्दे वा	णी ऽ ऽ ऽ ऽ	वि ना य कौ
प प प	प प प	म॑ प ध प रें
भ वा नी	शं क रौ	वं ऽ ऽ ऽ दे
नि़ रे नि़	रे ग म॑ प रे	ग रे सा
श्र द्धा वि	श्वा ऽ ऽ ऽ स	रू पि णौ
रे ग ग	ग म॑ ग	रे ग रे
या भ्यां वि	ना न प	श्य न्ति ऽ

ऩि रे ऩि | रे ग सा | ऩि सा –
सि द्धाः स्वा | न्तः स्थ मी | श्व र म्

नि नि नि | नि नि म॑ | ध नि सां सां –
व न्दे वो | ध म यं | नि ऽ ऽ त्यं ऽ

नि नि म॑ | ध नि प | म॑ प –
गु रुं शं | क र रू | पि णं ऽ

प प प | प ग रे | ग म॑ ग रे ग रे
य मा श्रि | तो हि व | क्राऽऽऽ पि ऽ

ऩि रे ग | प – रे | ग रे सा
चं न्द्रः स | र्व ऽ त्र | व न्द्य ते

राग–मिश्र खमाज–(ताल कहरवा)

स्थायी

दो०–रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥ ३१ ॥

अन्तरा

दो०–राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार ।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल बिचार ॥ ३२ ॥

स्थायी

ग – ग ग	ग – ग –	गप मग रेम गरे	सा ऩि – –
रा ऽ म क	था ऽ मं ऽ	दाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	कि नी ऽ ऽ
×	०	×	०
ऩि – सा रे	ग सा रे म	ग – – –	सा – – –
चि ऽ त्र कू	ऽ ट चि त	चा ऽ ऽ ऽ	रु ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
ग ग ग –	ग ग ग ग	गप मग रेम गरे	ऩि सा ऩि –
तु ल सी ऽ	सु भ ग स	नेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ह ब न ऽ
×	०	×	०
ऩि सा रे रे	रेग सारे रे म	ग – – –	सा – ऩिसा रेग
सि य र घु	वीऽ ऽऽ र बि	हा ऽ ऽ ऽ	रु – ऽऽ ऽऽ
×	०	×	०

अन्तरा

नि – नि नि	नि – सां सां	ध सां नि॒ ध	प म ग रे
रा ऽ म अ	न ऽ न्त अ	न ऽ न्त गु	न ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग प म म	ग सा रे ग	प – – –	गम पध नि सां
अ सि त क	था ऽ वि ऽ	स्ता ऽ ऽ र	ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
नि नि नि –	नि नि सां सां	सां रें सां नि	ध प मग रेग
सु नि आ ऽ	च र जु न	मा ऽ नि ह	हिं ऽ ऽऽ ऽऽ
ग प म –	ग सा रे ग	प – – –	धनि धप मग रेसा
जि न्ह के ऽ	वि म ल वि	चा ऽ ऽ र	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवन रंध्र अहिभवन समाना।
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा॥

अंतरा

(१) जिन्ह हरि भगति हृदयँ नहिं आनी। जीवत सव समान तेइ प्रानी॥
जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना॥

(२) कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरिचरित न जो हरषाती॥
गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुर हित दनुज बिमोहनसीला॥

स्थायी

रेप म गरे ग	सा रे – सा	ऩि सा रे सा	(रे) – रे –
जिऽन्ह हऽरि	क था ऽ सु	नी ऽ न हिं	का ऽ ना ऽ
×	०	×	०
सा ऩि सा रे (म)	– रे रेग सारे	ग म गरे ग	सा – ऩिसा रेग
श्र व ण रं	ऽन्ध्र अऽ हिऽ	भ व नऽ स	मा ऽ नाऽ ऽऽ
×	०	×	०
म म म म	गरे ग सा सा	सा रे सा ऩि	ऩिसा रे सारे–
न य न न्हि	संऽ ऽ त द	र स न हिं	देऽ ऽ खाऽ ऽ
×	०	×	०
गप म म म	गरे ग सा रेग	मग रे सारे गरे	सा – रेग म
लोऽ ऽ च न	मोऽ ऽ र पंऽ	ऽऽ ख कऽ रऽ	ले ऽ खाऽ ऽ
×	०	×	०

अंतरा

म प नि नि	नि नि नि नि	सां नि सां नि	सां – सां –
जिन्ह ह रि	भ ग ति ह्व	द य न हिं	आ ऽ नी ऽ
×	०	×	०
प नि सां रें	रें रें सां नि	– नि सां रें	नि़ ध प –
जी ऽ व त	स व स मा	ऽ न ते इ	प्रा ऽ नी ऽ
×	०	×	०
प सां नि सां	नि़ ध म प	नि़ ध म गरेग	सा – नि़सा रे
जो ऽ न हिं	क र इ रा	ऽ म गु नऽऽ	गा ऽ नाऽ ऽ
×	०	×	०
गप – म म	गरे ग सा सा	नि़ सा रेग मग	सा – रेग म
जीऽ ऽ ह सो	दाऽ ऽ दु र	जी ऽ हऽ सऽ	मा ऽ नाऽ ऽ
×	०	×	०

राग झिंझोटी (ताल त्रिताल)

स्थायी

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥

अंतरा

(१) करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
(२) तव तव प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

स्थायी

ध़	सा	रे	पम	ग	–	ग	ग	म	रे	ग	सा	ध़	नि़	ध़	प़
ज	ब	ज	बऽ	हो	ऽ	इ	ध	र	म	कै	ऽ	हा	ऽ	नी	ऽ
×				२				०				३			
प़	–	रे	रे	रे	ग	सा	सा	प	म	ग	रे	सा	नि़	ध़	प़
बा	ऽ	ढ	हिं	अ	सु	र	अ	ध	म	अ	भि	मा	ऽ	नी	ऽ
×				२				०				३			

अंतरा

सा	सा	ग	म	प	–	प	प	ग	ग	म	ध	प	म	ग	–
क	र	हिं	अ	नी	ऽ	ति	जा	ऽ	इ	न	हिं	ब	र	नी	ऽ
×				२				०				३			
ध	म	प	ग	म	रे	ग	सा	रे	नि़	सा	ध़	नि़	प़	ध़	प़
सी	ऽ	द	हिं	वि	प्र	धे	ऽ	नु	ऽ	सु	र	ध	र	नी	ऽ
×				२				०				३			

राग काफी (ताल त्रिताल)

स्थायी

अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी॥
गिरि सरि सिन्धु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक परद्रोही॥

अंतरा

धेनु रूप धरि हृदयँ विचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी॥
बैठे सुर सब करहिं विचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा॥
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीति। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती॥

स्थायी

प	ध	म	प	रे	ग॒	रेसा	–	नि॒	नि॒	सा	रे	रेग	मग	रे	सा
अ	ति	स	य	दे	ऽ	खिऽ	ऽ	ध	ऽ	र्म	कै	हाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

सा	रे	म	प	ध	–	ध	ध	नि॒	ध	म	म	पध	निसा	निध	पम
प	र	म	स	भी	ऽ	त	ध	रा	ऽ	अ	कु	लाऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

अंतरा

म	–	प	ध	सां	सां	सां	सां	नि॒	नि॒	सां	रें	निसां	–	ध	प
धे	ऽ	नु	रू	ऽ	प	ध	रि	हृ	द	य	वि	चाऽ	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

ध	नि॒	ध	प	म	धप	ग॒	रे	सा	रे	म	प	धनि	सां	निध	पम
ग	ई	ऽ	त	हाँ	ऽऽ	ज	हँ	सु	र	मु	नि	झाऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

राग कल्याण (ताल त्रिताल)

स्थायी

हरि व्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥

अंतरा

(१) देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥
(२) अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी॥
(३) जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नरबेषा॥
(४) अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा॥

स्थायी

सा	सा	नि़ध़	नि़	नि़	नि़	ध़	प	नि	रे	ग	रे	सा	–	सा	–
ह	रि	व्याऽ	ऽ	प	क	स	ऽ	र्व	ऽ	त्र	स	मा	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

सा	–	ग	ग	ग	ग	म॑	ग	नि	नि	म॑	गप	रे	–	नि़रे	ग
प्रे	ऽ	म	तें	ऽ	प्र	ग	ट	हों	ऽ	हिं	मैंऽ	जा	ऽ	नाऽ	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

ग	–	प	धप	सां	सां	सां	सां	नि	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प
दे	ऽ	स	काऽ	ऽ	ल	दि	सि	वि	दि	स	हु	मा	ऽ	हीं	ऽ

प	प	प	प	म॑	म॑	ग	रे	नि	नि	म॑	गप	रे	–	नि़रे	ग
क	ह	हु	सो	ऽ	क	हाँ	ऽ	ज	हाँ	ऽ	प्रभु	ना	ऽ	ऽऽ	हीं

राग सारंग (ताल त्रिताल)

स्थायी

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत रामजनम सुखमूल॥

(म) रे	म	रे	सां	सां	सा	सा	रे	ऩि	ऩि	सा	सा	रे	–	(रे)	–
जो	ऽ	ग	ल	ग	न	ग्र	ह	बा	ऽ	र	ति	थि	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
रे	म	प	म	रे	–	सा	रे	सा	–	–	–	(सा)	–	–	–
स	क	ल	भ	ए	ऽ	अ	नु	कू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
म	प	नि	नि	नि	नि	सां	–	नि	सां	नि	रेंसां	(प) नि	–	प	–
च	र	अ	रु	अ	च	र	ऽ	ह	र	ष	जुऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
मप	ऩि	प	प	रे	रे	सा	ऩि	सा	–	–	–	सा	–	–	–
राऽ	ऽ	म	ज	न	म	सु	ख	मू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

राग सारंग (ताल—त्रिताल)

स्थायी

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥

अंतरा

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्त्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा॥

स्थायी

रे म पनि़ पम	रे मरे सा रेसा	नि़ प नि नि	सा – सा –
नौ ऽ मीऽ ऽऽ	ति थिऽ म धुऽ	मा ऽ स पु	नी ऽ ता ऽ
×	३	×	२

(म)रे म म प	–प नि़नि़ पम	रे म पनि पम	रेम रेसा सा –
सु क ल प	ऽक्ष अऽ भिऽ	जि त हऽ रिऽ	प्रीऽ ऽऽ ता ऽ
०	३	×	२

म रे म म	प प प प	रे म नि़ पम	(म)रे – सा –
म ऽ ध्य दि	व स अ ति	सी ऽ त नऽ	घा ऽ मा ऽ
०	३	×	२

सां – नि सां	(सां)नि़ – प रे	– म पनि़ पम	रे – सा –
पा ऽ व न	का ऽ ल लो	ऽ क विऽ ऽऽ	श्रा ऽ मा ऽ

अंतरा

म – प प	नि – नि नि	सां नि सां नि	सां – सां –
सी ऽ त ल	मं ऽ द सु	र भि ब ह	बा ऽ ऊ ऽ
०	३	×	२

प	प	नि	नि	सां	सां	सां	–	नि	सां	रें	सां	(प) नि	–	प	–
ह	र	षि	त	सु	र	सं	ऽ	त	न	म	न	चा	ऽ	ऊ	ऽ
०				३				×				२			

रें	रें	रें	रेंमं	रें	रें	सां	सां	सां	नि	रें	सां	निसां	रेंसां	निप	
व	न	कु	सुऽ	सि	त	गि	रि	ग	न	म	नि	आऽ	ऽऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

सां	सां	नि	सां	नि	नि	म	प	रे	म	पनि	पम	रे	मरे	सा	–
स्र	व	हिं	स	क	ल	स	रि	ताऽ	मृऽ	तऽ		धा	ऽऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

राग सारंग (ताल कहरवा)

स्तुति

छं०—भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥ १॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥ २॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ ३॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥ ४॥

नि॒ प
भ ए

रे	रे	सा	सा	ऩि	सा	सा	–	ऩि॒	प़	ऩि	सा	(म) रे	–	रे	–
प्र	ग	ट	कृ	पा	ऽ	ला	ऽ	दी	ऽ	न	द	या	ऽ	ला	ऽ
×				२				०				३			
रे	म	प	नि॒	प	म	रे	सा	रे	–	–	–	सा	–	–	–
कौ	ऽ	स	ऽ	ल्या	ऽ	हि	त	का	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

नि॒ नि॒ प प	रे रे सा सा	नि़ प़ नि़ सा	नि़सा रे रे –
ह र षि त	म ह ता री	मु नि म न	हाऽ ऽ री ऽ
×	२	०	३
रे म प नि॒	प म रे सा	रे – – –	सा – म प
अ द् भु त	रू ऽ प वि	चा ऽ ऽ ऽ	री ऽ लो ऽ
×	२	०	३
नि नि नि नि	सां – सां –	नि॒ प नि सां	रें – रें –
च न अ भि	रा ऽ मा ऽ	त नु घ न	स्या ऽ मा ऽ
×	२	०	३
रें मं रें मं	रें सां सां रें	सां – – –	सां – सां –
नि ज आ ऽ	यु ध भु ज	चा ऽ ऽ ऽ	री ऽ भू ऽ
×	२	०	३
नि सां नि॒ नि॒	प – प –	प म पनि पम	रे – रे –
व न ब न	मा ऽ ला ऽ	न य नऽ विऽ	सा ऽ ला ऽ
×	२	०	३
रे म रेम पनि॒	प म रे सा	रे – – –	सा – नि॒ प
सोऽ भाऽ ऽऽ	सि ऽ न्धु ख	रा ऽ ऽ ऽ	री ऽ भ ए
×	२	०	३

देहाती धुन (ताल कहरवा)

(कवितावली) झूला

स्थायी

सुख नींद कहति आलि आइ हौं

अंतरा

राम लखन रिपुदवन भरत सिसु
करि सब सुमुख सुहाई हौं ॥ १ ॥

रोवनि धोवनि अनखनि अनरसनि
डिठि मुठि निठुर नसाई हौं ॥ २ ॥

हँसनी खेलनि किलकनि आनन्दिनी
भूपतिभवन बसाई हौं ॥ ३ ॥

गोद विनोद मोदमय मूरति
हरषि हरषि हलराइ हौं ॥ ४ ॥

तनु तिल तिल करि वारी रामपर
लैहौं रोज बलाई हौं ॥ ५ ॥

रानी राउ सहित सब परिजन
निरखि नयन फल पाइ हौं ॥ ६ ॥

चारु चरित रघुबंस तिलक के
तहं तुलसी मिलि गाइ हौं ॥ ७ ॥

रे	म	ग़	रे	सा	सा	सा	रेगरे	सानि़	नि	सा	रे	–
सु	ख	नी	ऽ	द	क	ह	तीऽऽ	आलि	आ	ई	हौं	ऽ
		×				०		।	×			

रे	म	रेम	रेसा	सा	–	–	–
आ	लि	आऽ	ईऽ	हौं	ऽ	ऽ	ऽ
०				×			

रे म रे म | प प प प | रे म पनि़ पम | रे मरे सा सा

रा ऽ म ल | ख न रि पु | द व नऽ भऽ | र तऽ सि सु

× | २ | × | ०

सा

रेप मप म रे | म रे सा सारे | नि़ सा रे – | – – – –

कऽ रिऽ स व | सु मु ख सोऽ | हा ई हौं ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

× | ० | × | ०

रे म रेम रेसा | सा – रे म |

आ ली आऽ ईऽ | हौं ऽ आ ली |

× | ०

धुन लोकगीत (ताल कहरवा)

(कवितावली)

अवधेस के द्वारे सकारे गई
सुत गोद कै भूपति लै निकसे।
अवलोकिहौं सोच विमोचन को
ठगि सी रही, जे न ठगे, धिकसे।
तुलसी मन रंजन रंजित अंजन
नैन सु-खंजन जातक से।
सजनी ससिं में समसील उभै
नवनील सरोरुह से विकसे॥
पग नूपुर औ पहुंची कर कंजनि
मंजु बनी मनिमाल हिए।
नवनील कलेवर पीत झगा
झलकैं, पुलकैं नृप गोद लिए
अरविन्द सो आनन रूप मरन्द
अनंदित लोचन भृंग पिए
मन में न बस्यो अस बालकको
तुलसी जग में फल कौन जिए॥

ध़ ऩि	सा ऩि सा रे	ऩि सा सा ग॒	रे ग॒ सा रे
अ व	धे ऽ स के	द्वा ऽ रे स	काऽ रे ग
	×	०	×
ऩि सा रे ग	म प प धप	म ग म धप	ग॒ – रे ग॒
ई ऽ सु त	गो ऽ द कैऽ	भू ऽ प तिऽ	लै ऽ नि क
०	×	०	×
रेग रेसा ध़ ऩि	सा ऩि सा रे	ऩि सा सा ग॒	रे ग॒ सा रे
सेऽ ऽऽ अ व	लो ऽ कि हौं	सो ऽ च वि	मो ऽ च न
०	×	०	×

ध

नि़ सा रे ग | म प प धप | म ग म प | ग – रे ग

को ऽ ठ गि | सी ऽ र हीऽ | जे ऽ न ठ | गे ऽ धि क

सागरेसा ग ग | ग – ग ग | मग रेसा सा सा | रेग म म म

सेऽ ऽऽ तु ल | सी ऽ म न | रंऽ ऽऽ ज़ न | रंऽऽ जि त

म – म म | रे – म म | प –म ध प | ग – रे ग

अं ऽ ज न | न ऽ न सु | खं –ऽ ज न | जा ऽ त क

सागरेसा धऩि | सा – रे ग | रे – ग म | ग म रे ग

सेऽ ऽऽ स ज | नी ऽ स सि | में ऽ स म | सी ऽ ल उ

रे – ग म | प – प प | मप सां नि प | ग – रे ग

भै ऽ न व | नी ऽ ल स | रोऽ ऽ रु ह | से ऽ बि क

(सा) – |

से ऽ |

राग केदार (ताल त्रिताल)

स्थायी

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥
गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई॥

अन्तरा

(१) जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी॥
विद्या विनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला॥

(२) करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई॥

स्थायी

सा	रे	सा	म	–	म	प	प	म॑	–	प	प	पम॑	धप	म	–
भ	ए	कु	मा	ऽ	र	ज	ब	हिं	ऽ	स	ब	भ्राऽ	ऽऽ	ता	ऽ
×				२				०				३			

सा	रे	सा	म	म	–	प	प	म॑	–	प	प	पम॑	धप	म	–
दी	ऽ	न्ह	ज	ने	ऽ	ऊ	गु	रु	ऽ	पि	तु	माऽ	ऽऽ	ता	ऽ
×				२				०				३			

म	म	म	मग	प	प	–	ध	नि॒	ध	प	प	म॑प	मपधप	म	–
गु	रु	गृ	हँ	ग	ए	ऽ	प	ढ़	न	र	घु	राऽ	ऽऽऽऽ	ई	ऽ
×				२				०				३			

म॑	म॑	प	धनि॒	सां	ध	प	–	म॑	प	ध	प	म	रे	सा	–
अ	ल	प	काऽ	ऽ	ल	बि	ऽ	द्या	ऽ	स	ब	आ	ऽ	ई	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	–	सां	–	सां	सां	सां	ध	–	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
जा	ऽ	की	ऽ	स	ह	ज	स्वा	ऽ	स	श्रु	ति	चा	ऽ	री	ऽ
×				२				०				३			

प	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
सो	ऽ	ह	रि	प	ढ़	य	ह	कौ	ऽ	तु	क	भा	ऽ	री	ऽ
×				२				०				३			

म॑	–	प	–	ध	नि॒	ध	प	म॑	म॑	प	प	म॑प	धप	म	–
वि	ऽ	धा	ऽ	वि	न	य	नि	पु	न	गु	न	सीऽ	ऽऽ	ला	ऽ
×				२				०				३			

म॑	–	प	प	धनि	सां	ध	प	म॑	म॑	प	प	पम॑	धप	म	–
खे	ऽ	ल	हिं	खेऽ	ऽ	ल	क	र	त	नृ	प	लीऽ	ऽऽ	ला	ऽ
×				२				०				३			

राग हमीर (ताल त्रिताल)

स्थायी

बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिनसुभ आश्रम जानी।

अंतरा

देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं।

स्थायी

सां	नि	ध	प	^ध^म	प	ग	म	ध	–	ध	नि	धनि	सांरें	सांनि	धप
बि	ऽ	स्वा	ऽ	मि	ऽ	त्र	म	हा	ऽ	मु	नि	ग्याऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ
०				३				×				२			
ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा	सा	रे	ग	म	ध	–	ध	नि
ब	स	हिं	बि	पि	न	सु	भ	आ	ऽ	श्र	म	जा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

प	–	सां	सा	सां	–	सां	सां	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
दे	ऽ	ख	त	ज	ऽ	ग्य	नि	सा	ऽ	च	र	धा	ऽ	व	हिं
०				३				×				२			
गं	गं	मं	रें	सां	रें	सां	सां	ध	नि	सां	रें	सांरें	सांनि	धप	मप
क	र	हिं	उ	प	ऽ	द्र	व	मु	नि	दु	ख	पाऽ	ऽऽ	वऽ	हिंऽ
०				३				×				२			

राग सोहनी (ताल त्रिताल)

दोहा

बहुविधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार॥

ध नि सां रें	सां रें सां रें	नि सां नि ध	– – – –
ब हु वि धि	क र त म	नो ऽ र थ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

मं – ध सां	– सां सां रें	सां – – सां	रेंसां निध मंध निसां
जा ऽ त ला	ऽ गि न हिं	बा ऽ ऽ र	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

मं ध मं ध	नि नि सां सां	सां – – रें	सां नि ध –
क रि म ऽ	ज्ज न स र	ऊ ऽ ऽ ज	ल ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सां गं – मं	गं रें सां रें	सां – – सां	निध मंध निसां रेंसां
ग ये ऽ भू	ऽ प द र	बा ऽ ऽ र	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

राग पूरिया (ताल त्रिताल)

स्थायी

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लै विप्र समाजा॥

अन्तरा

करि दण्डवत मुनिहिं सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी॥

स्थायी

म॑	ग	रे॒	सा	नि़	ध़	नि़	रे॒	सा	–	नि़	ध़	नि़	रे॒	सा	–
मु	नि	आ	ऽ	ग	म	न	सु	ना	ऽ	ज॰	ब	रा	ऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			

नि़	रे॒	ग	ग	म॑	रे॒	ग	–	गम॑	धग	म॑	ग	नि़	रे॒	सा	–
मि	ल	न	ग	य	ऊ	लै	ऽ	बिऽ	ऽऽ	प्र	स	मा	ऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म॑	म॑	ग	ग	म॑	म॑	ध	ध	सां	सां	सां	सां	नि	रें॒	सां	ऽ
क	रि	दं	ड	ऽ	व	त	मु	नि	हिं	स	न	मा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

रें॒	नि	ध	म॑	म॑	ग	ग	ऽ	म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा
नि	ज	आ	ऽ	स	न	बै	ऽ	ठा	ऽ	रे	न्हि	आ	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

राग पूरिया धनाश्री (ताल त्रिताल)

स्थायी

असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही॥

अन्तरा

अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा॥

स्थायी

												म॑			
नि़	रे॒	ग	म॑	प	प	प	प	म॑	ग	म॑	रे॒	ग	रे॒	–	सा
अ	सु	र	स	मू	ऽ	ह	स	ता	ऽ	व	हिं	मो	ऽ	ऽ	ही
३				×				२				०			
नि़	रे॒	ग	–	नि़	रे॒	सा	सा	म॑	म॑	ग	म॑	म॑	ग	रे॒	सा
मैं	ऽ	जा	ऽ	च	न	आ	ऽ	य	उँ	नृ	प	तो	ऽ	ही	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

म॑	ध॒	सां	सां	सां	–	रें॒	सां	नि	ध॒	निरें॒	निध॒	नि	ध॒	प	–
अ	नु	ज	स	मे	ऽ	त	दे	ऽ	हु	रऽ	घुऽ	ना	ऽ	था	ऽ
३				×				२				०			
म॑	ग	म॑	ध॒	रें॒	नि	ध॒	प	पम॑	पध॒	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा
नि	सि	च	र	ब	ध	मैं	ऽ	होऽ	ऽऽ	ब	स	ना	ऽ	था	ऽ
३				×				२				०			

भजनी धुन (धीमा कहरवा)

स्थायी

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी॥
चौथेंपन पायउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी॥

अन्तरा

मागहु भूमि धेनु धन कोसा। सर्बस देउँ आजु सहरोसा॥
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं। राम देत नहिं बनइ गोसाईं॥

स्थायी

रे॒	रे॒	रे॒	–	रे॒	–	सा	सा	ध़	–	ऩि	ऩि	सा	–	सा	–
सु	नि	रा	ऽ	जा	ऽ	अ	ति	अ	ऽ	प्रि	य	बा	ऽ	नी	ऽ
०				×				०				×			

रे॒	रे॒	रे॒	रे॒	–	सा	सा	सा	ध़॒	ध़॒	ऩि	ऩि	सा	–	सा	–
हृ	द	य	कं	ऽ	प	मु	ख	दु	ति	कु	मु	ला	ऽ	नी	ऽ
०				×				०				×			

रे॒	–	रे॒	–	रे॒	रे॒	रे॒	–	रे॒	रे॒	ग	म	रे॒	–	सा	–
चौ	ऽ	थे	ऽ	प	न	पा	ऽ	य	उँ	सु	त	चा	ऽ	री	ऽ
०				×				०				×			

रे॒	–	रे॒	रे॒	रे॒	सारे॒ग	रे॒	सा	ऩि	ध़॒	ऩि	ऩि	सा	–	सा	–
बि	ऽ	प्र	ब	च	नऽऽ	न	हिं	क	हे	हु	बि	चा	ऽ	री	ऽ

अन्तरा

म	–	म	म	प	–	प	ध॒	–	ध॒	ध॒	ध॒	पध॒	पध॒नि	ध॒	प
मा	ऽ	ग	हु	भू	ऽ	मि	धे	ऽ	नु	ध	न	कोऽ	ऽऽऽ	सा	ऽ
०				×				०				×			

ध – प ध	म – म प	– ध म म	रे – सा –
स ऽ बँ स	दे ऽ उँ आ	ऽ जु स ह	रो ऽ सा ऽ
०	×	०	×

सा सा रे रे	म म प प	पध नि ध म	प ध सां –
स ब सु त	प्रि य मो हि	प्राऽ ऽ न कि	नाऽ ई ऽ
०	×	०	×

रें सां नि ध	प म प ध	नि ध ध म	रे – सा –
रा ऽ म दे	ऽ त न हिं	ब न इ गो	साऽ ई ऽ
०	×	०	×

भजनी धुन (ताल धीमा कहरवा)

देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान॥
सौंपे भूप रिषिहि सुत बहुबिधि देह असीस।
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥

दोहा

ध॒ – ध॒ –	ध॒ – ध॒ ध॒	प ध॒ प ध॒	म – – –
दे ऽ हु ऽ	भू ऽ प म	न ह र षि	त ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प नि ध॒ प	म ग सा रे	म – – म	रे॒म पध॒ मप ध॒
त ज हु मो	ऽ ह अ ऽ	ग्या ऽ ऽ न	श्रीऽ ऽऽ राऽ म
×	०	×	०

			नि
प ध॒ सां ऽ	सां सां सां सां	नि सां नि सां	ध – – –
ध र्म सु ऽ	ज स प्र भु	तु ऽ म्ह ऽ	कौं ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

नि			
प ध॒ ध॒ म	म ग सा रे॒	म – – म	रे॒ म प ध॒
इ न्ह क हँ	अ ति क ऽ	ल्या ऽ ऽ न	रा ऽ ऽ म
×	०	×	०

राग भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई॥
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख की रखवारी॥

अन्तरा

(१) तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई॥
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा॥

(२) आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी॥

स्थायी

ग॒ -रे सा ऩि	ऩि – ऩि ऩि	ऩि सा रेम ग॒रे	सा -ऩि ऩिसा रेग॒
प्रा ऽ त क	हा ऽ मु नि	स न रऽ घुऽ	रा ऽ ईऽ ऽऽ
×	०	×	०
ग॒ – सा ऩि	ऩि – ऩि ऩि	ऩि सा रे ग॒	सा – सा –
नि ऽ र्भ य	ज ऽ ग्य क	र हु तु म्ह	जा ऽ ई ऽ
×	०	×	०
प़ – ऩि ऩि	ऩि ऩि सा –	ऩि सा रे ग॒	सा – सा –
हो ऽ म क	र न ला ऽ	गे ऽ मु नि	झा ऽ री ऽ
×	०	×	०
ग॒ -रे सा ऩि	ऩि – सा सा	ऩि सा रेम ग॒रे	सा – ऩिसा रेम
आ ऽ पु र	हे ऽ म ख	की ऽ रऽ खऽ	वा ऽ रीऽ ऽऽ
×	०	×	०

अंतरा

ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	ग॒ ग॒ ग॒ म	ग॒ म ग॒ म	रे म ग॒ रे
त व मु नि	सा ऽ द र	क हा ऽ बु	झा ऽ ई ऽ
×	०	×	०

प	प	प	म	–	ध	प	प	ग़	–रे	सा	ऩि	सा	–	सा	–
च	रि	त	ए	ऽ	क	प्र	भु	दे	ऽ	खि	अ	जा	ऽ	ई	ऽ
×				०				×				०			

नि	नि	नि	नि	–	सां	सां	सां	प	नि	सां	ग़ं	रें	सा	सा	–
ध	नु	ष	ज	ऽ	ग्य	सु	नि	र	घु	कु	ल	ना	ऽ	था	ऽ
×				०				×				०			

प	प	प	ग़	ग़	सा	ऩि	ऩि	ऩि	ऩि	सा	ग़	सा	–	सा	–
ह	र	षि	च	ले	ऽ	मु	नि	ब	र	के	ऽ	सा	ऽ	था	ऽ
×				०				×				०			

राग बागेश्री – (ताल त्रिताल)

स्तुति

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥ १॥

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानीं अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥ २॥

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥ ३॥

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी॥
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी॥ ४॥

म	ग̲
प	र

रे	सा	ध़	नि़̲	सा	–	सा	सा	सा	–	म	म	म	प	ग̲	रे
स	त	प	द	पा	ऽ	व	न	सो	ऽ	क	न	सा	ऽ	व	न
३				×				२				०			

											नि̲				
म	म	ध	ध	पध	नि̲	ध	म	म	–	प	ध	ग̲	रे	म	ग
प्र	ग	ट	भ	ईऽ	ऽ	त	प	पुं	ऽ	ज	स	ही	ऽ	दे	ऽ
३				×				२				०			

रे सा ध़ नि़	सा – सा सा	सा सा म म	म प ग॒ रे
ख त र घु	ना ऽ य क	ज न सु ख	दा ऽ य क
३	×	२	०

म – ध नि॒	सां सां सां सां	ग॒ – ग॒ मग॒	रेसा – म म
स ऽ न्मु ख	हो इ क र	जो ऽ रि रऽ	हीऽ ऽ अ ति
३	×	२	०

म – म म	धनि॒ सां सां सां	नि॒ नि॒ नि॒ सां	नि॒ सां नि॒ ध
प्रे ऽ म अ	धीऽ ऽ रा ऽ	पु ल क स	री ऽ रा ऽ
३	×	२	०

ध नि॒ सां मंगं॒	सांरें – सां सां	ध नि॒ सां रें	नि॒ ध ध नि॒
मु ख न हिंऽ	आऽ ऽ व इ	ब च न क	ही ऽ अ ति
३	×	२	०

ध म ग॒ ग॒	म – म –	ग॒ म ध नि॒	सां – सां –
स य ब ड़	भा ऽ गी ऽ	च र न न्हि	ला ऽ गी ऽ
३	×	२	०

ग॒ म ध नि॒	सां सां सां सां	ग॒ – ग॒ मग॒	सारे सा म ग॒
जु ग ल न	य न ज ल	धा ऽ र बऽ	हीऽ ऽ प र
३	×	२	०

कर्नाटकी धुन (ताल त्रिताल)

स्थायी

हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया॥

अन्तरा

पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेषी॥

स्थायी

ध़ सा रे̱ ग	रे – रे रे	ग̱ रे सा ध़	(सा)–सा–ध़
ह र षि च	ले ऽ मु नि	बृ ऽ न्द स	हा ऽ या ऽऽ
३	×	२	०

ग म प ग̱ (प)	म ग̱ रे रे	ग̱ (म) रे सा ध़	(सा)–सा ध़
बे ऽ गि बि	दे ऽ ह न	ग र नि य	रा ऽ या ऽ
३	×	२	०

अंतरा

प ध सां सां	ध सां – –	ग̱ं रें सां ध	पध सां – सां
पु र र ऽ	म्य ता ऽ ऽ	रा ऽ म ज	बऽ दे ऽ खी
३	×	२	०

सां ध प ग̱	रे रे रे रे	ग̱ रे सा ध़	सा – सा –
ह र षे ऽ	अ नु ज स	मे ऽ त वि	से ऽ षी ऽ
३	×	२	०

चंलत धुन द्रुत (ताल जल्द कहरवा)

स्थायी

समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई॥
भूप बागु बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई॥

अन्तरा

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥

स्थायी

ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	ग	रेग	मग	सा	सा	सारे	ग	रेग	म
स	म	य	जा	ऽ	नि	गु	रु	आऽ	ऽऽ	य	सु	पाऽ	ऽ	ईऽ	ऽ
०				×				०				×			

ग	म	ध	प	ग	–	सा	नि	सा	–	सा	सा	सारे	ग	रेग	म
ऽ	ले	न	प्र	सू	ऽ	न	च	ले	ऽ	दो	उ	भाऽ	ऽ	ईऽऽ	
०				×				०				×			

ग	प	ध	नि	ध	प	प	प	प	ध	प	म	ग	रेग	प	–
भू	ऽ	प	बा	ऽ	गु	ब	र	दे	ऽ	खे	उ	जा	ऽऽ	ई	ऽ
०				×				०				×			

ग	प	ध	नि	ध	प	प	प	प	ध	प	म	ग	रेग	प	–
ज	हँ	ब	सं	ऽ	त	रि	तु	र	ही	ऽ	लो	भा	ऽऽ	ई	ऽ
०				×				०				×			

अन्तरा

ग	प	ध	नि	ध	प	प	ध	म	म	प	ध	सां	–	सां	सां
च	हुँ	दि	सि	चि	त	इ	पूँ	ऽ	छि	मा	ऽ	ली	ऽ	ग	न
०				×				०				×			

ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नि	ध	पध	सां	सां
ल	गे	ऽ	ले	ऽ	न	द	ल	फू	ऽ	ल	मु	दि	तऽ	म	न
०				×				०				×			

सां	रें	सां	नि	ध	प	प	–	ग	म	ध	नि	ध	प	प	–
ते	हि	अ	व	स	र	सी	ऽ	ता	ऽ	त	हँ	आ	ऽ	ई	ऽ
०				×				०				×			

–	म	ध	प	ग	–	सा	नि़	सा	सा	सा	सा	सारे	ग	रेग	म
ऽ	गि	रि	जा	पू	ऽ	ज	न	ज	न	नि	प	ठाऽ	ऽ	ईऽ	ऽ
०				×				०				×			

भजनी धुन (ताल जल्द कहरवा)

मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा॥
एक सखी सिय संगु विहाई। गई रही देखन फुलवाई॥
तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हियँ अति उतकंठा जानी॥
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने॥

रे	म-	पध	-	म	प	ग	रे	गम	ग	रे	सा	सा	-	सा	-
म	ऽऽ	जऽ	न	क	रि	स	र	ऽस	खि	न्ह	स	मे	ऽ	ता	ऽ
०				×				०				×			
-रे	म-	पध	-	म	प	ग	रे	-ग	मग	रे	सा	सा	-	सा	-
गऽ	ऽ	इमु		दि	त	म	न	ऽऽ	गौऽ	रि	नि	के	ऽ	ता	ऽ
०				×				०				×			
-	म	प	ध	नि	-	सां	सां	नि	नि	सां	रें	ऩि	-	ध	प
ऽ	पू	जा	ऽ	की	ऽ	न्हि	अ	धि	क	अ	नु	रा	ऽ	गा	ऽ
०				×				०				×			
-	धनि	ध	प	ग	-	रे	ग	म	ग	रे	सा	सा	-	सा	-
ऽ	निज	अ	नु	रू	ऽ	प	सु	भ	ग	ब	रु	मा	ऽ	गा	ऽ
०				×				०				×			
-	सारे	सा	ऩि	सा	-	रे	-	-ग	मग	रे	सा	सा	-	सा	-
ऽ	एक	स	खी	सी	ऽ	य	ऽ	-	संऽ	गु	वि	हा	ऽ	ई	ऽ
०				×				०				×			
-	धनि	ध	प	ग	-	रे	ग	म	ग	रे	सा	सा	-	सा	-
	गऽ	इ	र	ही	ऽ	दे	ऽ	ख	न	फु	ल	वा	ऽ	ई	ऽ
०				×				०				×			

राग जौनपुरी (त्रिताल)

स्थायी

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई॥
पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकासु फिरइ फुलवाई॥

अन्तरा

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा॥
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता॥

स्थायी

– पसां नि॒ सां	ध॒ म पध॒ मप	ग॒ सारे म म	प – प –
ऽ ताऽ त ज	न क तऽ नऽ	या ऽऽ य ह	सो ऽ ई ऽ
०	३	×	२
ध॒ ध॒ ध॒ पध॒	नि॒ ध॒ प प	ग॒ – ग॒ ग॒	रे – सा –
ध नु ष जऽ	ऽ ग्य जे हि	का ऽ र न	हो ऽ ई ऽ
०	३	×	२
– सारे म म	प – प प	ध॒ म प ध॒	सां – सां –
ऽ पूऽ ज न	गौ ऽ रि स	खीं ऽ लै ऽ	आ ऽ ई ऽ
०	३	×	२
– परें सां रें	नि॒ सां ध॒ म	पनि॒ – ध॒ प	रेंम मप पध॒ –ध॒
ऽ कर त प्र	का ऽ सु फि	रति ऽ फु ल	वाऽ ऽऽ ऽऽ –ई
०	३	×	२

अन्तरा

म – प ध॒	सां सां सां सां	सां – सां सां	रेंनि॒ सां सां –
जा ऽ सु बि	लो ऽ कि अ	लौ ऽ कि क	सोऽ ऽ भा ऽ
०	३	×	२

ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	सां	सांरें	गं॒	गं॒	रें	सां	नि॒	रेंसां	ध॒	प
स	ह	ज	पु	नी	ऽ	त	मोऽ	ऽ	र	म	नु	छो	ऽऽ	भा	ऽ
०				३				×				२			

गं॒	–	गं॒	गं॒	रें	–	सां	सां	नि॒	–	सां	रें	ध॒	–	प	–
सो	ऽ	स	बु	का	ऽ	र	न	जा	ऽ	न	वि	धा	ऽ	ता	ऽ
०				३				×				२			

प	रें	सां	रें	नि॒	सां	ध॒	म	पध॒	नि॒	ध॒	म	रेम	मप	पध॒नि॒	ध॒म
फ	र	क	हिं	सु	भ	द	अं	गऽऽ		सु	नु	आऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ताऽ
०				३				×				२			

राग मिश्र पीलू (ताल कहरवा)

स्थायी

थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें॥

अन्तरा

अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी॥

स्थायी

रे	(सा)	सा	प़	प़	ध़	म़	म़	म़	प़	ध़	ध़	नि़	–	सा	–
थ	के	ऽ	न	य	न	र	घु	प	ति	छ	वि	दे	ऽ	खें	ऽ
×				०				×				०			

सा	ग॒	रे	ग॒	सा	रे	सा	नि़	नि़	सा	–	रे॒	सा	–	ध़	प़
प	ल	क	न्हि	हूँ	ऽ	प	रि	ह	रीं	ऽ	नि	मे	ऽ	षें	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	म	प	ग॒	सा	नि़	नि़	सा	(म) ग॒	सा	–	सा	–
अ	धि	क	स	ने	ऽ	ह	दे	ऽ	ह	भै	ऽ	भो	ऽ	री	ऽ
×				०				×				०			

प	प	म	प	ग॒	रे	सा	नि़	(सा) नि़	(सा) नि़	सा	(म) ग॒	सा	–	ध़	प़
स	र	द	स	सि	हि	ज	नु	चि	त	व	च	को	ऽ	री	ऽ
×				०				×				०			

राग गोपीवसन्त (ताल त्रिताल)

स्थायी

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी॥

अन्तरा

बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू॥

स्थायी

(प) ग॒ म –	ग॒ ग॒ सा सा	ध़ नि़॒ सा ग॒	म प प म
ध रि धी ऽ	र जु ए क	आ ऽ लि स	या ऽ नी ऽ
×	२	०	३
प़ ध॒ ध॒ नि॒	सां सां सां –	सां ध॒ नि॒ ध॒	म ग॒ सा प
सी ऽ ता ऽ	स न बो ऽ	ली ऽ ग हि	पा ऽ नी ऽ
×	२	०	३

अन्तरा

प ध॒ ध॒ नि	सां सां सां सा	सां – ध॒ नि॒	सां – सां –
ब हु रि गौ	ऽ रि क र	ध्या ऽ न क	रे ऽ हू ऽ
×	२	०	३
गं॒ मंगं॒ सां सां	ध॒ नि॒ ध॒ म	म प – ध॒	म ग॒ सा प
भू ऽऽ प कि	सो ऽ र दे	ऽ खि ऽ कि	न ले ऽ हू
×	२	०	३

राग बागेश्री (ताल त्रिताल)

स्थायी

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥

अन्तरा

(१) जय गजवदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
(२) मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
(३) कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥

स्थायी

प	ध	म	प	रे	ग॒	सा	रे	नि॒	–	सा	ग॒	रे	सा	सा	–
ज	य	ज	य	गि	रि	व	र	रा	ऽ	ज	कि	सो	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

सा	रे	म	प	ध	ध	ध	ध	ध	नि॒	ध	म	पध	नि॒सां	ध	पम
ज	य	म	हे	ऽ	स	मु	ख	च	ऽ	न्द	च	कोऽ	ऽऽ	री	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध	सां	सां	सां	सां	नि	–	सां	रें	निसां	–	ध	प
ज	य	ग	ज	व	द	न	ष	डा	ऽ	न	न	माऽ	ऽ	ता	ऽ
०				३				×				२			

ध	नि॒	ध	प	म	धप	ग॒	रे	सा	रे	म	प	धनि॒	सांनि॒	ध	पम
ज	ग	त	ज	न	नीऽ	दा	ऽ	मि	नि	दु	ति	गाऽ	ऽऽ	ता	ऽऽ
०				३				×				२			

राग जोग (ताल त्रिताल)

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥

दोहा

	सा		
ग ग म नि॒प	ग॒ – सा सा	नि॒ सा ग ग	म प म ग
सु नु सि यऽ	स ऽ त्य अ	सी ऽ स ह	मा ऽ री ऽ
०	३	×	२

			सा
ग म प नि॒	सां सां नि॒ प	म ग म नि॒प	ग म ग॒ सा
पू ऽ जि हि	म न का ऽ	म ना ऽ तुऽ	म्हा ऽ री ऽ
०	३	×	२

			मां
ग म प नि॒	सां सां सां नि॒	सां सां गं मं	गं॒ – सां –
ना ऽ र द	ब च न स	दा ऽ सु चि	सा ऽ चा ऽ
०	३	×	२

			सा
सां – नि॒ नि॒	प म ग म	ग ग म नि॒प	ग म ग॒ सा
सो ऽ ब रु	मि ल हि जा	ऽ हिं म नुऽ	रा ऽ चा ऽ
०	३	×	२

राग–धानी (ताल त्रिताल)

स्थायी

सतानंदु तव जनक बोलाए। कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाए॥

अन्तरा

जनक विनय तिन्ह आइ सुनाई। हरषे बोलि लिए दोउ भाई॥

स्थायी

				प								म			
नि	प	–	नि	म	प	ग	म	प	सां	नि	प	ग	रे	नि़	सा
स	ता	ऽ	न	ऽ	न्दु	त	व	ज	न	क	बो	ला	ऽ	ए	ऽ
×				२				०				३			

नि	सा	ग	सा	ग	म	प	नि	प	रें	सां	रें	नि	सां	नि	प
कौ	ऽ	सि	क	मु	नि	प	हिं	तु	र	त	प	ठा	ऽ	ए	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

ग	म	प	नि	नि	नि	नि	नि	प	–	नि	नि	सां	–	सां	–
ज	न	क	वि	न	य	ति	न्ह	आ	ऽ	इ	सु	ना	ऽ	ई	ऽ
×				२				०				३			

												म			
प	रें	सां	रें	नि	सां	नि	प	ग	म	नि	प	ग	रे	नि़	सा
ह	र	षे	ऽ	बो	ऽ	लि	लि	ये	ऽ	दो	उ	भा	ऽ	ई	ऽ
×				२				०				३			

राग बागेश्री (पंचम वर्जित) (ताल त्रिताल)

स्थायी

पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला।

अन्तरा

रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।

स्थायी

सां नि ध म	ग रे सा नि़	ध़ नि़ सा म	गम ध मध नि
पु नि मु नि	वृ ऽ न्द स	मे ऽ त कृ	पाऽ ऽ लाऽ ऽ
३	०	×	२
ध नि सां गं	रें सां नि ध	म ग रे सा	गम धनि सां धनि
दे ऽ ख न	च ले ऽ ध	नु ष म ख	साऽ ऽऽ ला ऽऽ
३	०	×	२

अन्तरा

ग म ध नि	सां सां सां सां	नि – सां रें	नि सां नि ध
रं ऽ ग भू	ऽ मि आ ऽ	ये ऽ दो उ	भा ऽ ई ऽ
३	०	×	२
म ध नि सां	नि सां नि ध	म ग रे सा	गम धनि सां धनि
अ सि सु धि	स ब पु र	वा ऽ सि न्ह	पाऽ ऽऽ ई ऽऽ
३	०	×	२

राग चलत धुन (ताल कहरवा)

(कवितावली)

स्थायी

छोनीमेंके छोनीपति छाजै जिन्हैं छत्रछाया
छोनी-छोनी छाए छिति आए निमिराज के।

अन्तरा

प्रवल प्रचण्ड वरिबंड वर बेष वपु।
बरबेकों बोले बयदेही बरकाज के॥ १॥
बोले बन्दी विरुद् बजाइ वर वाजनेऊ
वाजे-वाजे वीर वाहु धुनत समाज के॥ २॥
तुलसी मुदित मन पुर नर-नारि जेते
वार-बार हेरैं मुख औध—मृगराज के॥ ३॥
सियके स्वयंवर, समाजु जहां राजनि को
राजन के राजा महाराजा जानै नाम को॥ ४॥
पवन, पुरन्दरु, कृसानु, भानु धनदु से
गुन के निधान रूपधाम सोमु-कासु को॥ ५॥
वान बलवान जातुधानप सरीखे सूर
जिन्ह के गुमानु सदा सालिम संग्राम को॥ ६॥
तहां दशरत्थ के, समर्थ नाथ तुलसी के
चपरि चढ़ायो चापु चन्द्रमा-ललाम को॥ ७॥

सा	प	प	प	प	प	प	प	प	ध	प	म	ग	ग	म	म
छो	नी	मे	के	छो	नी	प	ति	छा	जै	जि	न्हें	छ	त्र	छा	या
×				०				×				०			

प	ध॒	प	म	ग॒	रे	सा	रे	ग॒	मग॒	रे	सा	सा	सा	रे	–
छो	नी	छो	नी	छा	ए	छि	ति	आ	येऽ	नि	मि	रा	ज	के	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

म म प प	नि नि नि नि	नि नि नि नि	सां सां सां सां
प्र ब ल प्र	चं ड ब रि	बं ड ब र	ब्रे ष व पु
×	०	×	०
नि नि नि नि	ध निध प ध	नि सांनि ध प	प प प –
ब र ब्रे को	बो लेऽ व य	दे हीऽ व र	का ज के ऽ
×	०	×	०
प प प प	प प प प	प ध प म	ग ग म म
बो ले बं दी	बि रु द् व	जा इ ब र	बा ज ने ऊ
×	०	×	०
प ध प म	ग रे सा रे	ग मग रे सा	सा सा सारे गम
बा जे बा जे	बी र बा हु	धु नऽ त स	मा ज केऽ ऽऽ
×	०	×	०

राग बिहाग (ताल त्रिताल)

स्थायी

तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही॥

अन्तरा

(१) मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई॥

(२) कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा॥

स्थायी

															नि त
(प)	ग	–	म	ग	–	–	सा	ऩि	ऩि	सा	म	ग		–	सा
व	रा	ऽ	म	हि	ऽ	ऽ	बि	लो	कि	बै	ऽ	दे		ऽ	ही
३				×				२				०			

प़	ऩि	सा	ग	म	ग	सा	प	मं	प	ग	म	ग	–	सा	–
स	भ	य	हृ	द	य	बि	न	व	ति	जे	हि	ते	ऽ	ही	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

ग	म	प	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां	गंमं	पंमं	गं	–	सां	–
म	न	ही	ऽ	म	न	म	ना	ऽ	व	अऽ	कुऽ	ला	ऽ	नी	ऽ
३				×				२				०			

पं	–मं	गं	मं	गं	–रें	सां	नि	प	–	नि	सां	गं	रें	सां	–
हो	ऽ	हु	प्र	स	ऽ	न्न	म	हे	ऽ	स	भ	वा	ऽ	नी	ऽ
३				×				२				०			

प नि सां रें	सां रें सां नि	प मंध ग म	ग - सा -
क र हु स	फ ल आ ऽ	प निऽ से व	का ऽ ई ऽ
३	×	२	०

नि़ सा ग म	प नि सां गं	सां सां नि नि	प -म गम ग
क रि हि तु	ह र हु चा	ऽ प ग रु	आ ऽ ऽऽ ई
३	×	२	०

राग शंकरा (ताल त्रिताल)

स्थायी

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भए सुखारे॥

अन्तरा

कौसिकरूप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाहु सुहावन॥

स्थायी

		ग	प नि ध सां
		प्र	भु दो ऽ उ
			३
नि – प ग	– ग ग प	रेग – ऽ सा –	सा – ग ग
चा ऽ प खं	ऽ ड म हि	डाऽ ऽ रे ऽ	दे ऽ खि लो
×	२	०	३
प प नि नि	प नि – सां	गं रें सां –	
ऽ ग स ब	भ ये ऽ सु	खा ऽ रे ऽ	
×	२	०	

अन्तरा

			प – सां सां
			कौ ऽ सि क
			३
सां सां सां सां	सां – सां सां	रेंगं – ऽ सां सां	नि ध सां नि
रू ऽ प प	यो ऽ नि धि	पाऽ ऽ व न	प्रे ऽ म बा
×	२	०	३
– प प प	ग – ग प (ऊपर: प ग)	रेग – स सा ग	प नि ध सां
ऽ रि अ व	गा ऽ हु सु	हाऽ व न प्र	भु दो ऽ उ
×	२	०	३

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा॥

अन्तरा

(१) कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई॥
(२) गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥

स्थायी

प़ ऩि ऩि ऩि	सा सा सा रेसा	ऩि ऩि ऩि सा	रे - रे रे
स ता न न्द	त ब आ ऽऽ	य सु दी ऽ	न्हा ऽ रा म
×	०	×	०

रे॒ प प म	रे ग॒रे सा ऩि	- सा रेग॒ रेसा	सा - सा -
सी ऽ ता ऽ	ग मऽ नु रा	ऽ म पऽ हिंऽ	की ऽ न्हा ऽ
×	०	×	०

अन्तरा

म प नि नि	- नि सां नि	सां - नि नि	सां - सां -
क र स रो	ऽ ज ज य	मा ऽ ल सु	हा ऽ ई ऽ
×	०	×	०

प सां नि॒ प	म म रे -	रे म प म	रे ग॒रे सा सा
बि ऽ स्व बि	ज य सो ऽ	भा ऽ जे हिं	छा ईऽ रा म
×	०	×	०

राग माँड (मिश्र) (ताल त्रिताल)

स्थायी

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधें। धनु सर कर कुठारू कल काँधें॥

अन्तरा

जनक बहोरि आइ सिर नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा॥
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई॥

स्थायी

ग	म	प	ध	नि	सां	ध	ध	मं	प	ग	म	ध (सां)	–	ध	–
ते	हि	अ	व	स		र सु	नि	सि	व	ध	नु	भं	ऽ	गा	ऽ
२				०				३				×			
ध	–	प	–मं	ग	मग	सा	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	सा	–	सा
आ	ऽ	ये	ऽऽ	भृ	गुऽ	कु	ल	क	म	लऽ	ऽऽ	प	तं	ऽ	गा
२				०				३				×			
ग	ग	प	ध	सां	सां	सां	निसां	रेंसां	सां	ध	ध	प	–	मंप	ध
क	टि	मु	नि	ब	स	न	तूऽ	ऽऽ	न	दु	ई	बाँ	ऽ	धेऽ	ऽ
२				०				३				×			
मं	ध	प	मं	ग	ग	सा	रे	–	सा	रेग	मग	सा	–	सा	–
ध	नु	स	र	क	र	कु	ठा	ऽ	र	कऽ	लऽ	काँ	ऽ	धे	ऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

सां	सां	ध	पध	सां	–	सां	रें	–	रें	रें	सा	गंरें	गं	सां	–
ज	न	क	बऽ	हो	ऽ	रि	आ	ऽ	इ	सि	रु	नाऽ	ऽ	वा	ऽ
२				०				३				×			

नि रें सां नि	ध – म म	प – ध ध	सां – सां –
सी ऽ य बो	ला ऽ इ प्र	ना ऽ मु क	रा ऽ वा ऽ
२	०	३	×

नि सां नि सां	ध – प मं	ध – प –मं	रे ग प प
बि ऽ स्वा ऽ	मि ऽ त्र मि	ले ऽ पु ऽनि	आ ऽ ई ऽ
२	०	३	×

मं ध प मं	ग ग सा रे	रे सा रेग मग	सा – सा –
प द स रो	ऽ ज मे ऽ	ले ऽ दोऽ उऽ	भा ऽ ई ऽ
२	०	३	×

देहाती धुन (कवितावली) (ताल दादरा)

मखु राखिबे के काज राजा मेरे संग दए,
जीते जातुधान, जे जितैया बिबुधेस के।
गौतम की तीय तारी, मेटे अघ भूरि भारी,
लोचन–अतिथि भए जनक जनेस के॥
चंड बाहुदंड-बल चंडीस–कोदण्ड खण्ड्यो,
ब्याही जानकी, जीते नरेस देस देस के।
सांवरे-गोरे सरीर, धीर, महावीर दोऊ,
नाम राम लखन, कुमार कोसलेस के॥

स्थायी

नि़	ध़	नि़	सा	–	सा	ध़सा	रेग	रे	नि़	ध़	नि़
म	ऽ	खु	रा	ऽ	खि	बेऽ	ऽऽ	के	का	ऽ	ज
०			×			०			×		
रे	–	रे	सारे	गम	ग	सा	सा	सा	ध़सा	रेग	रे
रा	ऽ	जा	मेऽ	ऽऽ	रे	सं	ग	द	येऽ	ऽऽ	ऽ
०			×			०			×		
ध़	–	नि़	सा	–	सा	रे	ग	रे	नि़	ध़	नि़
जी	ऽ	ते	जा	ऽ	तु	धा	ऽ	न	जे	ऽ	जि
०			×			०			×		
रे	–	रे	गरेसारे	गम	ग	सा	–	सा	गरेसानि़	ध़नि़	सारे
तै	ऽ	या	बिऽऽऽ	ऽऽ	बु	धे	ऽ	स	केऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०			×			०			×		

अन्तरा

ग	–	सा	ग	–	रेग–	म	–	म	म	–	म
गौ	ऽ	त	म	ऽ	कीऽ	ती	ऽ	य	ता	ऽ	री
०			×			०			×		

ग॒	–	सा	रे	–	प	(ग॒)	–	रे	सा	–	सा
मे	ऽ	टे	अ	ऽ	घ	भू	ऽ	रि	भा	ऽ	री
०			×			०			×		

ध़	–	नि़	सा	–	सा	ध़सा	रेग॒	सा	रे	नि़	ध़
लो	ऽ	च	न	ऽ	अ	तिऽ	ऽऽ	थि	भ	ये	ऽ
०			×			०			×		

रे	रे	–	ग॒रेसारे	गम	–ग॒	सा	–	सा	रेरेसानि़	ध़नि़	सारे
ज	न	ऽ	कऽऽऽ	ऽऽ	ऽज	ने	ऽ	स	केऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०			×			०			×		

राग खमाज (ताल झपताल) (कवितावली)

स्थायी

दूब दधि रोंचना कनक थार भरि भरि
आरती संवारि बर नारि चलीं गावतीं ॥

अन्तरा

लीन्हे जयमाल कर कंज सोहैं जानकी के
पहिराओ राघोजू को सखियाँ सिखावतीं ॥
तुलसी मुदित मन जनक नगर-जन
झाँकती झरोखे लागीं सोभा रानीं पावतीं ॥
मनहु चकोरी चारू बैठीं निज निज नींड
चंद की किरन पीवैं पलकैं न लावतीं ॥

स्थायी

ग	–	सा	ग	म	प	–	ध	म	गसा
दू	ऽ	ब	द	धि	रों	ऽ	च	ना	ऽऽ
×		२			०		३		

ग	म	प	पध	नि॒ध	म	प	ध	म	ग
क	न	क	थाऽ	ऽर	भ	रि	भ	रि	ऽ
×		२			०		३		

ग	म	प	पधनि॒ध	पध	नि	सां	नि	सां	सां
आ	ऽ	र	तीऽऽऽ	ऽऽ	स	वाँ	रि	ब	र
×		२			०		३		

सां	नि॒	ध	ग	म	पध	नि॒	ध	म	गसा
ना	ऽ	रि	च	लीं	गाऽ	ऽ	व	तीं	ऽऽ
×		२			०		३		

अन्तरा

ग	म	धनि़	धनि़	पध	नि	सां	नि	सां	सां
ली	ऽ	न्हेऽ	ऽऽ	जय	मा	ऽ	ल	क	र
×		२			०		३		

नि़	सां	रेंगंमं	गं	रें	नि	सां	रेंसां	नि़	ध
कं	ऽ	जऽऽ	सो	हे	जा	ऽ	नऽ	की	के
×		२			०		३		

सां	नि़	ध	प	प	प	पध	म	ग	ग
प	हि	रा	ऽ	वो	रा	घोऽ	जू	ऽ	को
×		२			०		३		

ग	सा	ग	म	प	पध	नि़	ध	म	गसा
स	खि	याँ	ऽ	सि	खाऽ	ऽ	व	तीं	ऽऽ
×		२			०		३		

देहाती धुन (ताल कहरवा)

(कवितावली)

स्थायी

बानी, बिधि, गौरी, हर, सेसहूँ, गनेस कही,
सही भरी लोमस भुसुंडि बहु–बारिखो ॥

अन्तरा

चारिदस भुवन निहारि नर नारि सब
नारदसों न परदा न नारद सो पारिखो ॥
तिन कही जग में जगमगाति जोरी एक
दूजो को कहैया औ सुनैया चषचारिखो ।
रमा, रमारमन, सुजान हनुमान कही
सीय सी न तीय, न पुरुष राम सारिखो ॥

स्थायी

ग	–	गम	गरे	रेग	रेग	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
बा	–	नीऽ	ऽऽ	बिऽ	ऽऽ	धि	ऽ	गौ	ऽ	री	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ
×				०				×				०			

सारे	ग	ग	–	ग	–	ग	रे	रेग	म	म	–	म	ग	सा	रे
सेऽ	ऽ	स	ऽ	हू	ऽ	ग	ऽ	नेऽ	ऽ	स	ऽ	क	ऽ	ही	ऽ
×				०				×				०			

ग	प	म	ग	रे	सा	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
स	ऽ	ही	ऽ	भ	ऽ	री	ऽ	लो	ऽ	म	ऽ	स	ऽ	भु	ऽ
×				०				×				०			

रे	ग	ग	–	ग	–	ग	रे	ग	प	प	धप	म	ग	सा	रे
सुं	ऽ	डि	ऽ	ब	ऽ	हु	ऽ	बा	ऽ	रि	ऽऽ	खो	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

ग - म -	प - प -	प - प -	प - प रे
चा ऽ रि ऽ	द ऽ स ऽ	भु ऽ व ऽ	न ऽ नि ऽ
×	०	×	०

रे - ग -	ग - ग -	म ध प ध	ग म ग -
हा ऽ रि ऽ	न ऽ र ऽ	ना ऽ रि ऽ	स ऽ व ऽ
×	०	×	०

ग प म ग	रे सा सा -	सा - सा -	सा - सा -
ना ऽ र ऽ	द ऽ सों ऽ	प ऽ र ऽ	दा ऽ न ऽ
×	०	×	०

रे ग ग -	ग - ग रे	ग प प धप	म ग सा रे
ना ऽ र ऽ	द ऽ सो ऽ	पा ऽ रि ऽऽ	खो ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

अयोध्याकाण्ड

राग भूपाली (ताल त्रिताल)

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥

ग	–	ग	ग	ग	ग	ग	गप	रे	–	सा	रे	ग	–	–	–
श्री	ऽ	गु	रु	च	र	न	सऽ	रो	ऽ	ज	र	ज	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

(ग) प	ग	प	प	प	प	ध	सां	प	–	–	–	प	–	–	–
नि	ज	म	नु	मु	कु	र	सु	धा	ऽ	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

प	ग	प	प	ध	सां	प	ध	सां	सां	सां	रें	सां	–	–	–
ब	र	न	उँ	र	घु	ब	र	बि	म	ल	ज	सु	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग	–	ग	–	ग	ग	प	पध	ग	–	सा	–	रे	–	ग	प
जो	ऽ	दा	ऽ	य	कु	फ	लऽ	चा	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग अल्हैया बिलावल (ताल त्रिताल)

स्थायी

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी॥

अन्तरा

नाथ रामु करिअहिं जुबराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाजू॥

स्थायी

प	प	ध	नि (नि)	सां	सां	सां	ध	नि̲	प	म	ग	म	रे	सा	–
स	ब	बि	धि	गु	रु	प्र	स	ऽ	न्न	जि	य	जा	ऽ	नी	ऽ
×				२				०				३			

सा	–	ग	मग	म	रे	सा	ध	ध	नि	सां	रें	सांरें	सांनि	धप	मग
बो	ऽ	ले	ऽउ	रा	ऽ	उ	र	हँ	सि	मृ	दु	बाऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	–	ध	नि	सां	सां	सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	रें	सां	–
ना	ऽ	थ	रा	ऽ	मु	क	रि	अ	हिं	जु	ब	रा	ऽ	जू	ऽ
×				२				०				३			

सां	रें	सां	नि	ध (रे)	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सांरें	सांनि	धप	मग
क	हि	अ	कृ	पा	ऽ	क	रि	क	रि	अ	स	माऽ	ऽऽ	जूऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

धुन (ताल धुमाली)

स्थायी (मध्यलय)

सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥
राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥

– म॒प॒ नि॒ नि॒	सा सा सा सा	सारे गरे सा नि॒	नि॒सा– –सारे– –
सुन त रा	ऽ म अ भि	षेऽ ऽऽ क सु	हाऽऽ ऽ वाऽऽ ऽ
×	०	×	०

– म म म	(रे) ग – सा नि॒	नि॒ नि॒ सा रे	सा – ध॒ प॒
ऽ बा ज ग	हा ऽ ग ह	अ व ध ब	धा ऽ वा ऽ
×	०	×	०

– म पनि॒ नि॒	सा सा सा सा	सा रे सा नि॒	नि॒सा– –सारे– –
रा –म सी	ऽ य त न	स गु न ज	नाऽऽ ऽ एऽऽ ऽ
०	०	×	०

म म म म	ग – सा नि॒	नि॒ – सा रे	सा – ध॒ प॒
फ र क हिं	मं ऽ ग ल	अं ऽ ग सु	हा ऽ ये ऽ
×	०	×	०

अन्तरा (द्रुतलय)

एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनिवासु ।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु ॥
राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरषे नर नारि ।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि ॥

मम मम गग ग–	सासा ऩिसा रे–	मम मम गग साऩि	सा – सा –
एहि अव सर मंऽ	ग ल पर म ऽ	सुनि रहँ सेउ रनि	वा ऽ सु ऽ
०	×	०	×

प– मम गग सासा	ऩिसा ऩिसा रे–	मम मम ग–	साऩि सा –सा
सोऽ भत लखि विधु	बढ़ तज नुऽ	वाऽ रिधि वीऽ	चिबि ला ऽ सु
०	×	०	×

राग तिलक कामोद (ताल कहरवा)

स्थायी

कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता॥

अन्तरा

सकल कहहिं कब होइहि काली। बिघन मनावहिं देव कुचाली॥
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा॥
सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं॥

स्थायी

ग	प	म	म	गरे	ग	सा	ऩि	ऩि	सा	रेम	गरे	सा	–	ऩि	–
क	न	क	सिं	घाऽ	ऽ	स	न	सी	ऽ	यऽ	सऽ	मे	ऽ	ता	ऽ
×				०				×				०			

ऩि	प़	ऩि	ऩि	सा	–	रेग	सारे	ऩिसा	रेम	गरे	ग	सा	–	सा	–
बै	ऽ	ठ	हिं	रा	ऽ	मुऽ	होऽ	ऽऽ	इऽ	चिऽ	त	चे	ऽ	ता	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

													नि		
म	म	प	प	प	ध	म	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	–
स	क	ल	क	ह	हिं	क	ब	हो	ऽ	इ	हि	का	ऽ	ली	ऽ
×				०				×				०			

प	ध	म	म	गरे	ग	सा	ऩि	सा	सा	रेग	मग	सा	सा	सा	–
बि	घ	न	म	नाऽ	ऽ	व	हिं	दे	ऽ	वऽ	कुऽ	चा	ऽ	ली	ऽ
×				०				×				०			

राग मिश्र काफी (ताल कहरवा)

स्थायी

नासु मंथरा मंदमति चेरी कैकइ केरि।
अजस पेटारी ताही करि गई गिरा मति फेरि॥

अन्तरा

गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि॥

स्थायी

×				२				०				३			
ग	–	ग	ग	–	ग	ग	–	रे	ग	रे	सा	रे	ग	म	–
ना	ऽ	सु	मं	ऽ	थ	रा	ऽ	म	ऽ	न्द्	म	ति	ऽ	ऽ	ऽ

×				२				०				३			
म	ध	प	–	ग	–रे	सा	ऩि	सा	ऩिसा	रे	सारे	ग	रेग	म	–
चे	ऽ	री	ऽ	कै	ऽऽ	क	इ	के	ऽऽ	रि	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ

×				२				०				३			
ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	–	रे	ग (म)	रे	सा	सारे	ग	रेग	म
अ	ज	स	पे	टा	ऽ	री	ऽ	ता	ऽ	हि	क	रिऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ

×				२				०				३			
म	ध	–	प	ग	रे	सा	ऩि	सा	–	रे	–	ग	–	म	–
ग	ई	ऽ	गि	रा	ऽ	म	ति	फे	ऽ	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

×				२				०				३			
म	–	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	नि	सां	–	–	–
गू	ऽ	ढ़	क	प	ट	प्रि	य	ब	च	न	सु	नि	ऽ	ऽ	ऽ

ध सां नि॒ ध	प म म म	प – प –	पध नि॒ध पध सां
ती ऽ य अ	ध र बु धि	रा ऽ ऽ ऽ	निऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
×	२	०	३

प प प –	प ध नि॒ ध	प ध प म	ग म ग म
सु र मा ऽ	या ऽ व स	वै ऽ र न	हि ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

प ध प ग॒	– रे सा नि़	सा – गम पध	निसां निध पम गरे
सु हृ द जा	ऽ नि प ति	आ ऽ निऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
×	२	०	३

राग भीमपलासी (ताल त्रिताल)

स्थायी

दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥

अन्तरा

सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू॥

स्थायी

			म	सा											
प़	नि़	सा	ग	रे	–	सा	रे	नि़	सा	प़	नि़	सा	–	सा	–
दु	इ	ब	र	दा	ऽ	न	भू	ऽ	प	स	न	था	ऽ	ती	ऽ
२				०				३				×			

				म				सा				प़			
सा	ग	म	प	ग	–	सा	सा	रे	–	नि़	नि़	सा	–	सा	–
मा	ऽ	ग	हु	आ	ऽ	जु	जु	ड़ा	ऽ	व	हु	छा	ऽ	ती	ऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

ग	म	प	नि	सां	–	प	प	म	ग	मप	निप	ग	म	म	–
सु	ऽ	त	हि	रा	ऽ	जु	रा	म	हि	बऽ	नऽ	बा	ऽ	सू	ऽ
२				०				३				×			

												सा			
गं	–	सां	रें	–	नि	सां	सां	पम	निप	ग	मग	रे	–	सा	–
दे	ऽ	हु	ले	ऽ	हु	स	ब	सऽ	वऽ	ति	हुऽ	ला	ऽ	सू	ऽ
२				०				३				×			

भजनी धुन (ताल कहरवा)

दोहा

बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥

नि नि नि नि	– नि नि नि	सां – नि नि	सां – – –
ब ड़ कु घा	ऽ तु क रि	पा ऽ त कि	नि ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प नि सां रें	– रें रें गं	सां – – –	पध पम पनि सां
क हे सि को	ऽ प गृ ह	जा ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ हु
×	०	×	०

अन्तरा

सां सां सां सां	सां – सां प	प ध प ध	म ग रे –
का ऽ जु सँ	वा ऽ रे हुं	स ज ग स	बु ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

रे ग रे म	ग रे सा नि़	सा – – –	रेम पध मप सां
स ह सा ऽ	ज नि प ति	आ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ हु
×	०	×	०

राग काफ़ी (ताल त्रिताल)

स्थायी

कोप भवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ॥

अन्तरा

सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ। देखि दसा दुखु दारुण भयऊ॥

स्थायी

मप	ध	म	प	रे	ग॒	सा	रे	नि॒	नि॒	सा	ग॒	रेसा	–	रेम	पध
कोऽ	ऽ	प	भ	व	न	सु	नि	स	कु	चे	उ	राऽ	ऽ	ऊऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

												नि॒			
सा	रे	म	प	ध	ध	नि॒ध	पम	–	पध	–	नि॒ सां	सां	–	ध	प
भ	य	ब	स	अ	ग	हुऽ	ड़ऽ	ऽ	पर	ऽइ	न	पा	ऽ	ऊ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध	सां	–	सां	सां	धसां	रेंगं॒	रें	सां	सां	सां	ध	प
स	भ	य	न	रे	ऽ	सु	प्रि	याऽ	ऽऽ	प	हिं	ग	य	ऊ	ऽ
०				३				×				२			

ध	–	ध	ध	पध	नि॒	ध	प	मप	ध	म	पं	रे	ग॒	सारे	मप
दे	ऽ	खि	द	साऽ	ऽ	दु	खु	दाऽ	ऽ	रु	न	भ	य	ऊऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा॥
कहु केहि रंकहि करौं नरेसू। कहु केहि नृपहि निकासौं देसू॥

अन्तरा

बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता।
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू। बेगि प्रिया परिहरहि कुवेषू॥

स्थायी

ग म ग म	ग॒ –रे सारे प	ग॒ –रे सा नि़	सा – सा –
अ न हि त	तो ऽर प्रि ऽ या	के ऽ ऽ इँ ऽ	की ऽ न्हा ऽ
×	०	×	०

ग म प प	प –प प प	प ध प म	ग – म –
के हि दु इ	सि ऽर के हि	ज मु च ह	ली ऽ न्हा ऽ
×	०	×	०

ग म प प	पध नि॒ ध प	प ध प म	ग – म –
क हु के हि	रं ऽ ऽ क हि	क रौं ऽ न	रे ऽ सू ऽ
×	०	×	०

प ध॒ प म	ग॒ रे सा रे	रेग॒ म ग॒ रे सा	सा – सा –
क हु के हि	नृ प हिं नि	काऽ ऽ ऽ सौं ऽ	दे ऽ सू ऽ
×	०	×	०

अन्तरा

नि॒ नि॒ नि॒ ध	– ध म म	पध नि॒सां नि॒ सां	प ध॒ प –
वि ह सि मा	ऽ गु म न	भाऽ ऽ ऽ व ति	बा ऽ ता ऽ
×	०	×	०

नि॒ – नि॒ नि॒	ध ध म म	पध नि॒सां नि॒सां	प ध॒ प –
भू ऽ ष न	स ज हि म	नोऽ ऽऽ ह र	गा ऽ ता ऽ
×	०	×	०
ग म प प	पध नि॒ ध प	प ध प म	ग – म –
घ री ऽ कु	घऽ री स मु	झि ऽ जि यँ	दे ऽ खू ऽ
×	०	×	०
प ध प म	ग॒ रे सा रे	रेग॒ मग॒ रे सा	सा – सा –
बे गि प्रि या	प रि ह र	हिऽ ऽऽ कु ऽ	बे ऽ षू ऽ
×	०	×	०

राग तिलक कामोद (ताल त्रिताल)

दोहा

मागु मागु पै कहहु पिय कवहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥

प	नि़	सा	रे	–	रे	रेग	सारे	रे	म	म	म	रेग	–	सा	–
मा	ऽ	गु	मा	ऽ	गु	पैऽ	ऽऽ	क	ह	हु	पि	यऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

रे	म	प	ध	म	ग	रेसा	नि़	सा	–	–	–	सा	–	–	–
क	ब	हुँ	न	दे	ऽ	हुऽ	न	ले	ऽ	ऽ	ऽ	हु	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

म	प	नि	नि	नि	नि	नि	नि	सां	–	नि	सां	सां	–	–	प
दे	ऽ	न	क	हे	हु	ब	र	दा	ऽ	न	दु	इ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

नि़	ध	म	ग	रेसा	सा	रे	म	ग	–	–	–	सा	–	–	–
ते	उ	पा	ऽ	वऽ	त	सं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	हु	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

राग जैजैवन्ती (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुनहु प्रानप्रिय भावत जीका । देहु एक वर भरतहि टीका ॥

अन्तरा

मागउं दूसर बर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस बेष बिसेषि उदासी । चौदह बरिस रामु बनबासी ॥
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू । ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥

स्थायी

म ग रे रे	ग॒ रे सा सा	ऩिसारे ऩिसा–धऩि	रे – रे ग
सु न हु प्रा	ऽ न प्रि य	भाऽऽ ऽऽ– वत	जी ऽ का ऽ
०	३	×	२

ग म ध ध	(सां) नि॒ ध म ग	रेग मप म ग	रे रेग॒ रे सा
दे ऽ हु ए	ऽ क ब र	भऽ रऽ त हि	टी ऽऽ का ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ध नि	सां – सां सां	नि सां ध नि॒	(ग) रें – रें –
मा ऽ ग उँ	दू ऽ स र	ब र क र	जो ऽ री ऽ
०	३	×	२

रे ग ग म	म प ग ग	रे (म) ग॒ रे सा	रेग मग रेग॒ रेसा
पु र व हु	ना ऽ थ म	नो ऽ र थ	मोऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ
०	३	×	२

राग भैरव (ताल त्रिताल)

स्थायी

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥

अन्तरा

हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहै जनि कोई॥

स्थायी

पनिध़	–	म	रे़	–	रे़	सा	सा	सा	रे़	ग	ग	म	–	रे़म	मप
राऽऽ	ऽ	म	रा	ऽ	म	र	ट	बि	क	ल	भु	आ	ऽ	लूऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

प	ध़	प	ध़	म	–	म	ग	ग	रे़	ग	म	रे़	–	सारे़	मप
ज	नु	बि	नु	पं	ऽ	ख	बि	हं	ऽ	ग	बे	हा	ऽ	लूऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध़	सां	–	सां	रें़	–	रें़	रें़	रें़	सांरें़	रें़गरें़	सां	सां
हृ	द	य	म	ना	ऽ	व	भो	ऽ	रु	ज	नि	होऽऽ	ऽऽऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

सां	–	नि	रें़सां	ध़	–	म	म	रे़म	पध़	म	म	रे़	–	सारे़	मप
रा	ऽ	म	हिंऽ	जा	ऽ	इ	क	हैऽ	ऽऽ	ज	नि	को	ऽ	ईऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

धुन (ताल कहरवा)

दोहा

द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि ।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि ॥

ध॒ – ध॒ ध॒	– ध॒ ध॒ –	प ध॒ प ध॒	म – – –
द्वा ऽ र भी	ऽ र से ऽ	व क स चि	व ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×

प नि ध॒ प	म ग सा रे॒	म – – म	ग म – –
क ह हिं उ	दि त र बि	दे ऽ ऽ खि	रा जा ऽ ऽ
०	×	×	०

अन्तरा

सां सां सां सां	सां सां सां सां	नि सां नि (रें सां)	ध॒ – – –
जा ऽ गे उ	अ ज हुँ न	अ व ध (प ऽ)	ति ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प ध॒ प म	ग रे॒ सा रे॒	म – – म	ग म प प
का ऽ र नु	क व नु बि	से ऽ ऽ षि	श्री ऽ रा म
×	०	×	०

धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

अवनिप अकनि रामु पगु धारे। धरि धीरजु तव नयन उघारे॥
सचिवँ सँभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारे॥

–	ऩिऩि	ऩि	ऩि	सा	सा	रे	ग	–	ग	म	ग	सा	–	ऩिसा	रेसारे
ऽ	अव	नि	प	अ	क	नि	रा	ऽ	मु	प	गु	धा	ऽ	रेऽऽ	ऽऽ
०				×				०				×			
–	रेग	–	म	–	गरे	ग	रेसा ऩि	–	ऩिसा	रेगम	ग	सा	–	सा	–
ऽ	धरि	धी	ऽ	रऽ	ज	तऽ	व	ऽ	नय	नऽऽ	उ	घा	ऽ	रे	ऽ
०				×				०				×			
–	ऩिऩि	ऩि	ऩि	सा	–	रे	ग	–	ग	म	ग	सा	–	ऩिसा	रेसारे
–	सचि	वँ	सँ	भा	ऽ	रि	रा	ऽ	उ	बै	ऽ	ठा	ऽ	रेऽऽ	ऽऽ
०				×				०				×			
–	मम	म	म	गरे	ग	सा	ऩि	–	सा	म	ग	सा	–	सा	–
–	चर	न	प	रऽ	त	नृ	प	ऽ	रा	मु	नि	हा	ऽ	रे	ऽ
०				×				०				×			

राग तोड़ी (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहु सदासिव मोरी॥

अन्तरा

आसुतोष तुम्ह अवढर दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी॥
अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ। नरक परौं बरु सुरपुरु जाऊ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओट रामु जनि होंही॥

स्थायी

रे	रे	रे	ग	(रे)ग	रे	सा	सा	निसा	रेसा	नि	ध	नि	सा	रे	ग
सु	मि	रि	म	हे	ऽ	स	हि	कऽ	हऽ	हि	नि	हो	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
प	प	प	ग	रे	ग	म	प	ध	–	म	ग	रे	ग	रे	सा
वि	न	ती	ऽ	सु	न	हु	स	दा	ऽ	सि	व	मो	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	–	ग	म	–	ध	म	ध	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	–
आ	ऽ	सु	तो	ऽ	ष	तु	म्ह	अ	व	ढ	र	दा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
(गं)रें	रें	रें	गं	रें	रें	सां	–	निसांरें	निसां	नि	ध	मपध	मप	म	ग
आ	ऽ	र	ति	ह	र	हु	ऽ	दीऽऽ	नऽ	ज	नु	जाऽऽ	ऽऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

धुन (विना ताल)

दोहा

मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात ॥

ग	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	म	रे	–	–	–
मं	ऽ	ग	ल	स	म	य	स	ने	ऽ	ह	व	स	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	रे	रे	नि	रे	गम	गरे	सा	–	–	–	नि़रे	सानि़	धनि़	–ध़
सो	ऽ	च	प	रि	ह	रिऽ	अऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	तऽ	ऽऽ
प	ग	प	प	ध	नि	प	प	ग	रे	ग	म	रे	–	–	–
आ	ऽ	य	सु	दे	ऽ	इ	अ	ह	र	षि	हि	यँ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	नि़	रे	ग	रेग	मघ	प	–	रे	रे	(प) सा	–	–	–	–	सा
क	हि	पु	ल	केऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	प्र	भु	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त

राग कालिंगड़ा (कोमल नि) (एकताल)

दोहा

समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ॥

ग	रे	सा	नि॒	नि॒	सा	रे॒	ग	ग	रे॒	सा	–
स	मा	चा	र	ते	हि	स	म	य	सु	नि	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	रे॒	ग	म	प	ध॒	प	म	ग	रे॒	सा	रे॒
सी	ऽ	य	उ	ठी	ऽ	अ	कु	ला	ऽ	इ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

नि॒	ध॒	प	म	ग	म	प	ध॒	म	ध॒	प	–
जा	इ	सा	सु	प	द	क	म	ल	जु	ग	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ध॒नि॒	ध॒प	मप	मग	रे॒ग	रे॒सा	सानि॒	सारे॒	गरे॒	सानि॒	सा	–
बंऽ	दिऽ	बैऽ	ठिऽ	सिऽ	रुऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	इ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

देहाती धुन (ताल जल्द कहरवा)

स्थायी

लागि सासु पग कह कर जोरी । छमवि देवि बड़ि अविनय मोरी ॥
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद विमल बि बदन निहारें ॥

–	–	सा	रे	–	सा	–	नि़	सा	–	सा	–	सा	रे	रेग॒	–रे
ऽ	ऽ	ला	गि	ऽ	सा	ऽ	सु	प	ऽ	ग	ऽ	क	ऽ	हऽ	ऽऽ
×				०				×				०			

रे	ग	म	ग॒	मरे	सा	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–
क	ऽ	र	ऽ	जोऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ऽ	ऽ	ध़	सा	सा	सा	सा	–	रे	–	म	–	म	–	म	–
ऽ	ऽ	ध	म	ऽ	वि	दे	ऽ	ऽ	ऽ	वि	ऽ	बि	ऽ	ड़ि	ऽ
×				०				×				०			

–	–	प	ध	–	म	ग॒	–	ग॒	–	–	–	सारे	–	–	–
ऽ	ऽ	अ	वि	ऽ	न	य	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

–	म	ग॒	रे	–	सा	–	ध़
ऽ	ऽ	ला	गि	ऽ	सा	ऽ	सु
×				०			

राग कलिंगड़ा (ताल त्रिताल)

स्थायी

समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥

अन्तरा

कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥

स्थायी

(ध॒)			
प म ग म	− म प प	ध॒ ध॒ ध॒ ध॒	पध॒ निसां ध॒ प
स मा ऽ चा	ऽ र ज ब	ल छि म न	पाऽ ऽऽ ये ऽ
०	३	×	२
(म)			(ग)
ग − म रे॒	ग म प प	ग ग म ग	रे॒ − सा −
व्या ऽ कु ल	वि ल ख ब	द न उ ठि	धा ऽ ये ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

	(सां)		
प ध॒ प ध॒	नि नि सां सां	सां रें॒ सां रें॒	सांनि − सां −
कं ऽ प पु	ल क त न	न य न स	नीऽ ऽ रा ऽ
०	३	×	२
सां रें॒ सां नि	ध॒ प म ग	मप ध॒ प म	ग रे॒ सा −
ग हे च र	न अ ति प्रे	ऽऽ म अ ऽ	धी ऽ रा ऽ
०	३	×	२

राग सोहनी (ताल त्रिताल)

स्थायी

मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला॥

अन्तरा

गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी॥

स्थायी

धनि सां नि ध	म॑ ग म॑ ध	नि सां सां सां	सां रें सां –
मैंऽ ऽ सि सु	प्र भु स ने	ऽ हँ प्र ति	पा ऽ ला ऽ
२	०	३	×
ध रें सां रें	नि सां नि ध	म॑ध निसां नि सां	धनि सांनि ध –
मं ऽ द रु	मे ऽ रु कि	लेऽ ऽऽ हिं म	राऽ ऽऽ ला ऽ
२	०	३	×

अन्तरा

म॑ म॑ ग ग	म॑ ध नि सां	सां रें सां रें	सां नि सां –
गु रु पि तु	मा ऽ तु न	जा ऽ न उँ	का ऽ हू ऽ
२	०	३	×
सां गं गं म॑ं	गं रें सां सां	नि रें सां रें	धनि सांनि ध –
क ह उँ सु	भा ऽ उ ना	ऽ थ प ति	याऽ ऽऽ हू ऽ
२	०	३	×

राग पंचम (ताल त्रिताल)

स्थायी

मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥

अन्तरा

जाइ जननि पग नायउ माथा। मनु रघुनंदन जानकि साथा॥

स्थायी

ध
मा

मं ग रे॒ सा	म – – म	– म म म	पम – ग, म
ऽ ग हु वि	दा ऽ ऽ मा	ऽ तु स न	जाऽ ऽ इ, आ
३	×	२	०

सां

ध म धनि सां	रें सां नि ध	नि ध प म	पम – ग, ध
ऽ ऽ वऽ हु	बे ऽ गि च	ल हु ब न	भाऽ ऽ ई, मा
३	×	२	०

अन्तरा

म ग म धम	धनि सां सां सां	सां रेंसां मं मं	पंमं – ग –
जा ऽ इ जऽ	नऽ नि प ग	ना ऽऽ य उ	माऽ ऽ था ऽ
३	×	२	०

मं गं रें सां	रें सां नि ध	नि ध प म	पम – ग, ध
म नु र घु	नं ऽ द न	जा ऽ न कि	साऽ ऽ था, मा
३	×	२	०

राग भीमपलासी (ताल त्रिताल)

स्थायी

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥

अन्तरा

तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥
अवध तहाँ जहाँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥
जा पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥

स्थायी

सा	मग	सारे	-सा	नि़	नि़	प़ध़	-प़	म़	प़	नि़	नि़	सा	-	सा	-
धी	ऽऽ	रऽ	ऽजु	ध	रे	उऽ	ऽकु	अ	व	स	र	जा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

												प			
नि़	सा	म	म	म	धप	-ग	म	साग	मप	म	प	ग	म	म	ऽ
स	ह	ज	सु	हृ	दऽ	ऽबो	ऽ	लीऽ	ऽऽ	मृ	दु	वा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

												मं			
ग	म	प	नि	सां	-	-	सां	नि	-	नि	सां	गं	सांरें	-	सां
ता	ऽ	त	तु	म्हा	ऽ	ऽ	रि	मा	ऽ	तु	वै	ऽ	देऽ	ऽ	ही
०				३				×				२			

रें	सां	-	नि	-	नि	ध	प	ग	-	म	प	ग	म	म	-
पि	ता	ऽ	रा	ऽ	मु	स	ब	भां	ऽ	ति	स	ने	ऽ	ही	ऽ
०				३				×				२			

राग तेलंग (ताल रूपक)

स्थायी

उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं॥

अन्तरा

तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई॥

स्थायी

सा	सा
उ	प

ग	–	म	ग	म	ग	म	प	नि॒	प	ग	म	ग	–
दे	ऽ	सु	य	हु	जे	हिं	ता	ऽ	त	तु	म्ह	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

ग	–	म	पनि॒	पम	ग	म	पनि	सां	नि	सां	–	सां	सां
रा	ऽ	म	सिऽ	यऽ	सु	ख	पाऽ	ऽ	व	हीं	ऽ	पि	तु
×			२		३		×			२		३	

गं	मं	गं	सां	सां	सां	सां	निसां	रें	सां	नि॒	नि॒	प	प
मा	ऽ	तु	प्रि	य	प	रि	वाऽ	ऽ	र	पु	र	सु	ख
×			२		३		×			२		३	

नि	सां	नि	प	प	प	म	गम	प	म	ग	–	सा	सा
सु	र	ति	व	न	बि	स	राऽ	ऽ	व	हीं	ऽ	उ	प
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा

													ग	म
													तु	ल
प	नि	सां	सां	सां	नि	नि	सां	–	सां	नि	सां		सां	सां
सी	ऽ	प्र	भु	हि	सि	ख	दे	ऽ	इ	आ	ऽ		य	सु
×			२		३		×			२			३	
गं	मं	गं	सां	सां	सां	–	नि	सां	रेंसां	नि॒	प		प	सां
दी	ऽ	न्ह	पु	नि	आ	ऽ	सि	ष	दऽ	ई	ऽ		र	ति
×			२		३		×			२			३	
नि॒	–	प	म	म	म	म	गम	प	प	म	म		ग	ग
हो	ऽ	उ	अ	वि	र	ल	अऽ	म	ल	सि	य		र	घु
×			२		३		×			२			३	
सा	–	सा	ग	म	पनि॒	पम	प	सां	नि	सां	–		सा	सा
बी	ऽ	र	प	द	निऽ	तऽ	नि	त	न	ई	ऽ		उ	प
×			२		३		×			२			३	

राग दरबारी (ताल त्रिताल)

स्थायी

भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥
सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥

अन्तरा

सिय समेत दोउ तनय निहारी । ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तब मागा ॥
रायँ राम राखन हित लागी । बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

स्थायी

नि़	रे	सा	ध़	ध़	ध़	नि़	ध़नि़	सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
भ	इ	ब	ड़ि	भी	ऽ	र	भूऽ	ऽ	प	द़	र	बा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			
नि़	–रे	सा	सा	ध़	–	नि़	ध़नि़	सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
ब	ऽर	नि	न	जा	ऽ	इ	बिऽ	षा	ऽ	दु	अ	पा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			
रे	रे	रे	रे	रे	रे	सा	रे	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा	–
स	चि	वँ	उ	ठा	ऽ	इ	रा	ऽ	उ	बै	ऽ	ठा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			
नि़	रे	सा	सा	ध़	ध़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
क	हि	प्रि	य	ब	च	न	रा	ऽ	मु	प	गु	धा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	प	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	रें	नि॒	सां	–
सि	य	स	मे	ऽ	त	दो	उ	त	न	य	नि	हा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

नि॒	–	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	निं॒	नि॒	नि॒	सां	रें	ध॒	–	नि॒	प
व्या	ऽ	कु	ल	भ	य	ड	भू	ऽ	मि	प	ति	भा	ऽ	ऽ	री
०				३				×				२			
म	–	म	प	–	प	पध॒	मप	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒म	रे	–	सा	–
ना	ऽ	इ	सी	ऽ	सु	पऽ	दऽ	अ	ति	अ	नुऽ	रा	ऽ	गा	ऽ
०				३				×				२			
नि़	सा	रे	सा	ध़	–	नि़	नि़	सा	–	सा	सा	रे	नि़	सा	–
उ	ठि	र	घु	बी	ऽ	र	वि	दा	ऽ	त	व	मा	ऽ	गा	ऽ
०				३				×				२			

राग दरबारी कानड़ा (ताल–त्रिताल)

दोहा

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥

रे – रे रे	– रे सा रे	ग॒ – – ग॒म	रे रे सा –
रा ऽ म रा	ऽ म क हि	रा ऽ ऽ मऽ	क हि ऽ ऽ
०	३	×	२

			नि़
नि़सा रे रे ध़	– ध़ नि़ नि़	सा – – –	सा – – –
राऽ ऽ म रा	ऽ म क हि	रा ऽ ऽ ऽ	म ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

	ग		
रे रे रे रे	रे रे सा रे	ग॒ ग॒ – म	रे रे सा –
त नु प रि	ह रि र घु	ब र ऽ बि	र हँ ऽ ऽ
०	३	×	२

नि़सा रे रे रे	ध़ ध़ नि़ नि़	सा – – –	रे नि़ सा –
राऽ ऽ उ ग	य उ सु र	धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ म ऽ
०	३	×	२

(कवितावली) राग वागेश्री (ताल त्रिताल)

स्थायी

पुरतें निकसी रघुवीर बधू, धरि धीर दए मगमें डग द्वै।

अन्तरा

झलकीं भरि भाल कनीं जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिरि बूझति हैं, चलनो अबकेतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जलच्वै॥

स्थायी

म	ग॒	रे	सा	नि॒	सा	ध	नि॒	सा	म	–	म	–	प	ग॒	रे
पु	र	तें	ऽ	नि	क	सी	ऽ	र	घु	ऽ	वी	ऽ	र	ब	धू
०				३				×				२			

म	म	ध	–	ध	ध	पध	नि॒	ध	ध	म	–	प	ध	ग	–
ध	रि	धी	ऽ	र	द	एऽ	ऽ	म	ग	में	ऽ	ड	ग	द्वै	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग॒	म	ध	नि॒	सां	सां	सां	सां	नि॒	नि॒	सां	रें	नि॒	सां	नि॒	ध
झ	ल	कीं	ऽ	भ	रि	भा	ऽ	ल	क	नीं	ऽ	ज	ल	की	ऽ
०				३				×				२			

ध	ध	ध	–	ध	ध	पध	नि॒	ध	ध	म	ग॒	म	ग॒	रे	सा
पु	ट	सू	ऽ	खि	ग	एऽ	ऽ	म	धु	रा	ऽ	ध	र	वै	ऽ
०				२				×				२			

(कवितावली) भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

पात भरी सहरी, सकल सुत बारे-बारे,
केवट की जाति कछू बेद न पढ़ाइहौं ।

अन्तरा

सब परिवारु मेरो याहि लागि राजा जू,
हौं दीन बित्तहीन, कैसे दूसरी गढ़ाइहौं ॥
गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरेगी मेरी,
प्रभु सों निषादु ह्वै कै बादु ना बढ़ाइहौं।
तुलसी के ईस राम, रावरे सों, साँची कहौं,
बिना पग धोएँ नाथ, नाव न चढ़ाइहौं ॥

स्थायी

रे रेग रेसा सा	सासा रेग सारे	ध़ प़ ध़ सा	सा सारे गरे रे
पा तऽ भऽ री	स ह रीऽ ऽऽ	स क ल सु	त वाऽ ऽऽ रे
×	०	×	०
रेग पध ग –	गप धसां प –	ग मग रेसा सा	सा सा सा –
वाऽ ऽऽ रे ऽ	वाऽ ऽऽ रे ऽ	पा तऽ भऽ री	स ह री ऽ
×	०	×	०
ग म प प	प प प ध	नि रेंसां ध प	म म गम पध
के व ट की	जा ति क छू	बे दऽ न प	ढ़ा इ हौंऽ ऽऽ
×	०	×	०

अन्तरा

ग म प प	प प प ध	नि सां निध पध	सां सां सां –
स व प रि	वा र मे रो	या हि लाऽ गिऽ	रा जा जू ऽ
×	०	×	०
निरें सांनि ध प	म म म म	पध ऩिध प मम	ग मग रेसा सारे
हौंऽ ऽऽ दी न	वि त्त ही न	कैऽ सेऽ दू सरी	ग ढ़ाऽ इऽ हौंऽ
×	०	×	०

(कवितावली) धुन (ताल कहरवा)

जिनको पुनीत वारि धारैं सिरपैं पुरारि,
त्रिपथगामिनी–जसु वेद कहैं गाइकैं।
जिनको जोगीन्द्र मुनिवृन्द देव देहभरि,
करत बिराग जप जोग मन लाइकैं॥
तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी,
गौतम सिधारे गृह गौनो-सो लेवाइकैं।
तेई पाय पाइ कैं चढ़ाई नाव धोए बिनु,
ख्वैहौं न पठावनि कै ह्वैहौं न हंसाईकैं॥

म	म	म	म	म	म	म	म	ग	मग	रे	गरे	सा	रेसा	सा	सा
जि	न	को	पु	नी	त	वा	रि	धा	रैऽ	सि	रऽ	पै	पुऽ	रा	रि
×				०				×				०			

रे	रे	ग़रे	सा	रे	ग़रे	सा	सा	ध़	सा	रे	ग़रे	ध़	सा	रेग	म
त्रि	प	थऽ	गा	मि	निऽ	ज	सु	वे	द	क	हैऽ	गा	इ	कैऽ	ऽ
×				०				×				०			

राग मिश्र खमाज (ताल त्रिताल)

स्थायी

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥

अन्तरा

सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥
सीय समीप ग्रामतिय जाही। पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं॥

स्थायी

ग म ध प	ग -रे सा सा	रे नि़ सा रे	ग - म -
को ऽ टि म	नो ऽऽ ज ल	जा ऽ व नि	हा ऽ रे ऽ
०	३	×	२
		म	
प ध पध (सां)	नि धप म प	ग ग रे सा	ध पध निधप
सुमु खिऽ ऽ	क हऽ हु को	आ ऽ हिं तु	म्हा ऽऽ रे ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

			म
ग म नि प	गग -रे सासा	नि़ प़ नि़ सा	ग - रेसा -
सु नि स ने	ऽऽ ऽह म य	मं ऽ जु ल	बा ऽ नीऽ ऽ
०	३	×	२
सा सां नि नि	-सां रेंसां नि	ध प (ध) प	ग म रेग सारे
स कु ची सि	ऽय मऽ न	म हुँ मु सु	का ऽ नीऽ ऽऽ
०	३	×	२
साग पम (नि) प	गग -रे सासा	रे नि़ सा रे	ग - म -
कोऽ ऽऽ टि म	नोऽ ऽज ऽ ल	जा ऽ व नि	हा ऽ रे ऽ
०	३	×	२

कवितावली भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

आगे सोहैं साँवरो कुँवर गोरो पाछे पाछे,
आछे मुनिबेष धरे लाजत अनंग हैं।

अन्तरा

बान बिसिषासन बसन बनही के कटि,
कसे हैं बनाइ, नीके राजत निषंग हैं॥
साथ निसिनाथमुखी पाथनाथ नन्दिनी सी,
तुलसी बिलौकें चित लाई लेत संग हैं।
आनंद उमंग मन, जोबन–उमंग तन,
रूप की उमंग उमगत अंग अंग हैं॥

स्थायी

ग ग रे गसा	धसा सा रेग म	ग गग रेम गरे	सारे गरे सानि सा
आ गे सो हैऽ	साँऽ व रोऽ ऽ	कुँ वर गोऽ रोऽ	पाऽ छेऽ पाऽ छे
×	०	×	०
प प मप धनि	धनि धप मग म	पध पम गरे सानि	सा रे सारे गम
आ छे मुऽ निऽ	बेऽ षऽ धऽ रे	लाऽ जऽ तऽ अऽ	नं ग हैंऽ ऽऽ
×	०	×	०

अन्तरा

म प नि नि	सां नि सां सां	नि सां रेंगं रेंसां	निध पम प प
वा न बि सि	षा स न व	स न बऽ नऽ	हीऽ केऽ क टि
×	०	×	०
प प मप धनि	धनि धप मग म	पध पम गरे सानि	सा रे सारे गम
क से हैंऽ बऽ	नाऽ इऽ नीऽ के	राऽ जऽ तऽ निऽ	षं ग हैंऽ ऽऽ
×	०	×	०

कवितावली भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

बनिता बनी स्यामल गौर के बीच,
बिलोकहु री सखि ! मोहि सी है ।

अन्तरा

मग जोगु न कोमल, क्यों चलिहै,
सकुचाति मही पद पंकज छ्वै ॥
तुलसी सुनि ग्रामवधू बिथकीं
पुलकीं तन, औ चले लोचन च्वै ।
सब भाँति मनोहर मोहन रूप,
अनूप हैं भूप के बालक द्वै ॥

स्थायी

– – नि़ सा	नि़सा रेग ग ग	ग – ग ग	रे ग सा सा
व नि	ताऽ ऽऽ ब नी	स्या ऽ म ल	गौ ऽ र के
×	०	×	०
रेग म म प	ग – ग ग	रे – ग म	ग – सा ध़
बीऽ ऽ च बि	लो ऽ क हु	री ऽ स खि	मो ऽ हि सी
×	०	×	०

अन्तरा

सा – ग म	प – प प	मप धनि ध प	म ग म पधप
है ऽ म ग	जा ऽ गु न	कोऽ ऽऽ म ल	क्यों ऽ च लिऽऽ
×	०	×	०
म – ग ग	ग – सा सा	रेग – म म	ग – रे सा
है ऽ स कु	चा ऽ ति म	हीऽ ऽ प द	पं ऽ क ज
×	०	×	०
सा – नि़ सा			
छ्वै ऽ ब नि			
×			

भजनी धुन (ताल कहरवा) (कवितावली)

स्थायी

रानी मैं जानी अजानि महा,
पवि-पाहनहू तें कठोर हियो है।

अन्तरा

राजहुँ काज अकाज न जान्यो,
कह्यो तियको जिन कान कियो है॥
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरें,
कैसे प्रीतम लोग जियो है॥
आँखिन में सखि राखिबे जोग,
इन्हें किमि कै बनवास दियो है॥

स्थायी

ग म प मं	प – धनि धप	ग म प म	प – – –
रा नि मैं जा	नीऽ ऽऽ ऽऽ	रा नी मैं जा	नीऽ ऽ ऽ
०	×	०	×
ग म प ध	नि सां नि सां	ध प ग म	पध निसां निसां
अ जा नि म	हा ऽ ऽ ऽ	रा नि मैं जा	नीऽ ऽऽ ऽ ऽ
०	×	०	
सां नि ध प	म ग रे सा	ग म प मं	प – प –
प बि पा ऽ	ह न हू तें	क ठो र हि	यो ऽ है ऽ
×	०	×	०

अन्तरा

सांरें सानि ध प	म – म म	ग म प ध	सां – सां –
राऽ जऽ हु ऽ	का ऽ ज अ	का ऽ ज न	जा ऽ न्यो ऽ
०	×	०	×
सां रें रें रें	रें सां रें गं	सां –नि प ध	निरें सांनि ध–म
क ह्यो ति य	को ऽ जि न	का ऽ न कि	योऽ ऽऽ है ऽऽ
०	×	०	×

राग गौड़ मल्हार (ताल त्रिताल)

स्थायी

देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥

अन्तरा

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे॥
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उद्बेगु न पावै कोई॥
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥

स्थायी

म ग रे गरे	सा रे सा सा	सा गरे ग म	म – म –
दे ऽ ख तऽ	ब न स र	सै ऽऽ ल सु	हा ऽ ए ऽ
०	३	×	२

म	प	सां प	
रे – प प	ध म पध निसां	सां ध नि॒ प	ग गप म ग
बा ऽ ल मी	ऽ कि आऽ ऽऽ	श्र म प्र भु	आ ऽऽ ए ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

सां ध नि॒ म	प ध नि नि	सां सां सां सां	सां रें सां –
दे ऽ खि पा	ऽ य मु नि	रा ऽ य तु	म्हा ऽ रे ऽ
०	३	×	२

		सां	
मं गं रें गंरें	सां रें सां –	सां ध नि॒ म	प ध नि सां
भ ए सु कृऽ	त स ब ऽ	सु फ ल ह	मा ऽ रे ऽ
०	३	×	२

राग खमाज (ताल त्रिताल द्रुतलय)

दोहा

पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥

								प				म			
सा	–	ग	ग	ग	म	रे	ग	म	प	–	प	नि॒	ध	प	म
पूँ	ऽ	छे	हु	मो	ऽ	हि	कि	र	हौं	ऽ	क	हँ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ग	म	प	–	प	प	पध	पध	(म)	–	–	–	गम	प	म	ग
मैं	ऽ	पूँ	ऽ	छ	त	सऽ	कुऽ	चा	ऽ	ऽ	ऽ	उँऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

म	ध	–	ध	ध	नि॒	प	ध	नि	सां	–	नि	सां	–	सां	सां
ज	हँ	ऽ	न	हो	ऽ	हु	ऽ	त	हँ	ऽ	दे	हु	ऽ	क	हि
×				२				०				३			

नि	नि	सां	नि	सां	सां	सां	सां	निसां	रेंसां	नि	ध	प	म	ग	–
तु	म्ह	हि	दे	खा	ऽ	वौं	ऽ	ठाऽ	ऽऽ	उँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

राग खमाज (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअ रस बोरी॥

अन्तरा

सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह कें हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

स्थायी

	सां	नि	
ग म प ध	नि ध म प	ध म ग सा	ग – म –
सु नि मु नि	ब च न प्रे	ऽ म र स	सा ऽ ने ऽ
२	०	३	×

ग ग सा ग	– ग म म	ग म प ध	(सां) – नि धप
स कु चि रा	ऽ म म न	म हुँ मु सु	का ऽ ने ऽऽ
२	०	३	×

म गरे सा ग	म प पं प	ग म प ध	पध निसां सां –
बा ऽऽ ल मी	ऽ कि हँ सि	क ह हिं ब	होऽ ऽऽ री ऽ
२	०	३	×

सां	मं		
सां गं गं मं	गं गं सां सां	नि नि सां रें	सां – निध पम
बा ऽ नी ऽ	म धु र अ	मि य र स	बो ऽ रीऽ ऽऽ
२	०	३	×

अन्तरा

ग	म	प	ध	–	नि॒	प	ध	नि	सां	सां	नि	सां	–	सां	–
सु	न	हु	रा	ऽ	म	अ	ब	क	ह	उँ	नि	के	ऽ	ता	ऽ
२				०				३				×			
नि	सां	–	रें	सां	नि॒	ध	प	म	म	प	ध	म	–	ग	–
ज	हाँ	ऽ	ब	स	हु	सि	य	ल	ख	न	स	मे	ऽ	ता	ऽ
२				०				३				×			
म	गरे	सा	ग	म	प	प	प	ग	म	प	ध	पध	निसां	सां	–
जि	न्हऽ	के	ऽ	श्र	व	न	स	मु	ऽ	द्र	स	माऽ	ऽऽ	ना	ऽ
२				०				३				×			
सां	गं	(मं)गं	मं	गं	गं	सां	सां	नि	नि	सां	रें	(सां)	–	नि॒ध	पम
क	था	ऽ	तु	म्हा	ऽ	रि	सु	भ	ग	स	रि	ना	ऽ	नाऽ	ऽऽ
२				०				३				×			

राग तिलंग (ताल त्रिताल)

दोहा

जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु ।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु ॥

म	ग	ग	सा	–	सा	ग	साग	म	म	प	प	प	–	–	–
ज	सु	तु	म्हा	ऽ	र	मा	ऽऽ	न	स	वि	म	ल	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ग	म	प	नि॒	पनि॒	पम	प	म	ग	म	ग	–	ग	–	–	–
हँ	ऽ	सि	नि	जीऽ	ऽऽ	हा	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	सु	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

ग	म	प	नि	नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	नि	सां	–	–	–
मु	क	ता	ऽ	ह	ल	गु	न	ग	न	चु	न	इ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

सां	–	नि॒	प	ग	म	नि॒	प	म	–	–	–	ग	–	–	–
रा	ऽ	म	ब	स	हु	हि	यँ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	सु	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				२			

ॐ

राग तिलंग (ताल त्रिताल)

स्थायी

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुवासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ॥

अन्तरा

सीस नवहिं सुर गुर द्विज देखी । प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥

स्थायी

प सां (सां) नि	प प म ग	ग सा ग म	म – गम पनि
प्र भु प्र सा	ऽ द सु चि	सु भ ग सु	बा ऽ साऽ ऽऽ
०	३	×	२

प म म पम	ग मग सा सा	ग म पनि पम	गम पम प ग
सा ऽ द रऽ	जा ऽऽ सु ल	ह इ निऽ तऽ	नाऽ ऽऽ सा ऽ
०	३	×	२

	ग		
पम ग सा सा	ऩि सा ग म	ग म प नि	सां सां सां –
तुऽ म्ह हि नि	बे ऽ दि त	भो ऽ ज न	क र हीं ऽ
०	३	×	२

नि सां रेंसां नि	प प म म	गम पनि प म	गम पनि सां –
प्र भु प्रऽ सा	ऽ द प ट	भूऽ ऽऽ ष न	धऽ रऽ हीं ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म	म	प	नि	सां	सां	सां	सां	प	नि	सां	गं	रें	सां	सां	सां
सी	ऽ	स	न	व	हिं	सु	र	गु	र	द्वि	ज	दे	ऽ	खी	ऽ
०				३				×				२			
सां	–	गं	मं	गं	–रें	सां	नि़	प	प	नि	सां	सां	रें	सां	–
प्री	ऽ	ति	स	हि	ऽत	क	रि	वि	न	य	बि	से	ऽ	षी	ऽ
०				३				×				२			
पम	ग	सा	सा	नि़	सा	ग	म	ग	म	प	नि	सां	–	सां	–
कऽ	र	नि	त	क	र	हिं	रा	ऽ	म	प	द	पू	ऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			
नि	–	सां	रेंसां	नि़	–	प	म	ग	म	प	म	गम	पनि	सां	–
रा	ऽ	म	भऽ	रो	ऽ	स	हृ	द	यँ	न	हिं	दूऽ	ऽऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			

राग रागेश्री (ताल त्रिताल)

दोहा

सबु करि माँगहिं एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह के मन मन्दिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ॥

ग	मग	रे	सा	|	सा	–	सा	सा	|	नि़	सा	ध़	नि़	|	सा	ग	साग	म
स	बुऽ	क	रि	|	माँ	ऽ	ग	हिं	|	ए	ऽ	कु	फ	|	ल	ऽ	ऽऽ	ऽ
०					३					×					२			

ग	–	म	ध	|	ध	म	ग	म	|	ग	–	–	–	|	साग	मग	रे	सा
रा	ऽ	म	च	|	र	न	र	ति	|	हो	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽऽ	ऽऽ	उ	ऽ
०					३					×					२			

अन्तरा

ग	म	ध	नि	|	सां	सां	सां	–	|	नि	सां	ध	नि़	|	ध	–	–	–
ति	न्ह	के	ऽ	|	म	न	मं	ऽ	|	दि	र	ब	स	|	हु	ऽ	ऽ	ऽ
०					३					×					२			

नि़	ध	म	म	|	ग	–	ग	म	|	गम	धनि	सां	–	|	म	ग	रे	सा
सि	य	र	घु	|	न	ऽ	न्द	न	|	दोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	|	उ	ऽ	ऽ	ऽ
०					३					×					२			

राग खम्बावती (ताल त्रिताल)

स्थायी

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥

अन्तरा

सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
तुम्हहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष ते बिष भारी॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम प्रानपियारे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥
अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥

स्थायी

म				ध											
रे	म	प	ध	सां	(सां)	नि॒	ध	प	–	म	मप	ग	ग	म	सा
का	ऽ	म	को	ऽ	ह	म	द	मा	ऽ	न	नऽ	मो	ऽ	हा	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	प	ध	प	ध	म	प	ग	म	सा
लो	ऽ	भ	न	छो	ऽ	भ	न	रा	ऽ	ग	न	द्रो	ऽ	हा	ऽ
०				३				×				२			
सा	नि़॒	ध़	प़	ध़	ध़	सा	सा	प	म	प	ग	म	ग	म	सा
जि	न्ह	के	ऽ	क	प	ट	दं	ऽ	भ	न	हिं	मा	ऽ	या	ऽ
०				३				×				२			
रे	म	प	ध	म	प	सां	नि	ध	पध	म	मप	ग	गम	म	सा
ति	न्ह	कें	ऽ	हृ	द	य	व	स	हुऽ	र	घुऽ	रा	ऽऽ	या	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	नि	नि	नि	सां	सां	गं	गं	मं	सां	नि	सां	रें नि॒	ध
स	ब	के	ऽ	प्रि	य	स	व	के	ऽ	हि	त	का	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

नि	नि ध	ध	पध	सां	नि॒	ध	प	प	प	ध	म	ग	ग	म	सा
दु	ख	सु	खऽ	स	रि	स	प्र	सं	ऽ	सा	ऽ	गा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

सां	नि॒	ध	प	ध	ध	सां	सां	प	म	प	ग	म	ग	म	सा
क	ह	हिं	स	ऽ	त्य	प्रि	य	ब	च	न	वि	चा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

रे	म	प	ध	म	प	सां	नि॒	ध	पध	म	मप	ग	गम	म	सा
जा	ऽ	ग	त	सो	ऽ	व	त	स	रऽ	न	तुऽ	म्हा	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

राग मिश्र गारा (ताल त्रिताल)

दोहा

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥

सारे ग रे सा	नि़ ध़ प़ ध़	प़ ध़ सा नि़	सा – सा रे
जाऽ ऽ हि न	चा ऽ हि अ	क ब हुँ क	छु ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

प़ ध़ सा सा	ध़ सा रे ग॒	रे – – –	ग॒रे सानि़ ध़नि़ सारे
तु म्ह स न	स ह ज स	ने ऽ ऽ ऽ	हुऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
×	२	०	३

अन्तरा

ग म प प	ग म रेग॒ रे	रे ग॒ सा रे	नि़ सा – –
ब स हु नि	रं ऽ तऽ र	ता ऽ सु म	न ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ध़सा रेग॒ रे सा	नि़ ध़ प़ ध़	सा – – –	ध़सा रेग॒ रे –
सोऽ ऽऽ रा ऽ	उ र नि ज	गे ऽ ऽ ऽ	हुऽ ऽऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

राग गारा (ताल त्रिताल)

स्थायी

एहि बिधि मुनिबर भवन दिखाए। बचन सप्रेम राम मन भाए॥
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक॥

अन्तरा

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू॥

स्थायी

ध़ नि़ सा नि़	सा सा सा सा	ध़ नि़ सा म	ग – रेग रे
ए हि वि धि	मु नि व र	भ व न दि	खा ऽ येऽ ऽ
०	३	×	२

सा नि़ ध़ प़	प़ – प़ ध़	– नि़ सा नि़	सा – सा –
व च न स	प्रे ऽ म रा	ऽ म म न	भा ऽ ए ऽ
०	३	×	२

	म		
ग म ग म	रे ग रे –सा	ध़ नि़ सा नि़	सा – सा सा
क ह मु नि	सु न हु ऽऽ	भा नु कु ल	ना ऽ य क
०	३	×	२

ध़ नि़ सा रे	ग म प ध	ग म ग म	रे ग रे रे
आ ऽ श्र म	क ह उँ स	म य सु ख	दा ऽ य क
०	३	×	२

अन्तरा

म प ध नि	– नि सां सां	निध नि धप ध	नि – सां –
चि ऽ त्र कू	ऽ ट गि रि	कऽ र हुऽ नि	वा ऽ सू ऽ
०	३	×	२

सां	नि॒	ध	प	–म	गम	रेग॒	रे	ग॒	रेसा	ध़	नि़	सा	–	सा	–
त	हँ	तु	म्हा	ऽर	सऽ	बऽ	ऽ	भाँ	ऽऽ	ति	सु	पा	ऽ	सू	ऽ
०				३				×				२			

ग	म	ग	म	रे	ग॒	रे	रे	ध़	नि़	सा	नि़	सा	–	सा	–
सै	ऽ	लु	सु	हा	ऽ	व	न	का	ऽ	न	न	चा	ऽ	रू	ऽ
०				३				×				२			

ध़	नि़	सा	रे	ग	म	प	ध	ग	म	ग	म	रे	ग॒	रे	–
क	रि	के	ऽ	ह	रि	मृ	ग	वि	ह	ग	वि	हा	ऽ	रू	ऽ
०				३				×				२			

राग छाया (त्रिताल द्रुतलय)

दोहा

लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥

नि	नि	नि	सां	–	सां	सां	–	नि	सां	नि	रें	सां	नि	ध	–
ल	ख	न	जा	ऽ	न	की	ऽ	स	हि	त	प्र	भु	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग	म	प	प	ध	ध	प	ध	सां	–	–	–	निरें	सांनि	ध	–
रा	ऽ	ज	त	रु	चि	र	नि	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

रें	–	रें	रें	रें	रें	रें	रें	गंरें	सां	रें	गं	सां	–	–	–
सो	ऽ	ह	म	द	नु	मु	नि	बेऽ	ऽ	ष	ज	नु	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग	म	प	प	ध	ध	प	ध	सां	–	निरें	सांनि	धसां	निध	म	–
र	ति	रि	तु	रा	ऽ	ज	स	मे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	ऽ
०				३				×				२			

राग मिश्र काफ़ी (ताल त्रिताल)

स्थायी

भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनु मारा॥

अन्तरा

कैकेई हरषित एहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती।
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता॥

स्थायी

															म भ
ग	ग	मध	पध	ग	म	ग॒	रे	रे	ग॒	सा	रे	प	–	प	–
र	त	दुऽ	खिऽ	त	ऽ	प	रि	वा	ऽ	रु	नि	हा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	ध	नि	सां	रें	नि॒	नि॒	ध	प	ध	म	प	–	प	म
मा	ऽ	न	हुँ	तु	हि	न	ब	न	ज	ब	नु	मा	ऽ	रा	म
०				३				×				२			

अन्तरा

म	–	म	प	नि	नि	सां	सां	सांरें	ग॒ं	रें	सां	रें	नि	सां	–
कै	ऽ	के	ई	ह	र	षि	त	एऽ	ऽ	हि	ऽ	भाँ	ऽ	ती	ऽ
०				३				×				२			
प	^मरें	सां	रें	नि	नि	सां	सां	प	ध	प	नि॒	ध	प	ग	म
म	न	हुं	मु	दि	त	द	व	ला	ऽ	इ	कि	रा	ऽ	ती	ऽ
०				३				×				२			

राग मिश्र मांड (ताल कहरवा)

स्थायी

तात बात मैं सकल सँवारी। भै मंथरा सहाय विचारी।
कछुक काज विधि बीच विगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ॥

अन्तरा

सुनत भरतु भए बिबस विषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा।
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल व्याकुल भारी॥

स्थायी

सां	-	ध	नि	-	प	ध	म	ग	म	प	ध	सां	-	ध	पध
ता	ऽ	त	वा	ऽ	त	मैं	ऽ	स	क	ल	सँ	वा	ऽ	री	ऽऽ
×				०				×				०			

रें	सां	नि	ध	प	ध	म	ग	रे	सा	रे	ग	सा	-	सा	-
भै	ऽ	ऽ	मं	ऽ	थ	रा	ऽ	स	हा	य	वि	चा	ऽ	री	ऽ
×				०				×				०			

सा	रे	म	प	-	प	ध	म	प	-	ध	ध	सां	-	सां	सां
क	छु	क	का	ऽ	ज	वि	धि	बी	ऽ	च	वि	गा	ऽ	रे	उ
×				०				×				०			

नि	सां	नि	रेंसां	ध	ध	म	म	ग	सा	रे	ग	सा	-	रेम	पध
भू	ऽ	प	तिऽ	सु	र	प	ति	पु	र	प	गु	धा	ऽ	रेऽ	उऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

प	ध	म	म	प	प	प	प	प	ध	नि	सां	ध	-	प	-
सु	न	त	भ	र	तु	भ	ए	वि	ब	स	वि	षा	ऽ	दा	ऽ
×				०				×				०			

ध	सां	रें	गं	सां	सां	सां	सां	नि	सां	ध	पध	सां	–	सां	–
ज	नु	स	ह	मे	उ	क	रि	के	ऽ	ह	रिऽ	ना	ऽ	दा	ऽ
×				०				×				०			

गं	–	सां	रें	–	नि	सां	ध	म	–	प	ध	सां	–	सां	ऽ
ता	ऽ	त	ता	ऽ	त	हा	ऽ	ता	ऽ	त	पु	का	ऽ	री	ऽ
×				०				×				०			

रें	सां	–नि	पध	निध	प	म	म	ग	म	प	ध	सां	–	ध	पध
प	रे	ऽऽ	भूऽ	ऽऽ	मि	त	ल	ब्या	ऽ	कु	ल	भा	ऽ	री	ऽऽ
×				०				×				०			

राग गुर्जरी तोड़ी (ताल त्रिताल)

दोहा

भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥
हंस बंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाई ।
जननी तूं जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ ॥

रे	रे	रे	ग	रे	रे	सा	सा	ऩि	सा	नि	ध़	ऩि	सा	रे	ग
भ	र	त	हि	वि	स	रे	उ	पि	तु	म	र	न	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

रे	रे	ग	मं	–	ग	रे	ग	रे	–	–	–	सा	–	–	–
सु	न	त	रा	ऽ	म	ब	न	गौं	ऽ	ऽ	ऽ	नु	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

मं	–	ग	ग	मं	मं	ध	ध	सां	–	नि	रें	सां	–	–	–
हे	ऽ	तु	अ	प	न	प	उ	जा	ऽ	नि	जि	यं	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

रें	रें	रें	गं	रें	–	सां	सां	निसां	रेंसा	ध	–	–	–	मंध	निध
थ	कि	त	र	हे	ऽ	ध	रि	मौऽ	ऽऽ	नु	ऽ	ऽ	ऽ	मौऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

ग	–	–	–	रे	ग	रे	सा
नु	ऽ	ऽ	ऽ	मौ	ऽ	नु	ऽ
×				२			

राग कलिंगड़ा (ताल कहरवा)

स्थायी

नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा। परम बिचित्र बिमानु बनावा॥

अन्तरा

सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना॥
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए।
बैठक राजसभाँ सब जाई। पठए बोलि भरत दोउ भाई॥

स्थायी

प	प	प	प	मप	ध॒	प	म	ग	ग	ग	रे॒	ग	म	गम	प
नृ	प	त	नु	बेऽ	ऽ	द	बि	दि	त	अ	न्ह	वा	ऽ	वाऽ	ऽ
×				०				×				०			

म	प	म	ग	रे॒	–	रे॒	रे॒	सा	नि़	सा	रे॒	सा	–	सा	–
प	र	म	बि	चि	ऽ	त्र	बि	मा	ऽ	न	व	ना	ऽ	वा	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

ग	ग	म	ध	प	प	प	प	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	पध॒	निध॒	प	–
सो	ऽ	धि	सु	मृ	ति	स	ब	बे	ऽ	द	पु	राऽ	ऽऽ	ना	ऽ
×				०				×				०			

ध॒	सां	नि	ध॒	प	प	म	म	ग	म	प	ध॒	प	–	गम	पध॒
की	ऽ	न्ह	भ	र	त	द	स	गा	ऽ	त	बि	धा	ऽ	नाऽ	ऽऽ
×				०				×				०			

राग रागेश्री (ताल एकताल)

दोहा—स्थायी

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥

अन्तरा

कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु॥

स्थायी

प	प	प	ध	म	गरे	ग	रे	सा	सा	सा	रे
सु	न	हु	भ	र	तऽ	भा	ऽ	वी	प्र	ब	ल
×		०		२		०		३		४	

पम	ध	प	नि	सां	रें	रें	नि	ध	पम	धम	गरे
बिऽ	ल	खि	क	हे	उ	मु	नि	ना	ऽऽ	ऽऽ	थऽ
×		०		२		०		३		४	

(हानि लाभ जीवन मरण ... ऊपर के समान)

अन्तरा

म	प	प	(सां)नि	नि	नि	सां	सां	सां	रें	(गं)रें	सां
क	ह	हु	ता	ऽ	त	के	ऽ	हि	भाँ	ऽ	ति
×		०		२		०		३		४	

रें	गं	रें	गं	रें	सां	नि	सां	रें	रें	नि	ध
को	ऽ	उ	क	रि	हि	ब	ड़ा	इ	ता	ऽ	सु
×		०		२		०		३		४	

मं	प	ध	मं	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा	सा
रा	ऽ	म	ल	ख	न	तु	म्ह	स	त्रु	ह	न
×		०		२		०		३		४	

सा	सा	सा	रे	रे	रे	रे	रे	प	पमं	धमं	गरे
स	रि	स	सु	अ	न	सु	चि	ऽ	जाऽ	ऽऽ	सुऽ
×		०		२		०		३		४	

राग देस (ताल त्रिताल)

स्थायी

सब प्रकार भूपति बड़ भागी। बादि बिषादु करिअ तेहि लागी॥

अन्तरा

यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राज रजायसु करहू॥

स्थायी

प	ध	म	ग	रे	ग	सा	–	रे	रे	म	प	नि	–	सां	–
स	ब	प्र	का	ऽ	र	भू	ऽ	प	ति	ब	ड़	भा	ऽ	गी	ऽ
०				३				×				२			
नि	–	सां	सां	रें	गं	रें	सां	नि	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	प
बा	ऽ	दि	बि	षा	ऽ	दु	क	रि	अ	ते	हि	ला	ऽ	गी	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–
य	हु	सु	नि	स	मु	झि	सो	ऽ	चु	प	रि	ह	र	हू	ऽ
०				३				×				२			
रें	गं	रें	मं	गं	रें	सां	नि	नि	–	सां	रें	सां	नि॒	ध	प
सि	र	ध	रि	रा	ऽ	ज	र	जा	ऽ	य	सु	क	र	हू	ऽ
०				३				×				२			

भजनी धुन (ताल कहरवा)

दोहा

आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ॥

ग	-	ग	ग	ग	-	ग	ग	रे	-	-	ग	रे	सा	सा	रे
आ	ऽ	प	नि	दा	ऽ	रु	न	दी	ऽ	ऽ	न	ता	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
रे	म	म	ग	रे	रे	रे	ग	सा	-	-	-	ऩि	सा	ऩि	सा
क	ह	उँ	स	ब	हिं	सि	रु	ना	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
				रे	म	म									
ग	-	ग	-	ग	ग	ग	ग	रे	-	रे	ग	सा	-	-	रे
दे	ऽ	खें	ऽ	वि	नु	र	घु	ना	ऽ	थ	प	द	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
रेग	मग	ग	-	रे	रे	रे	ग	सा	-	-	-	सा	-	-	-
जिऽ	यऽ	कै	ऽ	ज	र	नि	न	जा	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

राग तिलक कामोद (ताल त्रिताल)

स्थायी

नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना॥

अन्तरा

सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी॥
राम दरस बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी॥
सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा॥
चले भरतु जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघुं भाई॥

स्थायी

रे म प सां	- सां प प	नि॒ ध म म	(प)ग - सा -
न ग र लो	ऽ ग स ब	स जि स जि	जा ऽ ना ऽ
०	३	×	२

प़ - नि़ सा	रे ग सा सा	रेम पध प ध	म ग सा -
चि ऽ त्र कू	ऽ ट क हँ	कीऽ ऽऽ न्ह प	या ऽ ना ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म प नि -	नि नि नि नि	सां - सां नि	सां सां सां सां
सि बि का ऽ	सु भ ग न	जा ऽ हिं ब	खा ऽ नी ऽ
०	३	×	२

प नि सां रें	रें रें रें रें	रें सां रें गं	सां - सां -
च ढ़ि च ढ़ि	च ल त भ	ई ऽ स ब	रा ऽ नी ऽ
०	२	×	२

सां - प प | नि॒ ध म ग | ग सा रे म | ग - सा -
रा ऽ म द | र स ब स | स ब न र | ना ऽ री ऽ
० | २ | × | २

नि़ प़ नि़ सा | रे रे रे (रे) | ग रे ग पम | ग - सा -
ज नु क रि | क रि नि च | ले ऽ त किऽ | बा ऽ री ऽ
० | २ | × | २

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं ॥

अन्तरा

उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥

स्थायी

म	ग	रे	सा	-	सा	सा	सा	ध़	सा	रे	सा	रे	-	रे	-
पा	ऽ	हि	ना	ऽ	थ	क	हि	पा	ऽ	हि	गो	सां	ऽ	ईं	ऽ
×				२				०				३			

म	ग	रे	सा	सा	सा	-	ध़	सा	सा	रेग	रेसा	सा	-	सा	-
भू	ऽ	त	ल	प	रे	ऽ	ल	कु	ट	कीऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ईं	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

म	म	-	म	-	म	म	म	पध	निध	प	म	ग	रे	रे	-
उ	ठे	ऽ	रा	ऽ	मु	सु	नि	प्रेऽ	ऽऽ	म	अ	धी	ऽ	रा	ऽ
×				२				०				३			

ग	प	ग	म	रे	ग	-	सा	रेग	रेसा	ध़	सा	रे	-	रे	-
क	हुँ	प	ट	क	हुँ	ऽ	नि	षंऽ	गऽ	ध	नु	ती	ऽ	रा	ऽ
×				२				०				३			

राग पूर्वी (ताल त्रिताल)

दोहा

बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥
महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ।
पावन आश्रमु गवनु किय भरत लखन रघुनाथ॥

दोहा

रें॒	नि	ध	प	प	प	–	प	प	ध॒	प	म॑	ग	म	ग	–
व	र	व	स	लि	ए	ऽ	उ	ठा	ऽ	इ	उ	र	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

रे॒	–	ग	–	म॑	ध॒	म॑	ग	ग	–	–	ग	म॑	ग	रे॒	सा
ला	ऽ	ये	ऽ	कृ	पा	ऽ	नि	धा	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म॑	म॑	ध॒	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	नि	रें॒	सां	–	–	–
भ	र	त	रा	ऽ	म	की	ऽ	मि	ल	नि	ल	खि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

नि़	रे॒	(ग) ग	म॑	ध॒	नि	रें॒	नि	ध॒	प	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा
बि	स	रे	ऽ	स	ब	हिं	अ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
०				३				×				२			

देहाती धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी॥
तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥

अन्तरा

नतरु जाहिं वन तीनिउ भाई। बहुरिअ सीय सहित रघुराई॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुना सागर कीजिअ सोई॥

स्थायी

रे – सा रे	– सा सा सा	रेग मग रेग रेसा	सा – सा –
दे ऽ व ए	ऽ क वि न	तीऽ ऽऽ सुऽ निऽ	मो ऽ री ऽ
×	०	×	०
रे रे सा रे	– सा सा सा	रेग॒ रेग रे सा	सा – सा –
उ चि त हो	ऽ इ त स	कऽ रऽ ब ब	हो ऽ री ऽ
×	०	×	०
म म म म	म – म पध	नि॒ध प म॑ ग	रे – रेग सारे
ति ल क स	मा ऽ जु साऽ	ऽऽ जि स बु	आऽ नाऽ ऽऽ
×	०	×	०
रे रे रे रे	रे सा रेसा	रेग मग रे सा	सा – सा –
क रि अ सु	फ ल प्र भु	जौंऽ ऽऽ म नु	मा ऽ ना ऽ
×	२	×	३

अन्तरा

ध ध ध ध	– ध ध ध	पध नि॒ध प म	म – गम प
न त रु जा	ऽ हिं व न	तीऽ ऽऽ नि उ	भा ऽ ईऽ ऽ
×	०	×	०
ध ध ध ध	ध – ध ध	प ध प म	म – म –
ब हु रि य	सी ऽ य स	हि त र घु	रा ऽ ई ऽ
×	०	×	०

तिलक समाजु की तरह – जेहि बिधि प्रभु

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्थायी

जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती।

अन्तरा

तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥
सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई॥

स्थायी

ग

प	-	रे	ग	रे	-	रे	रे	सा	सा	प़	ध़	सा	-	रे	सारे
जा	ऽ	न	हु	ता	ऽ	त	त	र	नि	कु	ल	री	ऽ	ती	ऽऽ
×				०				×				०			

सा	प	प	प	-	ध	प	प	ग	रे	गध	प	रे	-	सा	-
स	ऽ	त्य	स	ऽ	न्ध	पि	तु	की	ऽ	रऽ	ति	प्री	ऽ	ती	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

ग	प	ध	नि	ध	ध	प	प	ध	-	ग	प	सां	सां	सां	-
तु	म्ह	हि	बि	दि	त	स	ब	ही	ऽ	क	र	क	र	मू	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	प	ध	प	-	प	प	ग	रे	गध	प	रे	रे	सा	रे
आ	ऽ	प	न	मो	ऽ	र	प	र	म	हिऽ	त	ध	र	मू	ऽ
×				०				×				०			

राग पट बिहाग (ताल त्रिताल)

स्थायी

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।

अन्तरा

भेंटि भरतु रघुबर समुझाए। पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए॥
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई। चले सीस धरि राम रजाई॥

स्थायी

							सां								
ग	म	प	नि	सां	नि	–	ध	प	म	प	म	ग	–	रे	सा
प्र	भु	क	रि	कृ	पा	ऽ	पाँ	ऽ	व	री	ऽ	दी	ऽ	न्हीं	ऽ
३				×				२				०			

					सा			प	प						
नि़	नि़	सा	सा	सां	नि	ध	प	म	म	प	म	ग	–	रे	सा
सा	ऽ	द	र	भ	र	त	सी	ऽ	स	ध	रि	ली	ऽ	न्ही	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

ग	म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	गं	गं	मं	गं	गं	रें	सां
भें	ऽ	टि	भ	र	तु	पु	नि	र	घु	ब	र	स	मु	झा	ए
३				×				२				०			

						प									
रें	सां	नि	ध	प	प	म	म	नि	ध	प	म	ग	–	रे	सा
पु	नि	रि	पु	द	व	नु	ह	र	षि	हि	यँ	ला	ऽ	ए	ऽ
३				×				२				०			

राग भैरवी (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि॥

अन्तरा

नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति।
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति॥

स्थायी

रे	सा	ध	नि	सा	–	सा	नि	सा	रे	ग	रे	ग	–	–	–
सु	नि	सि	ख	पा	ऽ	इ	अ	सी	ऽ	स	व	ड़ि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
ग	प	म	ग	–	रे	सा	नि	सा	–	–	–	निसा	गम	पध	पम
ग	न	क	बो	ऽ	लि	दि	नु	सा	ऽ	ऽ	ऽ	धिऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०				३				×				२			
रे	सा	ध	नि	सा	सा	सा	नि	सा	रे	ग	रे	ग	–	–	–
सिं	ऽ	घा	ऽ	स	न	प्र	भु	पा	ऽ	ऽ	दु	का	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
ग	प	म	–	ग	–रे	सा	रे	सा	–	–	–	सा	–	–	–
बै	ऽ	ठा	ऽ	रे	ऽऽ	नि	रु	पा	ऽ	ऽ	ऽ	धि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	प	प	प	प	प	प	प	–	–	ध	म	–	ग	म
नि	त	पू	ऽ	ज	त	प्र	भु	पाँ	ऽ	ऽ	व	री	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग॒	–	ग॒	ग॒	म	म	म	म	ग॒म	प	मप	मग॒	सा	–	–	–
प्री	ऽ	ति	न	हृ	द	यँ	स	माऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग॒	–	सा	रे	–	रे	नि॒	–	सा	नि॒	सा	रे॒	सा	–	–	–
मा	ऽ	गि	मा	ऽ	गि	आ	ऽ	य	सु	क	र	त	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ग॒	–	प	म	–	ग॒	सा	रे॒	सा	–	–	–	^म^ग॒	–	सारे	–
रा	ऽ	ज	का	ऽ	ज	व	हु	भाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ऽऽ	ऽ
०				३				×				२			

अरण्य–काण्ड

राग यमन-कल्याण (ताल त्रिताल)

स्थायी

रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किए श्रुति सुधा समाना॥

अन्तरा

बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहिं मोहि जाना॥
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ। सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर चलि आए॥

स्थायी

ग	ध	प	मं	रेग	मग	रे	ऩिसा	रेसा	सा	ऩि	ध़	ऩिरे	–	रेग	–
र	घु	प	ति	चिऽ	ऽऽ	त्र	कूऽ	ऽऽ	ट	ब	सि	नाऽ	ऽ	नाऽ	ऽ
×				२				०				३			
मं	मं	ध	ध	नि	–	नि	नि	मं	धनि	सां	सां	निध	नि	(प)	मंग
च	रि	त	कि	ये	ऽ	श्रु	ति	सु	धाऽ	ऽ	स	माऽ	ऽ	ना	ऽऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

ग	ग	मं	ध	नि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	धनि	रें	सां	–
ब	हु	रि	रा	ऽ	म	अ	स	म	न	अ	नु	माऽ	ऽ	ना	ऽ
×				२				०				३			
नि	रें	गं	रें	निसांरें	निसां	सां	सां	सां	नि	ध	नि	सां	–	निध	–
हो	ऽ	इ	हि	भीऽऽ	ऽऽ	र	स	ब	हिं	मो	हि	जा	ऽ	नाऽ	ऽ
×				२				०				३			
		रें										रे			
प	प	धनि	सां	निध	नि	प	प	ग	रे	गध	प	रेग	मग	सा	–
अ	त्रि	केऽ	ऽ	आऽ	ऽ	श्र	म	ज	ब	प्रऽ	भु	गऽ	यऽ	ऊ	ऽ
×				२				३				०			

नि	रे	ग	म॑	ध	नि	नि	नि	म॑	म॑	धनि	सां	निध	नि	प	म॑ग
सु	न	त	म	हा	ऽ	मु	नि	ह	र	षिऽ	त	भऽ	य	ऊ	ऽ
×				२				०				३			

स्तुति (ताल दादरा)

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥ १ ॥
निकाम श्याम सुंदरं । भवांबुनाथ मंदरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥ २ ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥ ३ ॥
दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥ ४ ॥
मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥ ५ ॥
नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥ ६ ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥ ७ ॥
विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥ ८ ॥
तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥ ९ ॥
भजामि भाव वल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥ १० ॥
अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥ ११ ॥
पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥ १२ ॥

											सा न
ग	–	रे	ग	–	रे	ग	–	म	ग	–	ग
मा	ऽ	मि	भ	ऽ	क्त	व	ऽ	त्स	लं	ऽ	कृ
×			०			×			०		

म	–	म	म	–	ग	रेग	–	म	ग	–	ग
पा	ऽ	लु	शी	ऽ	ल	कोऽ	ऽ	म	लं	ऽ	भ
×			०			×			०		

प	–	मं	प	–	मं	प	–	मं	धप	–	रे
जा	ऽ	मि	ते	ऽ	प	दां	ऽ	बु	जंऽ	ऽ	अ
×			०			×			०		

ग	–	रे	ग	–	रे	ग	–	प	मग	रेसा	रे
का	ऽ	मि	नां	ऽ	स्व	धा	ऽ	म	दंऽ	ऽऽ	न
×			०			×			०		

भजनी धुन (ताल कहरवा)

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥

दोहा

															ग
															वि
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	रे	म	ग	–	–	–	ग	म
न	ति	क	रि	मु	नि	ना	ऽ	इ	सि	रु	ऽ	ऽ	ऽ	क	ह
×				०				×				०			
प	प	प	–	प	रे	रे	ग	मध	पध	म	ग	–	सा	रे	ग
क	र	जो	ऽ	रि	ब	हो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	च
×				०				×				०			
ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	ग	–	रे	म	ग	–	–	ग	म
र	न	स	रो	ऽ	रु	ह	ना	ऽ	थ	ज	नि	ऽ	ऽ	क	ब
×				०				×				०			
प	प	प	–	प	रे	रे	ग	मध	पध	म	ग	–	–	–	सा
हुँ	त	जै	ऽ	म	ति	मो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वि
×				०				×				०			

राग मिश्र पीलू (ताल कहरवा)

स्थायी

अनसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥
रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई। आसिष देइ निकट बैठाई॥

अन्तरा

दिव्य बसन भूषन पहिराए। जेनित नूतन अमल सुहाए॥
कह रिषिवधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म बहु ब्याज बखानी॥
मातु पिता भ्राता हितकारी। मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्त्ता बयदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखि अहिं चारी॥
वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसेहु पतिकर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकई धर्म एक व्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा॥

स्थायी

ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	सा	रेप	मप	ग॒	ग॒	सा	नि़	सा	-	सा	-
अ	न	सु	इ	या	ऽ	केऽ	ऽऽ	प	द	ग	हि	सी	ऽ	ता	ऽ
×				०				×				०			

ग॒	ग॒	-	ग॒	ग॒	-	सा	प	ग॒	-रे	सा	नि़	(ग॒)सा	-	सा	-
मि	ली	ऽ	ब	हो	ऽ	रि	सु	सी	ऽऽ	ल	बि	नी	ऽ	ता	ऽ
×				०				×				०			

ग	ग	ग	ग	मग	रेसा	सा	सा	सारे	गम	म	म	म	-	म	-
रि	षि	प	ति	नीऽ	ऽऽ	म	न	सुऽ	खऽ	अ	धि	काऽ	ई	ऽ	
×				०				×				०			

रे	-	म	म	प	-	ध॒	प	ग	-रे	सा	नि़	(ग॒)सा	-	सा	-
आ	ऽ	सि	ष	दे	ऽ	इ	नि	क	ऽट	बै	ऽ	ठा	ऽ	ई	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

ग	–	ग	ग	ग	म	ग	म	सारे	गम	ग	म	रे	म	ग॒	रे
दि	ऽ	व्य	व	स	न	भू	ऽ	षऽ	नऽ	प	हि	रा	ऽ	ए	ऽ
×				०				×				०			

प	–	प	धप	म	–	म	पम	ग	ग	सा	सा	(रे)	–	रे	–
जे	ऽ	नि	तऽ	नू	ऽ	त	नऽ	अ	म	ल	सु	हा	ऽ	ए	ऽ
×				०				×				०			

म	प	नि	नि	नि	नि	–	नि	नि	नि	सां	मंगं	रेंसां	–	सां	–
क	ह	रि	षि	ब	धू	ऽ	स	र	स	मृ	दुऽ	वाऽ	ऽ	नी	ऽ
×				०				×				०			

सां	प	प	प	म	म	ध॒	प	ग॒	–रे	सा	नि़	(सां)	–	सा	–
ना	ऽ	रि	ध	र	म	ब	हु	व्याऽ		ज	ब	खा	ऽ	नी	ऽ
×				०				×				०			

राग मालश्री (ताल त्रिताल)

स्थायी

है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचवटी तेहि नाऊँ॥

अन्तरा

दंडक वन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू॥

स्थायी

पध	पप	पग	ग	प	ग	ग	पग	ग	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
हैऽ	ऽऽ	प्रऽ	भु	प	र	म	मऽ	नो	ऽ	ह	र	ठा	ऽ	ऊँ	ऽ
×				२				०				३			

		प	प	सा								सा			
सा	–	ग	ग	प	–	प	प	सां	प	ग	प	ग	–	सा	–
पा	ऽ	व	न	पं	ऽ	च	व	टी	ऽ	ते	हि	ना	ऽ	ऊँ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	गं	गं	सां	–
दं	ऽ	ड	क	व	न	पु	नी	ऽ	त	प्र	भु	क	र	हू	ऽ
×				२				०				३			

प								प	प			सा			
सां	सां	सां	सां	–	सां	प	प	ग	ग	ग	प	ग	ग	सा	–
उ	ऽ	ग्र	सा	ऽ	प	मु	नि	ब	र	क	र	ह	र	हू	ऽ
×				२				०				३			

राग दुर्गा (ताल त्रिताल)

स्थायी

एहि बिधि गए कछुक दिन बीती। कहत बिराग ग्यान गुन नीती॥

अन्तरा

सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥
पंचवटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा॥
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। यह सँजोग बिधि रचा बिचारी॥
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥

स्थायी

ध	सां	धसां	रेंसां	ध	म	-	प	ध	म	रे	सा	रेम	पध	मप	धसां
ए	हि	विऽ	धिऽ	ग	ए	ऽ	क	छु	क	दि	न	वीऽ	ऽऽ	तीऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

धप	म	प	ध	म	रे	सा	ध़	ध़	सा	रे	सा	मरे	पम	धप	सांध
कऽ	ह	त	बि	रा	ऽ	ग	ग्या	ऽ	न	गु	न	नीऽ	ऽऽ	तीऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

												सां			
म	-	प	ध	सां	-	सां	-	ध	सां	रें	सां	ध	ध	म	-
सू	ऽ	प	न	खा	ऽ	रा	ऽ	व	न	कै	ऽ	ब	हि	नी	ऽ
३				×				२				०			

ध	सां	रें	मं	रेंमं	रेंसां	रेंध	सां	ध	सां	रें	सां	धसां	धप	म	-
दु	ऽ	ष्ट	हृ	दऽ	यऽ	दाऽ	ऽ	रु	न	ज	स	अऽ	हिऽ		नी
३				×				२				०			

प	–	प	प	प	म	प	ध	म	म	रे	सा	ध	–	सा	–
पं	ऽ	च	व	टी	ऽ	सो	ऽ	ग	इ	ए	क	बा	ऽ	रा	–
३				×				२				०			

धसा	रेसा	रे	म	रे	म	प	ध	पध	सां	रेंसां	ध	मप	ध	पध	सां
देऽ	ऽऽ	खि	वि	क	ल	भ	इ	जुऽ	ग	लऽ	कु	माऽ	ऽ	राऽ	ऽ
३				×				२				०			

राग दुर्गा (ताल त्रिताल द्रुतलय)

दोहा

लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि ।
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि ॥

सां	सां	ध	ध	म	म	रे	सारे	प	प	प	–	मप	धसां	धसां	रें
ल	छि	म	न	अ	ति	ला	ऽऽ	घ	वँ	सो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
०				३				×				२			

सा	–	रे	म	–	म	प	ध	सां	–	–	–	धसां	धप	म	–
ना	ऽ	क	का	ऽ	न	बि	नु	की	ऽ	ऽ	ऽ	न्हिऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	–	प	ध	सां	सां	सां	–	ध	सां	रें	सां	ध	–	म	–
ता	ऽ	के	ऽ	क	र	रा	ऽ	व	न	ऽ	क	हँ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

ध	ध	–	सां	ध	म	सा	रे	प	–	–	–	मप	ध	–	–
म	नौ	ऽ	चु	नौ	ऽ	ती	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ	न्हिऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग देस (ताल त्रिताल)

स्थायी

धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा॥

अन्तरा

बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी॥
करसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहिं तव सिर पर आराती॥

स्थायी

म म रे म	प नि सां सां	निसां रें नि नि	ध धप ध म
धु आँ ऽ दे	ऽ खि ख र	दू ऽ ऽ ष न	के ऽऽ रा ऽ
×	२	०	३

(म) रे रे प मप–	मप (ध) ध म –	म रे ग नि़	(ग) सा – सा –
जा ऽ इ सुऽ	पऽ न खाँ ऽ	रा ऽ व न	प्रे ऽ रा ऽ
×	२	०	३

अन्तरा

नि ध (प) म प	नि नि नि सां	– नि सां नि	सां – सां –
बो ऽ ली ऽ	ब च न क्रो	ऽ ध क रि	भा ऽ री ऽ
×	२	०	३

रें – रें नि	– नि ध प	मप ध म म	गरे ग नि़ सा
दे ऽ स को	ऽ स कै ऽ	सुऽ र ति वि	साऽ ऽ री ऽ
×	२	०	३

राग हमीर (ताल त्रिताल)

दोहा

सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति।
गयउ भवन अति सोचबस नीद परइ नहिं राति॥

				प				नि							
सां	नि	ध	प	मं	प	ग	म	ध	—	—	नि	धनि	सांरें	नि	सां
सू	ऽ	प	न	ख	हि	स	मु	झा	ऽ	ऽ	इ	कऽ	रिऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

सां		सां													
नि	सां	ध	प	मं	प	ग	म	ध	—	—	—	प	—	—	—
ब	ल	बो	ऽ	ले	सि	ब	हु	भाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

								प							
प	प	प	मं	ध	ध	प	प	ग	—	म	रे	सा	रे	सा	—
ग	य	उ	भ	व	न	अ	ति	सो	ऽ	च	ब	स	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

प															
मं	प	ध	मं	प	प	ग	म	ध	—	—	नि	धनि	सांरें	नि	सां
नीं	ऽ	द	प	र	इ	न	हिं	रा	ऽ	ऽ	ऽ	तिऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग छायानट (ताल त्रिताल)

स्थायी

खर दूषन मोहि सम बलवन्ता। तिन्हहि को मारइ बिनु भगवन्ता॥

अन्तरा

सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं-भगवन्त लीन्ह अवतारा॥
तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ॥
होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा॥

स्थायी

सां	नि॒	ध	प	प	प	प	प	रे	ग	मध	पध	म	ग	रे	सा
ख	र	दू	ऽ	ष	न	मो	हि	स	म	बऽ	लऽ	व	ऽ	न्ता	ऽ
०				३				×				२			

प़	प़	रे	रे	रे	–	रेग	मप	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	–
ति	न्ह	हि	को	मा	ऽ	रऽ	इऽ	वि	नु	भ	ग	व	ऽ	न्ता	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	गं	मं	पं	मंगं	मं	रें	सां	–
सु	र	रं	ऽ	ज	न	भं	ऽ	ज	न	म	हिऽ	भा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

प	प	रें	रेंसां	ध	–	नि॒	प	रे	ग	मध	प	म	ग	रे	सा
जौं	ऽ	भ	गऽ	व	ऽ	न्त	ली	ऽ	न्ह	अऽ	व	ता	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

देहाती धुन—(ताल जल्द कहरवा)

स्थायी

तेहि वन निकट दसानन गयऊ। तव मारीच कपटमृग भयऊ॥
अति विचित्र कछु बरनि न जाई। कनक देह मनि रचित बनाई॥

अन्तरा

सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सुमनोहर वेषा॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला। एहि मृग कर अति सुंदर छाला॥
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही॥
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर सर साँधा॥
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई। फिरत बिपिन निसिचर वहु भाई॥
सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय बिचारी॥
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी॥
प्रगटत दुरत करत छल भूरी। एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी॥
तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥
लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा। पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा॥
आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥
मरम वचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥
बन दिसि देव सौंपा सब काहू। चले जहाँ रावन ससि राहू॥
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें वेषा॥

स्थायी

सा	रे	रे	रे	रे	रे	रे	सा	सा	रे	रे	म	रेम	गरे	सा	ऩि
ते	हिं	व	न	नि	क	ट	द	सा	ऽ	न	न	गऽ	यऽ	ऊ	ऽ
×				०				×				०			

सा	ग	रे	–	सा	ऩि	प़	ध़	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	–
त	व	मा	ऽ	री	ऽ	च	क	प	ट	मृ	ग	भ	य	ऊ	ऽ
×				०				×				०			

सा रे रे रे	- रे रे सा	सा रे रे म	रेम गरे सा ऩि
अ ति वि चि	ऽ त्र क छु	व र नि न	जाऽ ऽऽ ई ऽ
×	०	×	०

सा ग रे सा	ऽ ऩि प़ ध़	सा सा सा सा	सा - सा -
क न क दे	ऽ ह म नि	र चि त व	ना ऽ ई ऽ
×	०	×	०

अन्तरा

प - प -	प प प प	प ध प ध	पध पम म -
सी ऽ ता ऽ	प र म रु	चि र मृ ग	देऽ ऽऽ खा ऽ
×	०	×	०

म - म म	- म म ग	रे ग ग म	गम गरे रे -
अं ऽ ग अं	ऽ ग सु म	नो ऽ ह र	वेऽ ऽऽ षा ऽ
×	०	×	०

रे रे रे रे	- सा रे सा	रे ग ग म	गम गरे सा -
सु न हु दे	ऽ व र घु	बी ऽ र कृ	पाऽ ऽऽ ला ऽ
×	०	×	०

सा ग रे सा	ऩि ऩि प़ ध़	सा - सा सा	सा - सा -
ए हि मृ ग	क र अ ति	सु ऽ न्द र	छा ऽ ला ऽ
×	०	×	०

भजनी धुन (ताल कहरवा)

दोहा

क्रोधवंत तव रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥

प	–	प	प	–	प	प	प	प	म	प	ध	म	–	–	–
क्रो	ऽ	ध	व	ऽ	न्त	त	व	रा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

							म								
म	–	म	म	म	म	म	ग	रे	ग	ग	म	गम	गरे	सा	–
ली	ऽ	न्हि	स	र	थ	बै	ऽ	ठा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	इ	ऽ
×				०				×				०			

रे	रे	–	रे	रे	रे	रे	सा	रे	ग	ग	म	रेम	गरे	सा	–
च	ला	ऽ	ग	ग	न	प	थ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	तुऽ	ऽऽ	र	ऽ
×				०				×				०			

सा	ग	रे	सा	नि	–	प	ध़	सा	–	–	–	सा	–	–	–
भ	यँ	र	थ	हाँ	ऽ	कि	न	जा	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

भजनी धुन (ताल जल्द कहरवा)

स्थायी

सीता कै बिलाप सुनि भारी। भए चराचर जीव दुखारी ॥
गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥

अन्तरा

रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही। निर्भय चलेसि न जानेहि मोहि ॥
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्‌भुत करनी ॥
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ ॥

(तेहि बन निकट दसानन गयऊ...की ही धुन पर है)

भजनी धुन (ताल त्रिताल)

स्थायी

रघुपति अनुजहि आवत देखी। वाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी॥

अन्तरा

आश्रम देखि जानकी हीना। भए विकल जस प्राकृत दीना॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥
एहि विधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहुँ महा विरही अति कामी॥
पूरनकाम राम सुख रासी। मनुजचरित कर अज अविनासी॥
आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥
तव कह गीध वचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही॥
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं॥
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥

स्थायी

												ग			
ध़	नि़	ध़	नि़	सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	सा	रे	ग	सा	नि़
र	घु	प	ति	अ	नु	ज	हि	आ	ऽ	व	त	दे	ऽ	खी	ऽ
०				३				×				२			

सा	–	रे	रे	रे	–	रे	–	ध़	ऽ	नि़	सा	रे	ग	सा	नि़
बा	ऽ	हि	ज	चि	ऽ	न्ता	ऽ	की	ऽ	न्हि	बि	से	ऽ	षी	ऽ
०				३				२				×			

अन्तरा

सा	रे	सा	रे	ग	–	ग	ग	–	ग	ग	म	मग	रेग	सा	–
आ	ऽ	श्र	म	दे	ऽ	खि	जा	ऽ	न	की	ऽ	हीऽ	ऽऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

राग मिश्र पीलु (ताल रूपक)

स्तुति

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं॥
ब ल म प्र मे य म ना दि म ज म व्य क्त मे क म गो च रं।
गोबिन्द गोपर द्वन्द्वहर बिग्यानधन धरनीधरं॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा॥
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥

नि	सा
ज	य

मग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रे	ग	सा	रे	ग	म	म
राऽ	ऽ	म	रू	ऽ	प	अ	नू	ऽ	प	नि	र	गु	न
×			२		३		×			२		३	

म	ध	प	ग	ग	ग	–	रे	रे	ग	सा	–	ग	म
स	गु	न	गु	न	प्रे	ऽ	र	क	स	ही	ऽ	द	स
×			२		३		×			२		३	

प - प | प प | प प | प ध प | म ग | म म
सी ऽ स | बा ऽ | हु प्र | चं ऽ ड | खं ऽ | ड न
× २ ३ × २ ३

म ध प | म ग | म प | ग॒ रे ग॒ | सा - | सां -
चं ऽ ड | स र | मं ऽ | ड न म | ही ऽ | पा ऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

सां - रेंसां | नि॒प | प प | मप धनि॒ प | ग॒ ग॒ | रे -
थो ऽ दऽ | गाऽ | त स | रोऽ ऽऽ ज | मु ख | रा ऽ
× २ ३ × २ ३

म ध प | ग॒ - | ग॒ ग॒ | रेग॒ म म | सा - | सा सा
जी ऽ व | आऽ | य त | लोऽ ऽ च | नं ऽ | नि त
× २ ३ × २ ३

निसा रेग॒ ग॒ | ग॒रे सा | सा सा | सारे गम म | मग रेग | सा सा
नौऽ ऽऽ मि | राऽ ऽ | मु क्त | पाऽ ऽऽ ल | बाऽ ऽऽ | हु बि
× २ ३ × २ ३

रे म म | प म | ध प | रे ग॒ रे | सा - | नि॒ सा
सा ऽ ल | भ व | भ य | मो ऽ च | नं ऽ | ज य
× २ ३ × २ ३

राग मिश्र पीलु (ताल दीपचन्दी)

स्थायी

ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥

अन्तरा

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥
सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥

स्थायी

प़	ध़॒	नि	ऩि॒	–	ऩि॒	सा	सा	–	–	सा	–	–	–
ता	ऽ	हि	दे	ऽ	ऽ	इ	ग	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

सा	रे	सा	सा	–	ऩि	–	ऩि	सा	–	रे	ग॒	रे	ग॒
रा	ऽ	म	उ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

ग॒	ग॒	–	ग॒	–	ग॒	–	रे	ग	–	सा	–	ऩि	–
स	ब	ऽ	री	ऽ	कें	ऽ	आ	ऽ	श्र	म	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

ऩि	–	–	सा	–	रे	–	सा	सा	–	ध़	–	म़	–
प	ऽ	ऽ	गु	ऽ	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	रा	ऽ	–	ऽ
×			२				०			३			

अन्तरा

सा	सा	–	ग	–	म	–	प	–	–	ध॒	–	प	–
स	ब	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	खि	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

ग	ग	–	म	–	प	–	ग॒	रे	–	सा	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	म	ऽ	गृ	ऽ	ह	आ	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

ग॒	ग	–	ग॒	–	ग॒	ग॒	रे	ग	–रे	सा	–	नि़	–
मु	नि	ऽ	के	ऽ	व	च	न	ऽ	ल	मु	ऽ	झि	ऽ
×			२				०			३			

नि़	नि़	–	सा	–	रे	–	सा	–	नि	ध़	–	म़	–
जि	यँ	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

राग मिश्र पीलु (विनाताल)

दोहा

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥

ग	ग	ग	ग॒	ग॒	ग	ग	ग	ग	म	ग	म	रे	ग॒	सा	रे
गु	रु	प	द	पं	ऽ	क	ज	से	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
रे	प	प	ग॒	ग॒	रे	सा	नि॒	सा	–	–	–	प॒ध॒	नि॒सा	रेग॒	सा
ती	ऽ	स	रि	भ	ग	ति	अ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	न
प़	ध़	नि	नि	सा	सा	सा	सा	निसा	रेग	सारे	गसा	ग॒	–	सा	–
चौ	ऽ	थि	भ	ग	ति	म	म	गुऽ	ऽऽ	नऽ	गऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	ग॒	–रे	सा	नि॒	सा	ग॒	सा	–	–	–	सा	–	–	–
क	र	इ	ऽक	प	ट	त	जि	गा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ

राग मिश्र पीलु (ताल दीपचन्दी)

स्थायी

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥

अन्तरा

छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंजन सज्जन धरमा॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥

(ताहि देइ गति राम उदारा ---
की ही धुन पर है)

राग मिश्र पिलु (बिना ताल)

दोहा

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥

ग	–	ग	ग	–	ग	ग	ग	ग	म	ग	म	रे	ग॒	सा	रे
कं	ऽ	द्	मू	ऽ	ल	फ	ल	सु	र	स	अ	ति	ऽ	ऽ	ऽ
रे	प	–	ग॒	–	रे	सा	ऩि	सा	–	–	–	प़ध़	ऩिसा	रेग॒	सा
दि	ए	ऽ	रा	ऽ	म	क	हुँ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नि
प़	ध़	ऩि	ऩि	सा	सा	सा	सा	निसा	रेग॒	सारे	ग॒सा	ग॒	–	सा	–
प्रे	ऽ	म	स	हि	त	प्र	भु	खाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ग॒	–रे	सा	ऩि	सा	ग॒	सा	–	–	–	सा	–	–	–
बा	ऽ	रं	ऽ	बा	ऽ	र	ब	खा	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽ	ऽ

किष्किन्धा काण्ड

राग मिश्र मांड (ताल कहरवा)

स्थायी

आगें चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्वत निअराया॥

अन्तरा

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना॥
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई॥

स्थायी

ग
आ

म	पध	निसां	ध	नि	–	–	ध	ग	ग	ग	म	रे	–	सा	ग
गें	ऽऽ	ऽऽ	च	ले	ऽ	ऽ	ब	हु	रि	र	घु	रा	ऽ	या	ऽ
०				×				०				×			

ध़	–	ऩि	सा	ग	ग	ग	–	म	ध	ध	म	धनि	सां	सां	(ग)
रि	ऽ	ष्य	मू	ऽ	क	प	ऽ	वै	त	नि	अ	राऽ	ऽ	या,	आ
०				×				०				×			

अन्तरा

सां	सां	सां	पध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	रें	–	सांरें	गं	सां	–
त	हँ	र	हऽ	स	चि	व	स	हि	त	सु	ऽ	ग्रीऽ	ऽ	वा	ऽ
०				×				०				×			

सां	–	नि	सां	ध	–	ग	ग	ग	ग	ग	म	रे	–	सा	–
आ	ऽ	व	त	दे	ऽ	खि	अ	तु	ल	ब	ल	सीं	ऽ	वा	ऽ
०				×				०				×			

ध़	ऩि	सा	ग	–	ग	ग	ग	म	ध	ध	म	धनि	सां	सां	–
अ	ति	स	भी	ऽ	त	क	ह	सु	नु	ह	नु	माऽ	ऽ	ऽ	ना
०				×				०				×			

सां	सां	निरें	सांनि	ध	ध	म	ग	ग	–	ग	म	रे	–	सा,	ग
पु	रु	षऽ	जुऽ	ग	ल	ब	ल	रू	ऽ	प	नि	धा	ऽ	ना,	आ
०				×				०				×			

राग खमाज (ताल त्रिताल)

स्थायी

कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी॥

अन्तरा

सब प्रकार करिहउँ सेवकाई। जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई॥

स्थायी

ग	म	प	–	प	प	पनि॒	धप	ग	म	प	ध	पध	निसां	नि॒	ध
क	ह	सु	ऽ	श्री	ऽ	वऽ	नऽ	य	न	भ	रि	वाऽ	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

ग	म	प	प	–	प	पनि॒	धप	ग	म	प	ध	पध	निसां	नि॒	ध
मि	लि	हि	ना	ऽ	थ	मिऽ	थिऽ	ले	ऽ	स	कु	माऽ	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	धनि	रें	सां	–
स	व	प्र	का	ऽ	र	क	रि	ह	उँ	से	व	काऽ	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

नि	नि	नि	सां	सां	नि	सां	सां	पध	निसां	नि	सां	नि	रेंसां	नि॒	ध
जे	हि	बि	धि	मि	लि	हि	जा	ऽऽ	नऽ	की	ऽ	आ	ऽऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

भजनी धुन (ताल जल्द)

दोहा

सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं बान।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गएँ न उबरिहिं प्रान॥

ध॒	ध॒	ध॒	-	ध॒	-	-	ध॒	ध॒	-	-	प	ध॒	म	प	-
सु	नु	सु	ऽ	ग्री	ऽ	ऽ	व	मा	ऽ	ऽ	रि	ह	ऽ	उँ	ऽ
×				०				×				०			
ध॒	नि	नि	ध॒	प	-	म	म	प	ध॒	ध॒	प	प	-	-	-
वा	ऽ	लि	हि	ए	ऽ	क	हिं	वा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	-	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	-	-	ध॒	ध॒	ध॒	ध	-
ब्र	ऽ	ह्म	रु	ऽ	द्र	स	र	ना	ऽ	ऽ	ग	त	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ध॒	ध॒	नि	ध॒	ध॒	प	म	म	प	ध	प	-	प	-	-	-
ग	एँ	ऽ	न	उ	ब	र	हिं	प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

राग ललत (ताल त्रिताल)

स्थायी

लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा॥

अन्तरा

तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बल पावा॥

स्थायी

ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	–	सा	नि़	रे॒	ग	म	गम	म॑	गम	ग
लै	ऽ	सु	ऽ	ग्री	ऽ	ऽ	व	सं	ग	र	घु	नाऽ	ऽ	थाऽ	ऽ
०				३				×				२			

म॑	ध	–	ध	सां	सां	सां	सां	रें॒	नि	ध	म॑	गम	म॑	गम	ग
च	लें	ऽ	चा	ऽ	प	सा	ऽ	य	क	ग	हि	गाऽ	ऽ	थाऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	नि	रें॒	सां	–
त	व	र	घु	प	ति	सु	ऽ	ग्री	ऽ	व	प	ठा	ऽ	वा	ऽ
०				३				×				२			

सां	–	सां	सां	रें॒	नि	ध	म॑	म॑	ध	म॑	म	गम	म॑	गम	ग
ग	ऽ	जैं	सि	जा	ऽ	इ	नि	क	ट	व	ल	पाऽ	ऽ	वाऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग पटदीप (ताल त्रिताल)

स्थायी

कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ ॥

अन्तरा

वहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि ।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥

स्थायी

								म				सा			
प	नि	नि	सां	ध	ध	म	प	ग	–	ग	ग	रें	–	सा	–
क	ह	बा	ऽ	ली	ऽ	सु	नु	भी	ऽ	रु	प्रि	य	ऽ	ऽ	ऽ
सा	म	म	ग	म	प	प	म	प	नि	धनि	सांनि	ध	–	म	–
स	म	द	र	सी	ऽ	र	घु	ना	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	थ	ऽ	ऽ	ऽ
						प		म							
प	नि	सां	ध	–	ध	म	प	ग	–	ग	ग	रे	–	सा	–
जौं	ऽ	क	दा	ऽ	चि	मो	हि	मा	ऽ	ऽ	र	हिं	ऽ	ऽ	ऽ
सा	म	म	ग	म	प	प	म	प	नि	धनि	सांनि	ध	–	म	–
तौ	ऽ	पु	नि	हो	ऽ	उँ	स	ना	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	थ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

म											मं	सां			
ग	म	प	नि	सां	सां	सां	सां	प	नि	सां	ग	रें	–	सां	–
ब	हु	छ	ल	ब	ल	सु	ऽ	ग्री	ऽ	व	क	र	ऽ	ऽ	ऽ
नि	नि	नि	सां	ध	–	म	प	नि	–	–	–	सां	–	–	–
हि	यँ	हा	ऽ	रा	ऽ	भ	य	मा	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽ	ऽ

नि नि नि सां	ध - म प	ग़ - ग ग़	सारे - - सा -
मा ऽ रा ऽ	बा ऽ लि ऽ	रा ऽ म त	बऽ ऽऽऽऽ

ऩि सा म ग़	प म ध प	नि - सां -	धनि सांनि धपम
हृ द य मा	ऽ झ स र	ता ऽ नि ऽ	बऽ ऽऽ ऽऽऽ

राग—यमन कल्याण (ताल त्रिताल)

स्थायी

अचल करौं तनु राखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपानिधाना॥

अन्तरा

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं॥

स्थायी

प़ ध़ सा सा	सा – सा सा	सा – सा सा	ऩिसा रेसा ध़ –
अ च ल क	रौं ऽ त नु	रा ऽ ख हु	प्राऽ ऽऽ ना ऽ
०	३	×	२
ऩि – रे रे	ग – प प	रे रे गम गरे	सा – – सा
वा ऽ लि क	हा ऽ सु नु	कृ पा ऽऽ निऽ	धा ऽ ना ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

		ध	
म॑ ध नि नि	नि नि नि नि	म॑ ध सां सां	सां – सां –
ज ऽ न्म ज	ऽ न्म मु नि	ज त न क	रा ऽ हीं ऽ
०	३	×	२
नि – प प	म॑ध पम॑ ग रे	ऩि रे गम गरे	सा – सा –
अं ऽ त रा	ऽऽ मऽ क हि	आ ऽ वऽ तऽ	ना ऽ हीं ऽ
०	३	×	२

राग देस (ताल रूपक)

स्थायी

सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जिंति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं॥

अन्तरा

मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ।
जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिऐ।
गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिऐ॥

स्थायी

नि़ सा
सो ऽ

म

रे म गरे	सानि़ सा	सा सा	रे म म	प प	नि नि
न य नऽ	गोऽ ऽ	च र	जा ऽ सु	गु न	नि त
×	२	३	×	२	३

नि – नि	सां सां	सां सां	निसां रें सां	रें –	नि सां
ने ऽ ति	क हि	श्रु ति	गाऽ ऽ व	ही ऽ	जि ति
×	२	३	×	२	३

नि सां रेंसां	नि़ ध	प –	प ध प	म ग	रे रे
प व नऽ	म न	गो ऽ	नि र स	क रि	मु नि
×	२	३	×	२	३

रे ग रे	नि़ सा	सा सा	रेग म ग	रे –	नि़ सा
ध्या ऽ न	क व	हुँ क	पाऽ ऽ व	हीं ऽ	सो ऽ
×	२	३	×	२	३

अन्तरा

म म
मो हि

म − म	प प	नि नि	सां − सां	सां सां	सां सां
जा ऽ नि	अ ति	अ भि	मा ऽ न	ब स	प्र भु
×	२	३	×	२	३

					ध
रें मं गंरें	नि सां	सां सां	नि सां रें	ऩि ध	म प
क हे उऽ	रा ऽ	खु स	री ऽ र	ही ऽ	अ स
×	२	३	×	२	३

			ध		
नि सां सां	ऩि ऩिध	प प	प ध प	म ग	रे रे
क व न	स ठऽ	ह ठि	का ऽ टि	सु र	त रु
×	२	३	×	२	३

रे ग रे	ऩि सा	सा सा	रेग म गरे	रे −	ऩि सा
वा ऽ रि	क रि	हि व	वऽ ऽ रऽ	ही ऽ,	सो ऽ
×	२	३	×	२	३

राग देस (ताल त्रिताल)

दोहा

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग॥

सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे	रे	रेग	म	गरे	ग	ऩि	–	सा	–
रा	ऽ	म	च	र	न	दृ	ढ़	प्रीऽ	ऽ	तिऽ	क	रि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

म रे	–	रे	म	–	प	नि	नि	सां	–	–	सां	सांरें	सांनि॒	धप	मप
बा	ऽ	लि	की	ऽ	न्ह	त	नु	त्या	ऽ	ऽ	ग	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	नि	–	नि	नि	नि	सां	–	–	नि	सां	–	–	–
सु	म	न	मा	ऽ	ल	जि	मि	कं	ऽ	ऽ	ठ	ते	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

सां	रें	सां	नि॒	ध	प	म	प	सां	–	–	सां	नि॒ध	पम	गरे	सा
गि	र	त	न	जा	ऽ	न	इ	ना	ऽ	ऽ	ग	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग—सुर—मल्हार (ताल त्रिताल)

स्थायी

गत ग्रीषम बरषा रितु आई । रहिहउँ निकट सैल पर छाई ॥

अन्तरा

अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ॥

स्थायी

म प
ग त

नि़	ध	प	म	रे	रेरे	सा	सा	म	रे	म	–	प	–	–	–
श्री	ऽ	ष	म	ब	रषा	रि	तु	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

				प											
म	प	नि	सां	नि़	नि़	म	प	नि़	ध	प	म	रे	सा	नि़	सा
र	हि	ह	उँ	नि	क	ट	सै	ऽ	ल	प	र	छा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

						सां									
म	–	प	प	नि़	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–
अं	ऽ	ग	द	स	हि	त	क	र	हु	तु	म	रा	ऽ	जू	ऽ
०				३				×				२			

सां	सां			प											
मं	मं	रें	सां	नि़	नि	म	प	नि	ध	प	म	रे	सा	नि़	सा
सं	ऽ	त	त	हृ	द	यँ	ध	रे	हु	म	म	का	ऽ	जू	ऽ
०				३				×				२			

राग मल्हार (ताल त्रिताल)

स्थायी

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा॥

अन्तरा

दामिनि दमक रह न घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ॥
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें। खल के बचन संत सह जैसें॥
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई॥
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी॥
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा॥
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई। होइ अचल जिमि जिव हरि पाई॥
दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई॥
नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी॥
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा॥
महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं। जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना॥
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं॥
ऊषर बरषइ तृन नहिं जामा। जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा॥
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना॥

स्थायी

					रे							ध			
ऩिसा	रेम	रे	सा	–	सा	ऩि	प़	म़	प	नि॒	ध	ऩि	–	सा	–
घऽ	नऽ	घ	मं	ऽ	ड	न	भ	ग	र	ज	त	घो	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

नि॒

सा म रे प | – प म प | ग॒ ग॒ ग॒ म | रे – सा –
प्रि या ऽ ही | ऽ न ड र | प त म न | मो ऽ रा ऽ
० ३ × २

अन्तरा

म ध

म रे प प | प प नि॒ ध | नि नि सां नि | सां – सां –
दा ऽ मि नि | द म क र | ह न ध्र न | मा ऽ हीं ऽ
० ३ × २

सां

नि॒ नि॒ नि॒ ध | नि – सां सां | निसां रें रें सां | ध नि॒ म प
ख ल कै ऽ | प्री ऽ ति ज | थाऽ ऽ थि र | ना ऽ हीं ऽ
० ३ × २

मं

ग॒ ग॒ं ग॒ं मं | रें रें सां सां | नि॒ नि॒ नि॒ ध | नि – सां –
व र प हिं | ज ल द भू | ऽ मि नि अ | रा ऽ एँ –
० ३ × २

सा

ग॒ ग॒ ग॒ म | रे रे सा सा | नि॒ नि॒ नि॒ ध़ | नि़ – सा ऽ
ज था ऽ न | व हिं बु ध | बि ऽ द्या ऽ | पा ऽ एँ ऽ
० × × २

सुन्दर काण्ड

राग बिहाग

स्तुति

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

ग	म	प	नि	सां	नि	मंपध	मंप	म	ग	–	–
अ	तु	लि	त	ब	ल	धाऽऽ	ऽऽ	मं	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	म	प	–मं	ग	–	म	ग	–	सा	–
हे	ऽ	म	शै	ऽऽ	ला	ऽ	भ	दे	ऽ	हं	ऽ
प़	ऩि	सा	ग	ग	म	ग	–	सा	–	–	–
द	नु	ज	व	न	कृ	शा	ऽ	नुं	ऽ	ऽ	ऽ
गम	पध	ध	ग	–	ग	–	म	$^{\text{प}}$ग	–	सा	–
ज्ञाऽ	ऽऽ	नि	ना	ऽ	म	ऽ	ग्र	ग	ऽ	ण्यं	ऽ
ग	म	प	नि	नि	नि	सां	–	सां	–	–	–
स	क	ल	गु	ण	नि	धा	ऽ	नं	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	गं	सां	–	नि	–	सां	नि	–	धप	–
वा	ऽ	न	रा	ऽ	णा	ऽ	म	धी	ऽ	शं	ऽ
ग	म	प	नि	रेंसां	नि	धप	मंप	म	ग	–	–
र	घु	प	ति	प्रिऽ	य	भऽ	ऽऽ	क्तं	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प	सां	नि	(प)	–	म	ग	–	सा	–
वा	ऽ	त	जा	ऽ	तं	ऽ	न	मा	ऽ	मि	ऽ

राग आसा (ताल त्रिताल)

स्थायी

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥

अन्तरा

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥
पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ॥

स्थायी

प ध प म	ग रे सा सा	रेग मग रे सा	रे रे सा सा
म स क स	मा ऽ ऽ न	रूऽ ऽऽ ऽ प	क पि ध री
०	३	×	२

(म) रे - म म	प ध म प	ध म प ध	(सां) - सां -
लं ऽ क हि	च ले उ सु	मि रि न र	ह ऽ री ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

प - ध ध	सां - सां सां	सां सां ध पध	सां - सां -
मं ऽ दि र	मं ऽ दि र	प्र ति क रिऽ	सो ऽ धा ऽ
०	३	×	२

ध - सां सां	रें - रें रें	रें सां रेंगं मंगं	रें - सां -
दे ऽ खे ज	हँ ऽ त हँ	अ ग निऽ तऽ	जो ऽ धा ऽ
०	३	×	२

सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रेंसां	नि	-	नि	सां	ध	-	प	ध
ग	य	उ	द	सा	ऽ	न	नऽ	मं	ऽ	दि	र	मा	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			

प	ध	प	म	ग	रे	रे	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	-	सा	-
अ	ति	वि	चि	ऽ	त्र	क	हि	जा	ऽ	तऽ	सोऽ	ना	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			

राग बागेश्री (ताल एकताल)

दोहा

निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन॥
दीन्हि मुद्रिका डारि तब कपि करि हृदयँ बिचार।
दीन्हि हरषि उठि कर गहेउ जनु असोक अंगार॥

सांरेंसां	निसांनि	धनिध	म	म	प	ध	म	मग	रेसा	रे	सा
निऽऽ	जऽऽ	पऽऽ	द	न	य	न	दि	एँऽ	ऽऽ	म	न
×		०		२		०		३		४	

ध	नि	सा	म	म	–	ग (प)	म	ध (नि)	सां	–	–सां
रा	ऽ	म	प	द	ऽ	क	म	ल	ली	ऽ	ऽन
×		०		२		०		३		४	

सांरेंसां	निसांनि	ध	म	म	प	ध	म	मग	रेसा	सा	–
पऽऽ	रऽऽ	म	दु	खी	ऽ	भा	ऽ	पव	नसु	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ध	नि	सा	ग	म	ध	ध– (प)	गम	ध	नि	सां	सां
दे	ऽ	खि	जा	ऽ	न	कीऽ	दीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

राग बागेश्री (ताल त्रिताल)

स्थायी

चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी।

अन्तरा

सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥

स्थायी

म	ग़	रे	सा	नि़	सा	ध़	नि़	सा	–	म	म	मप	धप	ग़	रे
च	कि	त	चि	त	व	मु	द	री	ऽ	प	हि	चाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

म	म	ध	ध	पध	ऩि	ध	ध	म	म	प	ध	मग़	मग़	रे	सा
ह	र	ष	बि	षाऽ	ऽ	द	हृ	द	यँ	अ	कु	लाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग़	म	ध	ऩि	सां	सां	ऩि	सां	–	ऩि	सां	रें	सां	–	सां	–
सी	ऽ	ता	ऽ	म	न	बि	चा	ऽ	र	क	र	ना	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

सां	ऩि	ध	ध	म	म	प	ध	(म)ग़	ग	रे	सा	ग़म	धऩि	सां	–
म	धु	र	ब	च	न	बो	ऽ	ले	उ	ह	नु	माऽ	ऽऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

राग मुलतानी (ताल एकताल – द्रुतलय)

दोहा

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥

प	प	म॑	ग॒	ग॒म	प	म॑	ग	रे॒	सा	सा	सा
र	घु	प	ति	कऽ	र	सं	ऽ	दे	सु	अ	ब
×		०		२		०		३		४	

नि़	सा	म॑	ग॒	प	म॑	ध॒	प	सां	नि	ध॒	प
सु	नु	ज	न	नी	ऽ	ध	रि	धी	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

प	प	प	प	ग॒	म॑	प	नि	नि	सां	सां	सां
अ	स	क	हि	क	पि	ग	दग	द्	भ	य	ऊ
×		०		२		०		३		४	

नि	सां	–	(मं) ग॒ं	रे॒ं	सां	नि	ध॒	प	म॑	ग॒	म॑
भ	रे	ऽ	वि	लो	ऽ	च	न	नी	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

राग मुलतानी (ताल त्रिताल)

स्थायी

तत्वं प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥

अन्तरा

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥

स्थायी

प - म॑ग॒ प	म॑ ग॒ रे॒ सा	ऩि सा म॑ ग॒	म॑प ध॒प म॑ग॒ प
त ऽ त्वऽ प्रे	ऽ म क र	म म अ रु	तोऽ ऽऽ राऽ ऽ
०	३	×	२
ग॒ म॑ प नि	सां नि ध॒ प	प म॑ ध॒ प	पध॒ म॑प ग॒ म॑
जा ऽ न त	प्रि या ऽ ऽ	ए कु म नु	मोऽ ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म॑ प ध॒ प	म॑ग॒ म॑ - प	नि नि सां सां	(गं॒)रें॒ - सां -
सो ऽ म नु	सऽ दा ऽ र	ह त तो हि	पा ऽ हीं ऽ
०	३	×	२
सां नि सां गं॒	रें॒ रें॒ सां सां	म॑ प सां नि	ध॒ प म॑ग॒ म॑
जा ऽ नु प्री	ऽ ति र सु	ए त ने हि	मा ऽ हीऽ ऽ
०	३	×	२

राग गौडसारंग (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा॥

अन्तरा

सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं॥

स्थायी

ग (म)	म	रे	सा	–	सा	रे	सां	ग	रे	म	ग	प	मं	ध	प
सु	न	हु	मा	ऽ	तु	मो	हि	अ	ति	स	य	भू	ऽ	खा	ऽ
०				३				×				२			

सा (प़)	–	म	ग	प	प	ध	प	सां	नि	ध	प	मंप	धप	म	ग
ला	ऽ	गि	दे	ऽ	खि	सुं	ऽ	द	र	फ	ल	रुऽ	ऽऽ	खा	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	मं	गं	मं	रें	सां	रें	सां	–
सु	नु	सु	त	क	र	हिं	बि	पि	न	र	ख	वा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

सां	नि	ध	प	(प)	प	म	ग	ग	रे	म	ग	प	रे	सा	–
प	र	म	सु	भ	ट	र	ज	नी	ऽ	च	र	भा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

राग शंकरा (ताल त्रिताल)

स्थायी

खाएसि फल अरु बिटप उपारे। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे॥

अन्तरा

सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे॥
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥
ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा॥
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ॥
कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेसि बन खीसा॥

स्थायी

प	नि	ध	सां	नि	नि	प	प	प	प	ग	गप	रेग–	–	सा	सा
खा	ऽ	ए	सि	फ	ल	अ	रु	बि	ट	प	उऽ	पाऽऽ	–	रे	ऽ
०				३				×				२			

सा	–	ग	ग	प	–	प	प	ग	ग	पध	पप	रेग–	–	सा	–
र	ऽ	च्छ	क	म	ऽ	र्दि	म	ऽ	र्दि	मऽ	हिऽ	डाऽ	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	–	सां	सां	नि	सां	नि	ध	नि	सां	नि	–
स	ब	र	ज	नी	ऽ	च	र	क	पि	सं	ऽ	घा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

सां	गं	–	पं	रेंगं	–	सां	सां	प	प	ग	गप	रेग	–	सा	सा
ग	ए	ऽ	पु	काऽ	ऽ	र	त	क	छु	अ	धऽ	माऽ	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

राग शंकरा (ताल त्रिताल)

दोहा

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥

नि	–	सां	नि	नि	नि	प	प	प	नि	ध	सां	नि	–	प	गप
जा	ऽ	के	ऽ	ब	ल	ल	व	ले	ऽ	ऽ	स	तें	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

								प					प	ध	
प	प	ग	ग	ग	–	ग	प	ग	–	–	–	सा	ग	प	निध
जि	ते	हु	च	रा	ऽ	च	र	झा	ऽ	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

नि	–	सां	नि	नि	नि	प	प	प	नि	ध	सां	नि	–	प	गप
ता	ऽ	सु	दू	ऽ	त	मैं	ऽ	जा	ऽ	ऽ	क	रि	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

								प					प	ध	
प	प	ग	ग	ग	ग	ग	प	ग	–	–	–	सा	ग	प	निध
ह	रि	आ	ऽ	ने	हु	प्रि	य	ना	ऽ	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				२				०				३			

राग कामोद (तांल त्रिताल)

स्थायी

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ।

अन्तरा

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास॥

स्थायी

रे प मं प	ग म रे सा	सा – सा रे	सा – – –
क पि के ऽ	म म ता ऽ	पूँ ऽ छ प	र ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सा सा म ग	प प मं प	मंप धनि सांनि धप	मप धप म –
स व हि क	ह उँ स मु	झाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ इ ऽ
०	३	×	२
गम प म रे	– रे सा सा	(म)रे – प मं	प – – –
तेऽ ऽ ल बो	ऽ रि प ट	बाँ ऽ धि पु	नि ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
म रे प (मं)प	धनि सां ध प	म – – रे	प – मं प
पा ऽ व क	देऽ ऽ हु ल	गा ऽ ऽ ऽ	इ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

प प सां –	सां सां सां –	ध निं सां रें	सां नि ध प
ह रि प्रे ऽ	रि त ते ऽ	हि ऽ अ व	स ऽ र ऽ
०	३	×	२

मं	प	–	प	मं	प	ध	प	मं	–	–	मग	प	–	–	–
च	ले	ऽ	म	रु	त	ड	न	चा	ऽ	ऽ	ऽऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

गम	प	म	रे	–	रे	सा	सा	म	रे	प	–	प	प	ध	प
अऽ	ऽ	इ	हा	ऽ	स	क	रि	ग	ऽ	ऽ	ऽ	र	जा	ऽ	ऽ
				३				×				२			

मं	प	धनि	सां	ध	प	प मं	प	म	–	–	ग	प	–	मं	प
क	पि	वऽ	ढ़ि	ला	ऽ	गि	अ	का	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग तिलक कामोद (ताल एकताल) (कवितावली)

स्थायी

पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहैं,
जाति हैं परानी गति जानी गजचालि है॥

अन्तरा

बसन बिसारैं मनि भूषन सँभारत न,
आनन सुखाने कहैं क्योंहू कोऊ पालिहै॥
"तुलसी" मंदोवै मीजि हाथ धुनि माथ कहै,
काहूँ कान कियो न मैं कह्यो केतो कालि है॥
बापुरें बिभीषन पुकारि बार बार कह्यो,
वानर बड़ी बलाइ घने घर घालि है॥

स्थायी

नि़	–	प़	सा	–	सा	रेग	पम	पग	–	सा	सा
पा	ऽ	नी	पा	ऽ	नी	पाऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽ	स	ब
×		०		२		०		३		४	

रे	म	प	सां	सां	प	धधपम	पधनिध	प	म	ग	सा
रा	ऽ	नी	अ	ऽ	कु	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नीऽ	कऽ	हैंऽ
×		०		२		०		३		४	

नि़	–	प़	सा	–	सा	रेग	पम	पग	–	सा	सा
जा	ऽ	ति	हैं	ऽ	प	राऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽ	ग	ति
×		०		२		०		३		४	

रे	म	प	सां	सां	प	धधपम	पधनिध	प	म	ग	सा
जा	ऽ	नि	ऽ	ग	ज	चाऽ	ऽऽ	ऽऽ	लिऽ	हैंऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म प	नि –	नि सां	सां सां	– –	सां सां
व स	न ऽ	वि सा	ऽ रैं	ऽ ऽ	म नि
×	०	२	०	३	४

प नि	सां रें	– रें	सां रें	गं सां	सां सां
भू ऽ	ऽ प	ऽ न	सँ भा	ऽ र	त न
×	०	२	०	३	४

सां –	सां –	प़ प	प ध	म ग	सा सा
आ ऽ	न ऽ	न सु	खा ऽ	ने ऽ	क हैं
×	०	२	०	३	४

रे म	प सां	सां प	धधपम पधनिध	प म	ग सा
क्योंऽ	हू ऽ	को उ	पाऽ ऽऽ	ऽऽ लिऽ	हैऽ ऽऽ
×	०	२	०	३	४

राग सोहनी (ताल त्रिताल)

स्थायी

जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक विभीषन कर गृह नाहीं।

अन्तरा

उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी॥

स्थायी

ध	रें	सां	रें	नि	सां	नि	ध	में	में	ध	नि	धनि	सारें	सां	–
जा	ऽ	रा	ऽ	न	ग	रु	नि	मि	ष	ए	क	माऽ	ऽऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			
सां	रें	सां	रें	नि	सां	नि	ध	में	ग	में	ग	रे	–	सा	–
ए	ऽ	क	वि	भी	ऽ	ष	न	क	र	गृ	ह	ना	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

में	में	ध	नि	सां	सां	सां	–	ध	नि	सां	रें	नि	सां	नि	ध
उ	ल	टि	पु	ल	टि	लं	ऽ	का	ऽ	स	ब	जा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
ध	रें	सां	रें	नि	सां	नि	ध	में	–	ध	नि	धनि	सां	नि	–
कू	ऽ	द	प	रा	ऽ	पु	नि	सिं	ऽ	धु	म	झाऽ	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

राग सोहनी (ताल त्रिताल – द्रुतलय)

दोहा

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि॥

रे̱ – सां नि | ध म॑ ग – | ग – ग म॑ | ग रे̱ सा –
पूँ ऽ छ बु | झा ऽ इ ऽ | खो ऽ इ श्र | म ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

सा सा ग ग | म॑ म॑ ध नि | सां – – – | निसां रें̱सां नि ध
ध रि ल घु | रु ऽ प ब | हो ऽ ऽ ऽ | रिऽ ऽऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

अन्तरा

म॑ ध म॑ ध | सां – सां सां | सां रें̱ सां रें̱ | नि सां नि ध
ज न क सु | ता ऽ के ऽ | आ ऽ ऽ ऽ | गें ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

सां – गं म॑ | गं रें̱ सां सां | धनि सांरें̱ सांनि धम॑ | धनि सानि ध –
ठा ऽ ढ़ भ | य उ क र | जोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ रि ऽ
० | ३ | × | २

राग नन्द (ताल त्रिताल)

दोहा

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥

								सा							
ग	म	ध	प	रे	रे	सा	सा	ग	–	म	म	म	ग	प	–
ज	न	क	सु	त	हि	स	मु	झा	ऽ	इ	क	रि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

								प				मे	प		
ग	म	प	ध	नि	–	प	प	ध	–	प	मे	प	–	ग	म
ब	हु	बि	धि	धी	ऽ	र	जु	दी	ऽ	ऽ	ऽ	न्ह	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

				नि											
ग	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	निसां	रेंसां	नि	प	पनि	–	सां	–
च	र	न	क	म	ल	सि	रु	नाऽ	ऽऽ	इ	क	पिऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

गं	गं	सां	नि	–	नि	प	प	पध–	–	प	म	मेप	–	ग	म
ग	व	नु	रा	ऽ	म	प	हिं	कीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न्हऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग जोगिया (ताल त्रिताल)

स्थायी

नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी॥

अन्तरा

मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी॥
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला॥

स्थायी

मपनि॒	ध–प	म	–म	रे॒	रे॒	सा	–	रे॒	रे॒	म	म	प	–	प	–
नाऽऽ	ऽऽऽ	थ	ऽजु	ग	ल	लो	ऽ	च	न	भ	रि	बा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

म	म	प	ध॒	निसां–	–नि	ध॒प	ध॒म	रे॒	म	पनि	ध–प	म	–ग	रे॒	सा
ब	च	न	क	हेऽऽ	ऽऽ	कऽ	छुऽ	ज	न	कऽ	कुऽ	मा	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध॒	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें॒	–	सां	सां
म	न	क्र	म	ब	च	न	च	र	न	अ	नु	रा	ऽ	गी	ऽ
०				३				×				२			

सां	रें	मं	मं	(गं)रें	–	–	सां	रे॒	म	पनि	ध–प	म	–ग	रे॒	सा
के	हिं	अ	प	रा	ऽ	ऽ	ध	ना	ऽ	थऽ	हौंऽ	त्या	ऽऽ	गी	ऽ
०				३				×				२			

राग कुकुभ बिलावल (ताल एकताल)

दोहा

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
वेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति॥

म	ग	रे	ग	रेसा	सा	सा	सा	रे	–	रे	रे
नि	मि	ष	नि	मिऽ	ष	क	रु	ना	ऽ	नि	धि
×		०		२		०		३		४	

ग	म	प	नि	धनि	सांध	ऩि	प	पध	–	म	ग
जा	ऽ	हिं	क	लऽ	पऽ	स	म	बीऽ	ऽ	ति	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

प	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
बे	ऽ	गि	च	लि	अ	प्र	भु	आ	ऽ	नि	अ
×		०		२		०		३		४	

सां गं	रें	सां	सां	सां ध	ध	ध ऩि	प	ध	–	म	ग
भु	ज	ब	ल	ख	ल	द	ल	जी	ऽ	ति	ऽ
×		०		२		०		३		४	

राग दरबारी कानड़ा (ताल त्रिताल)

स्थायी

तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा॥

अन्तरा

प्रभु पयान जाना बैदेहीं। फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयउ रावनहि सोई॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥

स्थायी

								म				सा			
रे	सा	नि़	सा	रे	रे	सा	रे	ग॒	ग॒	ग	म	रे	–	सा	–
त	व	र	घु	प	ति	क	पि	प	ति	हि	बु	ला	ऽ	वा	ऽ
०				३				×				२			

म	म	–	प	मप	नि॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	म	सा	रे	–	सा	–
क	हा	ऽ	च	लैंऽ	ऽ	क	र	क	र	हु	ब	ना	ऽ	वा	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

		नि	नि												
म	प	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	नि॒	सां	सां	–	सां	–	सां	–
प्र	भु	प	या	ऽ	न	जा	ऽ	ना	ऽ	बै	ऽ	दे	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			

										म		सा			
नि॒	सां	रें	ध॒	ऽ	नि॒	प	प	नि॒नि॒	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा	–
फ	र	कि	वा	ऽ	म	अं	ग	जऽ	नु	क	हि	दे	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			

राग शुद्ध—सारंग (ताल त्रिताल)

दोहा

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥

म	—	रे	सा	—	रेसा	ऩि	ऩि	ऩि	ध़	सा	ऩि	रे	—	सा	सा
का	ऽ	म	क्रो	ऽ	धऽ	म	द	लो	ऽ	ऽ	भ	स	ऽ	ऽ	ब
०				३				×				२			

रे	मं	प	प	निसां	रेंसां	नि	धप	मंप	धप	म	रे	रे	मं	प	प
ना	ऽ	थ	न	रऽ	ऽऽ	क	ऽऽ	केऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ	ऽ	थ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	नि	नि	सां	सां	सां.	सां	रें	मं	रें	सां	नि	(प)	नि	—
स	व	प	रि	ह	रि	र	घु	बी	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	हि	ऽ
०				३				×				२			

मं रें

रें	मं	रें	सां	निसां	रेंसां	नि	धप	मंप	धप	म	रे	रे	मं	प	प
भ	ज	हु	भ	जऽ	ऽऽ	हिं	ऽऽ	जेऽ	ऽऽ	हि	ऽ	सं	ऽ	ऽ	त
०				३				×				२			

राग मारवा (ताल त्रिताल)

स्थायी

सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥

अन्तरा

अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा॥

स्थायी

नि	रें॒	नि	ध	म॑	ग	रे॒	सा	नि	रे॒	ग	म॑	ध	म॑	ध	–
सु	न	त	द	सा	ऽ	न	न	उ	ठा	ऽ	रि	सा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

रें॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	ग	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	सा	–
ख	ल	तो	हि	नि	क	ट	मृ	ऽ	त्यु	अ	ब	आ	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म॑	ध	सां	नि	रें॒	–	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	–
अ	स	क	हि	की	ऽ	न्हे	सि	च	र	न	प्र	हा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

नि	रें॒	गं	म॑	गं	रें॒	सां	सां	ऩि	रे॒	ग	म	ध	म॑	ध	–
अ	नु	ज	ग	हे	ऽ	प	द	बा	ऽ	र	हिं	बा	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

राग आनन्द भैरव (ताल त्रिताल)

दोहा

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि॥

ग म प ध॒	नि नि प –	पध॒ – पम प	मग – म –
रा ऽ मु स	ऽ त्य सं ऽ	कऽ ऽ ल्पऽ प्र	भुऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

			म
गम पम रे॒ रे॒	सा सा सा सा	सा रे॒ ग म	प प मग म
सऽ भाऽ ऽ का	ऽ ल व स	तो ऽ ऽ ऽ	रि ऽ ऽ . ऽ
०	३	×	२

			गं
ग म प ध॒	नि – सां सां	नि नि सां सां	रें॒ रें॒ सां –
मैं ऽ र घु	बी ऽ र स	र न ऽ अ	ब ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सां रें॒ गं मं	गंरें॒ रें॒ सां सां	नि – प ध॒	पम प मग म
जा ऽ उँ दे	ऽऽ हु ज नि	खो ऽ ऽ ऽ	रिऽ ऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२

राग आसावरी (कोमल रे) (ताल त्रिताल)

स्थायी

दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता॥

अन्तरा

नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता॥
नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता:॥

स्थायी

पध	नि	ध	म	|	ग	रे	सा	–	|	(ग)रे	–	म	प	|	मप	मध	पनि	ध
दूऽ	ऽ	र	हि	|	ते	ऽ	दे	ऽ	|	खे	ऽ	दो	उ	|	भ्राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ता
०					३					×					२			

सां	सां	रें	नि	|	ध	–	म	म	|	पध	नि	ध	म	|	(ग)रे	–	सा	–
न	य	ना	ऽ	|	नं	ऽ	ऽ	द	|	दाऽ	ऽ	न	के	|	दाऽ	ता	ऽ	
०					३					×					२			

अन्तरा

म	प	ध	ध	|	धसां	सां	सां	सां	|	सां	नि.	रें	सां	|	गं	रें	सा	–
न	य	न	नी	|	ऽऽ	र	पु	ल	|	कि	त	अ	ति	|	गा	ऽ	ता	ऽ
०					३					×					२			

गं	रें	नि	ध	|	म	ग	रे	सा	|	(ग)रे	–	म	प	|	मप	मध	पनि	ध
म	न	ध	रि	|	धी	ऽ	र	क	|	ही	ऽ	मृ	दु	|	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ता
०					३					×					३			

राग आसावरी (कोमल रे) (ताल त्रिताल)

दोहा

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥

नि़

ध़	नि़	ध़	म	ग़	रे़	सा	सा	रे़	–	म	म	प	–	ध़	–
श्र	व	न	सु	ज	सु	सु	नि	आ	ऽ	ऽ	य	उँ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

म	प	म	ध़	प	नि़	ध़	म	पध़	नि़	ध़	म	ग़	रे़	सा	–
प्र	भु	भं	ऽ	ज	न	भ	व	भीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ध़ नि नि

म	–	प	ध़	–	ध़	ध़	ध़	सां	सां	सां	सां	सां	नि़	रें़	सां
त्रा	ऽ	हि	त्रा	ऽ	हि	आ	ऽ	र	ति	ह	र	न	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

मं

गं़	रें़	सां	सां	रें़	नि़	ध़	म	पध़	नि़	ध़	म	ग़	रे़	सा	–
स	र	न	सु	ख	द	र	घु	बीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

लंका - काण्ड

भजनी धुन (ताल कहरवा)

दोहा

श्रीरघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥

सां – सां सां	सां – सां सां	सां – निरें सां	ध – – –
श्री ऽ र घु	वी ऽ र प्र	ता ऽ ऽऽ प	ते ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ग म प प	ध – प ध	सां – – –	निध पम गरे सा
सिं ऽ धु त	रे ऽ पा ऽ	षा ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ न
×	२	०	३
सां – सां सां	सां – सां सां	सां – निरें सां	ध – – –
ते ऽ म ति	मं ऽ द जे	रा . ऽ मऽ त	जि ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ग म प ध	– ध प ध	सां – – –	ध पध सां –
भ ज हिं जा	ऽ इ प्र भु	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ न ऽ
×	२	०	३

राग भैरवी (ताल कहरवा)

दोहा

सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार॥
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिध प्रकार॥
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार॥

			म
सारे ग̲रे नि़ सा	– सा सा नि़	सारे ग̲ ग रे	ग̲ – – सा
सेऽ ऽऽ तु बाँ	ऽ धि क पि	सेऽ ऽ न जि	मि ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ग̲ प म –	ग̲ –रे सा रे̲	सा – – नि़	साग̲ रेग̲ सा सा
उ त री ऽ	सा ऽऽ ग र	पा ऽ ऽ र	श्रीऽ ऽऽ रा म
०	३	×	२

रे̲ सा ध़ नि़	सा – सा –	सारे ग̲ रे ग̲	ग̲ – – –
ग य उ ब	सी ऽ ठी ऽ	बीऽ ऽ र ब	र ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ग̲ प म म	रेग̲ मग̲ सा रे̲	सा – – सा	नि़सा ग̲म पध̲ म
जे हि बि धि	बाऽ ऽऽ लि कु	मा ऽ ऽ र	श्रीऽ ऽऽ राऽ म
०	३	×	२

अन्तरा

ध̲ म ध̲ नि̲	सां – सा नि̲	सांरें ग̲ं रे ग̲ं	सां रे सां –
नि सि च र	की ऽ स ल	राऽ ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सां गं रें सां	नि ध प ध	सां – – सां	ध – सां –
व र नि सि	वि वि ध प्र	का ऽ ऽ र	श्री ऽ रा म
०	३	×	२

प – प प	प प ध प	ग – प म	रे – सा –
कुं ऽ भ क	र न घ न	ना ऽ द क	र ऽ ऽ ऽ
×	३	०	२

ग प म –	ग –रे सा रे	सा – – सा	ध – सा –
व ल पौ ऽ	रु षऽ सं ऽ	घा ऽ ऽ र	राम ऽ रा म
×	३	०	२

राग गौड़ मल्हार (ताल त्रिताल)

स्थायी

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी। सुना दसानन अति अहँकारी॥

अन्तरा

उत रावन इत राम दोहाई। जयति जय परी लराई॥

स्थायी

म	ग	रे	म	ग	रे	सा	सा	रे	ग	रे	ग	म	धप	म	ग
लं	ऽ	का	ऽ	भ	य	उ	को	ला	ऽ	ह	ल	भा	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
म	रे	प	प	ध	–	नि॒	प	सां	ध	नि॒	प	म	धप	म	ग
सु	ना	ऽ	द	सा	ऽ	न	न	अ	ति	अ	हँ	का	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ध	नि॒	म	प	नि॒ध	नि	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	रें	सां	–
उ	त	रा	ऽ	वऽ	न	इ	त	रा	ऽ	म	दो	हा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
सां	सां	सां	ध	ध	ध	नि॒	प	मप	धनि	सांरें	(सां)	ग	प	म	ग
ज	य	ति	ज	य	ति	ज	य	पऽ	रीऽ	ऽऽ	ल	रा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			

राग हिंडोल (ताल एकताल)

दोहा

दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर।
सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर॥
आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ।
लछिमन चले क्रुद्ध होई बान सरासन हाथ॥

सां	सां	ध	ध	मं	ग	ग	सा	ध	–	सा	सा
द	स	द	स	स	र	स	ब	मा	ऽ	रे	सि
×		०		२		०		३		४	

सा	ग	–	ग	मं	ध	मं	ध	सां	–	मं	ध
प	रे	ऽ	भू	ऽ	मि	क	पि	बीऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

मं	–	ध	सां	–	सां	सां	सां	गं	–	सां	–
सिं	ऽ	ह	ना	ऽ	द	क	रि	ग	ऽ	र्जा	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	–	सा	ग	–	ग	मं	ध	सां	–	धमं	ध
मे	ऽ	घ	ना	ऽ	द	ब	ल	धी	ऽ	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	

राग दरबारी कानड़ा (ताल त्रिताल)

स्थायी

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥

अन्तरा

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

स्थायी

										नि़		सा			
नि़सा	रेम	रे	सानि़	रेसा	ध़	–	नि़	म़	प़	ध़	ध़	नि़	सा	सा	–
राऽ	ऽऽ	व	नुऽ	रऽ	थी	ऽ	वि	र	थ	र	घु	बी	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

				नि़			ध॒	नि़							
म़	–	प़	प़	ध़	ध़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	रेग॒	म	सा	–
दे	ऽ	खि	वि	भी	ऽ	ष	न	भ	य	उ	अ	धीऽ	ऽ	रा	ऽ
०				३				×				२			

								म				सा			
नि़	सा	रे	रे	–	रे	सा	रे	ग॒	–	ग॒	म	रे	–	सा	–
अ	धि	क	प्री	ऽ	ति	म	न	भा	ऽ	सं	ऽ	दे	ऽ	हा	ऽ
०				३				×				२			

												सा			
नि॒	–	प	प	म	प	नि॒	नि॒	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा	–
वं	ऽ	दि	च	र	न	क	ह	स	हि	त	स	ने	ऽ	हा	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	–	प	प	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	नि॒	–	सां	–
ना	ऽ	थ	न	र	थ	न	हिं	त	न	प	द	त्रा	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

												सां			
सां	रें	रें	रें	रें	सां	रें	गं॒	–	गं॒	गं॒	मं	रें	–	सां	–
के	हि	वि	धि	जि	त	ब	बी	ऽ	र	ब	ल	वा	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

				रें											
नि॒	सां	रें	रें	ध॒	–	नि॒	प	म	प	नि॒	नि॒	ग॒	म	रे	सा
सु	न	हु	स	खा	ऽ	क	ह	कृ	पा	ऽ	नि	धा	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

								म				सा			
रे	रे	रे	रे	रे	रे	सा	रे	ग॒	–	ग॒	म	रे	–	सा	–
जे	हिं	ज	य	हो	ऽ	इ	सो	स्यं	ऽ	द	न	आ	ऽ	ना	ऽ
०				३				×				२			

राग अड़ाना (बिना ताल)

दोहा

पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड।
चली बिभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड॥

रें	रें	रें	रें	रें	–	सां	रें	गं	–	मं	रें	सां	–	सां	–
पु	नि	द	स	कं	ऽ	ठ	ऽ	क्रु	ऽ	द्ध	ऽ	हो	ऽ	इ	ऽ

निसां	रें रें	सां	–	ध	नि	ध	नि	सां	–	–	नि	धनि	सांनि	धनि	सां
छाँऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	स	ऽ	क्ति	प्र	चं	ऽ	ऽ	ड	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

रें	रें	रें	रें	रें	रें	सां	रें	गं	–	मं	रें	सां	–	सां	–
च	ली	ऽ	बि	भी	ऽ	ष	न	स	ऽ	ऽ	न्मु	ख	ऽ	ऽ	ऽ

निसां	रें रें	सां	सां	ध	नि	ध	नि	सां	–	–	नि	धनि	सांनि	धनि	सां
मऽ	न	हुँ	का	ऽ	ल	क	र	दं	ऽ	ऽ	ड	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

राग अड़ाना (ताल त्रिताल)

आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन मोरा॥
तुरत बिभीषन पाछें मेला। सनमुख राम सहेउ सोइ सेला॥

अन्तरा

म	-	प	प	ध़	-	नि़	सां	-	सां	सां	नि़	ध़नि़	रें	रें	सां
आ	ऽ	व	त	दे	ऽ	खि	स	ऽ	क्ति	अ	ति	घोऽ	ऽ	रा	ऽ
×				२				०				३			

ध़	नि़	सां	रें	रें	रें	सां	रें	गं़	गं़	गं़	मं	रें	-	सां	-
प्र	न	ता	ऽ	र	ति	भं	ऽ	ज	न	प	न	मो	ऽ	रा	ऽ
×				२				०				३			

सां	सां	ध़	ध़	नि़	-	प	प	नि़प	मप	ग़	म	रे	-	सा	-
तु	र	त	वि	भी	ऽ	ष	न	पाऽ	ऽऽ	छें	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ
×				२				०				३			

सा	रे	ग़	ग़	म	-	प	प	ध़	ध़	नि़	नि़	ध़नि़	सांनि़	ध़नि़	सां
स	ऽ	न्मु	ख	रा	ऽ	म	स	हे	उ	सो	इ	सऽ	ऽऽ	लाऽ	ऽ
×				२				०				३			

राग मालकौंस (ताल त्रिताल—द्रुतलय)

दोहा

काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि ब्याकुल देखि कलेस॥

		म	
सां - ध॒ -	नि॒ ध॒ म म	ग॒ - ग॒ म	म॒ - सा सा
का ऽ टे ऽ	सि र भु ज	वा ऽ र ब	हु ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म	नि सां		
नि॒ सा ग॒ ग॒	म म ध॒ नि॒	सां - - -	सां - - -
म र त न	भ ट लं ऽ	के ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

अन्तरा

ग॒ं सां ध॒ नि॒	ध॒ ध॒ म म	ग॒ - ग॒ म	म - सा -
प्र भु क्री ऽ	ड़ त सु र	सि ऽ द्ध मु	नि ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म	ध॒		
नि॒ सा ग॒ ग॒	म - ध॒ नि॒	सां - - -	सां - - -
ब्या ऽ कु ल	दे ऽ खि क	ले ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

राग मालकौंस (ताल त्रिताल)

स्थायी

मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा ॥

अन्तरा

उमा काल मर जाकी ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥
सुनु सरबग्य चराचर नायक। प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक ॥
नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥

स्थायी

म

ग॒	ग॒	ग॒	म	ग॒	ग॒	सा	सा	ध॒	नि॒	सा	ग॒	म	–	म	–
म	र	इ	न	रि	पु	श्र	म	भ	य	उ	बि	से	ऽ	षा	ऽ
०				३				×				२			

ग॒	–	म	म	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	ध॒	नि॒	ध॒	म	–	म	–
रा	ऽ	म	बि	भी	ऽ	ष	न	त	न	त	ब	दे	ऽ	खा	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग॒	म	–	ध॒	–	ध॒	नि॒	नि॒	सां	–	सां	–	ग॒ं	–	नि॒	सां
उ	मा	ऽ	का	ऽ	ल	म	र	जा	ऽ	की	ऽ	ई	ऽ	छा	ऽ
०				३				×				२			

ग॒ं	–	ग॒ं	मं	ग॒ं	ग॒ं	सा	सां	ध॒	–	ध॒	नि॒	ध॒	–	म	–
सो	ऽ	प्र	भु	ज	न	क	र	प्री	ऽ	ति	प	री	ऽ	छा	ऽ
०				३				×				२			

राग मालकौंस (ताल त्रिताल—द्रुतलय)

दोहा

खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस।
रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस॥

		ग॒ (म) ग॒ ग॒ म	
सां - ध ध	नि॒ ध॒ म ग	ग॒ ग॒ ग॒ म	म - सा सा
खैं ऽ चि स	रा ऽ स न	श्र व न ल	गि ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	(ध) म म (नि सां) ध॒ नि॒		
नि॒ सा ग॒ ग॒	म म ध॒ नि॒	सां - - -	सां - - -
छा ऽ ड़े ऽ	स र ए क	ती ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ग॒ं सां ध॒ नि॒	ध॒ ध॒ म म	ग॒ ग॒ ग॒ म	म म सा -
र घु ना ऽ	य क सा ऽ	य क ऽ ऽ	च ले ऽ ऽ
×	२	०	३

	(ध॒) म		
नि॒ सा ग॒ ग॒	म - ध॒ नि॒	सां - - -	सां - - -
मा ऽ न हुँ	का ऽ ल फ	नी ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

राग मिश्रखमाज (ताल त्रिताल)

स्थायी

डोली भूमि गिरत दसकंधर। छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर॥

अन्तरा

मंदोदरि आगें भुज सीसा। धरि सर चले जहाँ जगदीसा॥
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा॥
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा॥
रुदन करत देखीं सब नारी। गयउ बिभीषनु मन दुख भारी॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करहु क्रिया परिहरि सब सोका॥
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा॥
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना॥
सादर सिंहासन बैठारी। तिलक सारि अस्तुति अनुसारी॥
पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना॥
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु॥

स्थायी

सा															
ग	–	सा	ग	–	–	म	म	म	प	प	पध	म	ग	सा	रे
डो	ऽ	ली	भू	ऽ	ऽ	मि	गि	र	त	द	सऽ	कं	ऽ	ध	र
×				२				०				३			

											प	प			
ग	म	प	नि॒	–	ध	प	प	ग	म	प	ध	म	ग	सा	सारे
छु	भि	त	सिं	ऽ	धु	स	रि	दि	ऽ	ग्ग	ज	भू	ऽ	ध	रऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

					सां							सां			
ग	म	प	ध	नि	नि	सां	–	ध	नि॒	प	ध	नि	–	सां	–
मं	ऽ	दो	ऽ	द	रि	आ	ऽ	गें	ऽ	भु	ज	सी	ऽ	सा	ऽ
×				२				०				३			

नि नि सां रें	सां नि॒ ध प	ग म नि॒ ध	प म ग –
ध रि स र	च ले ऽ ज	हाँ ऽ ज ग	दी ऽ सा ऽ
×	२	०	३

नि॒ सा ग म	प ध नि सां	सां गं गं मं	गं रें सां –
ज य ज य	धु नि पू ऽ	री ऽ ब्र ऽ	ह्मं ऽ डा ऽ
×	२	०	३

नि सां रें सां	नि॒ ध प म	ग म प ध	निसां रेंसां निध पम
ज य र घु	वी ऽ र प्र	ब ल भु ज	दंऽ ऽऽ डाऽ ऽऽ
×	२	०	३

राग जैजैवन्ती (ताल त्रिताल)

दोहा

जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार॥
करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि॥

म ग रे ग रे	सा – – सा	नि सा ध नि	रे – रे –
ज न क ऽ सु	ता ऽ ऽ स	मे ऽ त प्र	भु ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
ग म ध –	पध नि ध प	म ग रे ग	रे – सा (म)
सो ऽ भा ऽ	अऽ मि त अ	पा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ज
३	×	२	०
ग म म धनि	सां सां सां सां	नि सां ध नि	रें – – –
दे ऽ खि भाऽ	ऽ लु क पि	ह र षे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
रें गं रें सां	सां नि ध प	म ग रे ग	रे सा –
ज य र घु	प ति सु ख	सा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ
३	×	२	०

भजनी धुन (ताल कहरवा)

स्तुति

जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे॥
भव वारन दारन सिंह प्रभो। गुन सागर नागर नाथ बिभो॥
तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी॥
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा॥
जन रंजन भंजन सोक भयं। गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं॥
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ग्यानघनं॥
अज ब्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा॥
रघुबंस बिभूषन दूषन हा। कृत भूप बिभीषन दीन रहा॥
गुन ग्यान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं॥
सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपवरं॥
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता समनं॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो। सबरूप सदा सब होइ न गो॥
इति बेद वदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तवानन सादर ए॥
धिग जीवन देव सरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे॥
अब दीन दयाल दया करिऐ। मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ॥
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ। दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ॥
खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा॥
नृप नायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं॥

स्तुति

सा रे
ज य

ग	–	ग	ग	ग	–	ग	ग	ग	–	पम	ग	रे	–	रे	रे
रा	ऽ	म	स	दा	ऽ	सु	ख	धा	ऽ	मऽ	ह	रे	ऽ	र	घु
×				०				×				०			

रे – रे रे॒ | रे – रे रे॒ | रे सा रेग मग | सा – सा रे
ना ऽ य क | सा ऽ य क | चा ऽ प ध | रे ऽ भ व
× | ० | × | ०

ग – ग ग | ग – ग ग | ग – पम ग | रे – सा रे॒
बा ऽ र न | दा ऽ र न | सिं ऽ हऽ प्र | भो ऽ गु न
× | ० | × | ०

रे – रे रे॒ | रे – रे रे॒ | रे सा रेग मग | सा – सा रे
सा ऽ ग र | ना ऽ ग र | ना ऽथऽ विऽ | भो ऽ त न
× | ० | × | ०

ग प प प | प – प प | धनि॒ धप म म | म – म म
का ऽ म अ | ने ऽ क अ | नूऽ ऽऽ प छ | बी ऽ गु न
× | ० | × | ०

अन्तरा

म – म म | म – म म | पध पम ग ग | ग – सा रे
गा ऽ व त | सि ऽ द्ध मु | नींऽ ऽऽ द्र क | बी ऽ ज सु
× | ० | × | ०

ग – ग ग | ग – ग ग | ग – म ग | रे – रे रे॒
पा ऽ व न | रा ऽ व न | ना ऽ ग म | हा ऽ ख ग
× | ० | × | ०

रे – रे रे॒ | रे – रे रे॒ | रे रे रेग मग | सा – सा रे
ना ऽ थ ज | था ऽ क रि | को ऽ पऽ गऽ | हा ऽ ज न
× | ० | × | ०
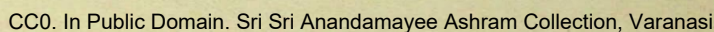
उत्तर – काण्ड

राग यमन कल्याण (ताल कहरवा)

दोहा

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग ॥
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥

ग	ग	म	गरे	ग	रे	सा	सा	ऩि	ध़	ऩि	रे	ग	–	–	–
र	हा	ऽ	एऽ	ऽ	क	दि	न	अ	व	धि	क	र	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	ध	प	–मं	ग	रे	ग	म	ग	–	–	–रे	ऩिरे	गरे	ऩिरे	ग
अ	ति	आ	ऽऽ	र	त	पु	र	लो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ग
×				०				×				०			

अन्तरा

ग	प	ग	प	प	–	प	–	ध	नि	प	–म	ग	म	ग	ग
ज	हँ	ऽ	त	हँ	ऽ	सो	ऽ	च	हिं	ना	ऽऽ	रि	ऽ	न	र
×				०				×				०			

ग	ध	प	मं	ग	रे	ग	म	ग	–	–	–रे	ऩिरे	गरे	ऩिरे	ग
कृ	स	त	न	रा	ऽ	म	वि	यो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ग
×				०				×							

राग वसन्त (ताल एकताल)

दोहा

राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥
बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात॥

धनि	सां	नि	ध	प	(प)	मं	ग	मं	ध	नि	सां
राऽ	ऽ	म	वि	र	ह	सा	ऽ	ग	र	म	हँ
×		०		२		०		३		४	

सा	सा	ग	ग	मं	ध	नि	सां	रेंरें	सांनि	सां	सां
भ	र	त	म	ग	न	म	न	होऽ	ऽऽ	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

मं	ग	मं	मं	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
वि	ऽ	प्र	रू	प	ध	रि	प	व	न	सु	त
×		०		२		०		३		४	

सां	मं	गं	सां	नि	धप	मं	ग	म	ध	नि	सां
आ	ऽ	इ	ग	य	उऽ	ज	नु	पो	ऽ	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	

राग श्यामकल्याण (ताल त्रिताल)

दोहा

राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदयँ समात॥

								म				म			
सां	–	सां	ध	–	प	म॑	प	रे	सा	ऩि	सा	रे	म॑	प	–
रा	ऽ	म	प्रा	ऽ	न	प्रि	य	ना	ऽ	थ	तु	म्ह	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

सां				सां								ग			
नि	सां	रें	सां	ध	प	म॑	प	ग	म	रे	सा	रे	म॑	प	–
स	ऽ	त्य	ब	च	न	म	म	ता	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

		सां	सां									सां			
म॑	प	नि	नि	सां	सां	सां	–	गं	गं	रें	सां	ध	–	प	–
पु	नि	पु	नि	मि	ल	त	ऽ	भ	र	त	सु	नि	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

													ग		
ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा	रे	सा	ऩि	सा	रे	म॑	प	–
ह	र	ष	न	हृ	द	ऽ	यँ	स	मा	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग चन्द्रकौंस (ताल त्रिताल)

स्थायी

हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए॥

अन्तरा

पुनि मंदिर महँ बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई॥
सुनत सकल जननीं उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं॥
इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर॥
जन्मभूमि सम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥

स्थायी

ध़ नि सां गं	सां सां नि ध़	म ध़ नि ध़	धनिसांनि धनि– सां –
ह र षि भ	र त को ऽ	स ल पु र	आऽऽऽ ऽऽऽ ए ऽ
×	२	०	३
सां नि ध़ म	ग़ सा सा सा	ग़ म ध़ नि	सा –नि धनि सां
स मा ऽ चा	ऽ र स ब	गु र हि प	ठा ऽऽ ऽऽ ए
×	२	०	३

अन्तरा

म म ध़ ध़	नि नि सां सां	नि – सां ग़	ग़ं – सां –
पु नि मं ऽ	दि र म हँ	बा ऽ त ज	ना ऽ ई ऽ
×	२	०	३
नि सां नि ध़	म ग़ सा सा (सा)	ऩि सा ग़ म	ग़म ध़नि सां ध़नि
आ ऽ व त	न ग र कु	स ल र घु	राऽ ऽऽ ई ऽऽ
×	२	०	३

राग शहाड़ा कानड़ा (ताल त्रिताल)

दोहा

आवत देखि लोग सब कृपासिन्धु भगवान ।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु ।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरहु अति ताहु ॥

म				नि											
–	ग	ऽ	म	ध	–	ध	ध	नि	प	म	प	ग	म	रेसा	रे
	आ	ऽ	व	त	ऽ	दे	खि	लो	ऽ	ऽ	ग	स	ऽ	बऽ	ऽ
३				×				२				०			

						म									
सा	रेरे	सानि	सा	सा	रे	ग	–	म	ध	नि	प	नि	प	म	म
ऽ	कृऽ	ऽऽ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	सिं	ऽ	धु	ऽ	भ	ग	वा	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

प	ग	–	म	म	म	प	निप	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	–
न	ऽ	ऽ	ऽ	न	ग	र	निऽ	क	ट	प्र	भु	प्रे	ऽ	रे	ऽ
३				×				२				०			

नि	–	सां	–	गं	मं	रें	सा	ग	म	रे	सा	नि	प	नि	म
उ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	त	रे	उ	भू	ऽ	मि	वि	मा	ऽ	ऽ	न
३				×				२				०			

राग हिंडोल (ताल त्रिताल)

स्थायी

धाइ धरे गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह॥

अन्तरा

गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथाजोग मिले सबहि कृपाला॥
छन महिं सबहि मिले भगवाना। उमा मरम यह काहुँ न जाना॥

स्थायी

										म	म				
सां	–	ध	मं	ग	–	सा	सा	सा	सा	ग	ग	मं	ध	सां	मंध
धा	ऽ	इ	ध	रे	ऽ	गु	र	च	र	न	स	रो	ऽ	रु	हऽ
×				३				×				२			

				सा											
सा	सा	ग	ग	मं	ग	सा	सा	सा	सा	सां	सां	सां	ध	सां	मंध
अ	नु	ज	स	हि	त	अ	ति	पु	ल	क	त	नो	ऽ	रु	हऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

मं	ध	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	गं	–	सां	सां
ग	हे	ऽ	भ	र	त	पु	नि	प्र	भु	प	द	पं	ऽ	क	ज
०				३				×				२			

				म	मं										
सां	सां	ध	मं	ग	ग	सा	सा	सा	सा	सां	–	सां	ध	सां	धमं
न	म	त	जि	न्ह	हि	सु	र	मु	नि	सं	ऽ	क	र	अ	जऽ
०				३				×				२			

राग गारा (ताल कहरवा)

स्थायी

सासुन्ह सबनि मिली बैंदेही । चरनन्हि लागि हरषु अति तेही ॥

अन्तरा

देहिं असीस बूझि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

स्थायी

ध़	ऩि	सा	रे	ग	म	ग॒	रे	ध़	ऩि	प़	ध़	सा	–	सा	–
सा	ऽ	सु	न्ह	स	ब	नि	मि	ली	ऽ	बै	ऽ	दे	ऽ	ही	ऽ
०				३				×				२			
ध़	ऩि	सा	रे	ग	–	ग	म	ग	म	ग	म	रे	म	ग॒	रे
च	र	न	न्हि	ला	ऽ	गि	ह	र	षु	अ	ति	ते	ऽ	ही	ऽ
०				३				×				०			

अन्तरा

ग	–	सा	सा	ग	–	ग	म	–	म	म	म	मप	धप	म	–
दे	ऽ	हिं	अ	सी	ऽ	स	बू	ऽ	झि	कु	स	लाऽ	ऽऽ	ता	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	प	प	पध	नि॒	ध	प	म	ग	ग	म	रे	ग॒	रे	–
हो	ऽ	इ	अ	चऽ	ल	तु	म्हा	ऽ	र	अ	हि	वा	ऽ	ता	ऽ
०				३				×				२			

राग बहार (ताल त्रिताल)

स्थायी

अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन बृष्टि झरि लाई॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई॥

अन्तरा

सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए। सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए॥
पुनि करुनानिधि भरतु हँकारे। निज कर राम जटा निरुआरे॥
प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिव्य सिंघासन मागा॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥
जनकसुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई॥
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे॥
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥
सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी॥

स्थायी

नि नि प प	मप निप ग म	म नि ध नि	सां नि सां –
अ व ध पु	रीऽ ऽऽ अ ति	रु चि र ब	ना ऽ ई ऽ
०	३	×	२
नि – सां सां	नि नि प ग	– ग ग म	रे रे सा –
दे ऽ व न्ह	सु म न बृ	ऽ ष्टि झ रि	ला ऽ ई ऽ
०	३	×	२
सा – म म	म प ग म	म नि ध नि	सां नि सां –
रा ऽ म क	हा ऽ से ऽ	व क न्ह बु	ला ऽ ई ऽ
०	३	×	२

म

गं गं गं मं	रें रें सां सां	नि – प प	धनि सां नि सां
प्र थ म स	ख न्ह अ न्ह	वा ऽ व हु	जाऽ ऽ ई ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग॒	म	ध	नि	सां	नि	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	धनि	सां
सु	न	त	ब	च	न	ज	हुँ	त	हुँ	ज	न	धा	ऽ	एऽ	ऽ
०				३				×				२			

								म							
गं॒	गं॒	गं॒	मं	रें	–	सां	सां	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा	–
सु	ऽ	श्री	ऽ	वा	ऽ	दि	तु	र	त	अ	न्ह	वा	ऽ	ए	ऽ
०				३				×				२			

सा	सा	म	म	म	प	ग॒	म	म	नि॒	ध	नि	सां	नि	सां	–
पु	नि	क	रु	ना	ऽ	नि	धि	भ	र	तु	हुँ	का	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

नि॒	नि॒	प	प	मप	नि॒प	ग॒	म	नि॒	प	ग॒	म	रे	–	सा	–
नि	ज	क	र	राऽ	ऽऽ	म	ज	टा	ऽ	नि	रु	आ	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

ॐ

रामस्तुति (ताल कहरवा)

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं॥

														प़	ध़
														ज	य
सा	–	सा	सा	सा	–	सा	सा	सा	–	नि़	सा	ध़	–	ध़	ध़
रा	ऽ	म	र	मा	ऽ	र	म	नं	ऽ	स	म	नं	ऽ	भ	व
×				०				×				०			
नि़	–	रे	रे	ग	–	प	प	रेग	मग	रे	सा	सा	सा	नि़	ध़
ता	ऽ	प	भ	या	ऽ	कु	ल	पाऽ	ऽऽ	हि	ज	नं	ऽ	अ	व
×				०				×				०			

ग
सा – सा सा | रे ग रे सा | ऩि सा ऩि सा | ध़ – ऩि ध़
धे ऽ स सु | रे ऽ स र | मे ऽ स वि | भो ऽ स र
× | ० | × | ०

ऩि – रे रे | ग – प प | रे ग रे सा | सा – ग रेग
ना ऽ ग त | मा ऽ ग त | पा ऽ हि प्र | भो ऽ द सऽ
× | ० | × | ०

प – प प | प – प प | प – मं प | ग – ऩि ध़
सी ऽ स वि | ना ऽ स न | वी ऽ स भु | जा ऽ कृ त
× | ० | × | ०

ऩि – रे रे | ग – प प | रे ग ग रे | सा – नि नि
द ऽ रि म | हा ऽ म हि | भू ऽ रि रु | जा ऽ र ज
× | ० | × | ०

राग भैरवी (ताल झपताल)

शिवस्तुति

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणाकार संसारपारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्मास्वरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥

									रे॒
									न
सा	–	ध़॒	–	नि़॒	सा	–	सा	–	नि़॒
मा	ऽ	मी	ऽ	श	मी	ऽ	शा	ऽ	न
सा	रे	ग॒	–	सारे (मींड)	ग॒	–	ग॒	–	प
नि	ऽ	र्वा	ऽ	णऽ (मींड)	रू	ऽ	पं	ऽ	वि
म	–	ग॒	–	रे॒	सा	–	सा	रे॒	नि़॒
भुं	ऽ	व्या	ऽ	प	कं	ऽ	ब्र	ऽ	ह्म
सा	–	सारे॒ (मींड)	ग॒ (मींड)	रे	सा	–	सा	–	रे॒
वे	ऽ	दऽ (मींड)	ऽ	स्व	रू	ऽ	पं	ऽ	नि

सा	–	ध़	ऽ	नि़	सा	–	सा	–	नि़
जं	ऽ	नि	ऽ	गुं	णं	ऽ	नि	ऽ	विं
सा	रे	ग	–	सारे	ग	–	ग	–	प
क	ऽ	ल्पं	ऽ	निऽ	री	ऽ	हं	ऽ	चि
म	–	ग	–	रे	सा	–	सा	रे	नि़
दा	ऽ	का	ऽ	श	मा	ऽ	का	ऽ	श
सा	–	सारे	ग	रे	सा	–	सा	–	ध़
वा	ऽ	संऽ	ऽ	भ	जे	ऽ	हं	ऽ	नि
म	–	ध	–	नि	सां	–	सां	–	नि
रा	ऽ	का	ऽ	र	मों	ऽ	का	ऽ	र
सांरें	गं	गं	रे	गं	सां	रें	सां	–	रें
मूऽ	ऽ	लं	ऽ	तु	री	ऽ	यं	ऽ	गि
रें	–	रें	–	रें	रें	–	रें	–	रें
रा	ऽ	ग्या	ऽ	न	गो	ऽ	ती	ऽ	त
सांरें	गं	गं	रें	सां	सां	–	सां	–	रें
मींऽ	ऽ	शं	ऽ	गि	री	ऽ	शं	ऽ	क
सां	–	ध	–	ध	प	–	प	–	प
रा	ऽ	लं	ऽ	म	हा	ऽ	का	ऽ	ल
गप	धनि	ध	–	पम	ग	–	म	–	ग
काऽ	ऽऽ	लं	ऽ	कृऽ	पा	ऽ	लं	ऽ	गु
ग	–	ग	–	ग	म	–	मप	ध	प
णा	ऽ	गा	ऽ	र	सं	ऽ	साऽ	ऽ	र
ग	–	म	प	म	गप	मग	रे	सा	रे
पा	ऽ	रं	ऽ	न	तोऽ	ऽऽ	हं	ऽ	तु

राग मिश्र खमाज (ताल कहरवा)

दोहा

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥

रे

ग ग ग ग	|	ग ग ग ग	|	गप मग रेम गरे	|	सा ऩि – –
वा ऽ र वा	|	ऽ र ब र	|	माऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	|	ग उँ ऽ ऽ
×		०		×		०
ऩि ऩि सा रे	|	ग सा रे म	|	ग – – –	|	सा – – –
ह र ष दे	|	ऽ हु श्री ऽ	|	रं ऽ ऽ ऽ	|	ग ऽ ऽ ऽ
×		०		×		०
ग ग ग ग	|	ग ग ग ग	|	गप मग रेम गरे	|	ऩि सा ऩि –
प द स रो	|	ऽ ज अ न	|	पाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	|	य नी ऽ ऽ
×		०		×		०
ऩि सा रे रे	|	रेग रेसा रे म	|	ग – – –	|	सा – ऩिसा रेग
भ ग ति स	|	दाऽ ऽऽ स त	|	सं ऽ ऽ ऽ	|	ग ऽ ऽऽ ऽऽ
×		०		×		०

समाप्त

भूल-सुधार

पेज नं.	पंक्ति नं.	अशुद्ध	शुद्ध
आभार प्रदर्शन	१३	भानु	गानु
४	३	नि धनि	नि धनि
८	४	निध पम	निध पम
१०	३	नि	नि
११	२	पनि	पनि
१७	१, २	ऩि	ऩि
२५-२६	स्थायी १ अंतरा ४	रे	रे
३५	४, ६	धनि	धनि
४९	२	रे	रें
६३	२	म प	म़प़
६७	अंतरा ४	निध	निध
६८	२	ऩि ऩि	ऩिऩि
७३	१	प	प़
७४	अंतरा १	ग	म
८०	१	रें	रे
९१	२	ग	ग
९४	१, ५	ऩि	ऩि
११७	राग का नाम	रागेश्री	श्री
१७५	१	पनिध	प़ऩिध़
१९६	४	रेंरें	रेंरें
२०८	अंतरा १	सांरेंसां	सांरेंसां
२१४	२	ध	ध
२२०	अंतरा ४	निध पम	निध पम
२३०	१	धनि सांनि धनि	धनि सांनि धनि